उपोद्घात.

ता. १२ मी एप्रिल १८९८ ना रोज गुजरात वर्नाक्युलर ाइटीनी जनरल सभा मळी हती, अने तेमां एवो ठराव थयो ा के, 'स्व. कवि दलपतरामना स्मारक माटे एक जाहेर फंड ाडवुं.' अने ते 'कवीश्वर दलपतराम डाह्याभाइ सी. आइ. ई. ारक फंड' तरीके सोसाइटीए जुदुं राखवुं. तेनुं व्याज जूनां ग्यो संशोधन करी छपाववामां तेम ज गुजराती साहित्यना ो तैयार कराबी छपाववामां वापरवुं.' ए ठरावान्वये नीचेना थो तैयार करावी छपाववामां आव्या छेः—

बर पुस्तकनुं नाम.	कर्ता—संपादक.	किंमत
सुभद्राहरण.	रा. अंबालाल बु. जानी.	१—०—०
पद्यसंग्रह.	रा. हिम्मतलाल ग. अंजारिया.	१—०—०
नरसैं महेतानुं आख्यान.	रा. हीरालाल त्री. पारेख.	०—८—०
पंदरमा शतकना प्राचीन गुर्जर काव्य.	रा. ब. केशवलाल ह. ध्रुव.	१—०—०

सांकळियुं

प्रस्तावना

*संग्रहनूं प्रयोजन.

१ ईसवी पंदरमा शतकना जूनी गूजरातीना काव्योनो आ इ जे हू वाचक समक्ष मूकू छूं, तेमा मैं मान न्हाना सळंग काव्य १ छे. कादंबरी अने कान्हडदेप्रबन्ध जेवा लावा काव्य वाचवा ती धीरज के फुरसद न होय एवा रसिक जन माटे अने प्राचीन ानो परिचय नवो मेळववो होय एवा नवीला अभ्यासक माटे सग्रह छे छंद, देशी अने गीतना वपराटनो इतिहास उकेलवामा ते मददगार थशे. एमा पाच काव्य समान्या छे रणमल्लछंद, तविलास, सीताहरण, उपाहरण अने प्रबोधचिंतामणि.

रणमल्लछदनी हाथप्रत

२. पहेला काव्यनी हाथप्रत पूनानी डेकन कॉलेजना सरकारी हमार्थी मळी आवी हती[1]. जूनी गूजरातीना अभ्यास अर्थे सद्गत

१ डेकन कॉलेजनी प्रतमा एक ज हाथे उतारेला त्रण काव्य ता, आरभमा सुरहासकृत वर्णवराण, पछी कान्हडदेप्रबन्ध, अने ते छी रणमल्लछद. पहेलू काव्य पिसताळीस कडी उतारी पडतू मूक्यू . चोपडामा एक ठेकाणे लेखकना हस्ताक्षरमा ओसडियानी टीप पी छे, तेथी लेखक ज चोपडानो मालिक हशे एम समजाय छे ए पडो पाछळथी कोइ जैनना मालिकीमा गयो जणाय छे शाथी जे क ठेकाणे जैन आगमने अनुसरतू कथन छे प्रस्तुत हाथप्रत उपर कारी सग्रहमा दाखल थयानी नोंध नीचे प्रमाणे छे —No 1541 1891–95, Dec Col , Extent foll 54+4

नवलरामभाइए गुजरातशाळापत्रमा छापेलो कान्हडदेप्रबंध वांचवा मति मुझायाथी पाठशुद्धि सारू में ए प्रबंधनी हायप्रत पूनेथी मंगावी हती. अपून पडी रहेला गोपनाथनी सेवा करतां जेम महेतार्जीने गोपीनाथना दर्शन थया, तेम मने पण एमांथी अणधार्यो अपूर्व लाभ थयो. कान्हडदेप्रबंधनी ए जूनी लिखित प्रतमां रणमल्लछंदनो पण उतारो हतो. एने छेडे श्रीधर व्यासकृत ' रा रलमल्ल छंद । सं. १६६२ मार्ग ।' एटला अक्षरो हता. आ टूकी पुष्पिकाए उतारानी साल उपरात सारा भाग्ये रणमल्लछंदना कर्तानूं नाम पण जाळवी राख्यूं छे. काव्यनी अंदर श्रीधरे पोतानूं नाम नोंध्यूं नथी अने रच्या साल पण आपी नथी. एक ऊणप लेखके दूर करी छे. बीजी काव्यना नायकनो इतिहास पूरे एम छे. माटे ईडरना राव रणमल्लनो वृत्तांत रासमाळा वगेरेमाथी तारवी नीचे आपू छूं.

ईडरनो राजा रणमल्ल.

३ ईडरनी गादी स्थापनार राठोड राव सोनंगजीथी छठ्ठो पुरुष ते राव रणमल्ल. एणे ईडर राज्यनी सीमा विस्तारी अने ईडर गढनी ख्याति अमर करी. मेवाड अने ईडर वच्चेनो भागर देश जाडेजा पासेथी जीती लईने राव रणमल्ले एक सोलंकी पटावतने आप्यो. वळी मुसलमानोए झालोरथी हांकी काढेला सोनगिरा ठाकोरने पण तेणे जोरामीरपुरनो पटो करी आपी पोताने त्यां राखी . लीधो.

२ सोनगिरा चोहाण कान्हडदे अने तेनो पुत्र विरमदे अल्लाउद्दीन बादशाह साथेना विग्रहमां संवत १३६८मां कामे आवी

राठोड रावना दरबारमां अगियार शूरा सरदारो हता. ए रणखेलना खेलाडीओ भाटचारणनी वीरकथामा रणमछ नामे विख्यात छे. रणरसिक राव ए पराक्रमी पटावतोनी ग्रहमाळानो सूर्य हतो.

४ राव रणमल्लना समयमां पाटणनो सुबेदार झफरखान हतो. ई.स. १३९१ मां दिल्हीना पादशाहे तेने गूजरातनो हाकेम नीम्यो हतो. नवो सुबेदार हिंदु राजाराणाने खंडिया करवा इच्छतो हतो.

गया; अने झालोर मुसलमानोना हाथमा गयुं. ते पछी कान्हडदेना भाइ मालदे मूछाळाए दिल्लीना बादशाहनो आश्रय लीधो. एनी अने एना वशजोनी हकीकत राजस्थाननी तवारिखमा मळी आवे छे. कान्हडदेनी शाखामा विरमदेथी छट्ठो पुरुष अखेराज थयो, जेनी आज्ञाथी कवि पद्मनामे संवत १५१२ मां कान्हडदेप्रबंध रच्यो. मुसलमानोए झालोरथी हाकी काढेला जे सोनगिरा ठाकोरने राव रणमल्ले आश्रय आप्यो, ते आ अखेराजनो दादो हशे एवू कान्हडदे अने मालदेना पेढीनामांनी बारीक तपास उपरथी मारू मानवू छे. रणमल्लछदनी कडी ६२–६३ मां सोनगिरा कान्हडदेनूं यशोगान छे, ते जोरामीरपुरनी जागीरना सोनगिरा ठाकोरना संबंधने लीधे हशे. जो आ मंतव्य राचूं होय, तो कान्हडदेप्रबध जोरामीरपुरमा अखेराजे पद्मनाभ पासे रचाव्यो ठरे. प्रस्तुत काव्य गूजराती भाषामां छे, ते उपरनी कल्पनाना लाभमा साक्षी आपे छे. जो झालोर तावानी जागीरना ठाकोरे ए प्रबध रचाव्यो होत, तो ते सो ए सो वसा राजस्थानी के हिंदीमां होत. त्यांना प्रबध अने रासा ए बेमानी एक भाषामा होय छे, गूजरातीमा नथी होता. हिंदीनूं साहित्यक्षेत्र आखूं उत्तर हिंद, राजस्थानीनूं राजस्थान अने गूजरातीनूं गूजरात छे.

पोताना अमलना त्रीजे ज वर्षे तेणे ईडर उपर सवारीथी ए नीतिनो सूत्रपात कर्यो. ए सवारीमां, संभव छे के पहाडी मुलकनी ओछी माहीतीने लीधे, रावनी राजधानीए पहोच्या विना ज देश लूंटी खानने पाटण पाछा वळवू पड्यू. पाच वरस पछी ज्ञफरखाने ईडर उपर फरी सवारी करी; अने तळेटीनूं शहेर हाथ करी गढने घेरो घाल्यो. दरमियान उत्तरमा दारुण उत्पात साथे मारे ऊथलपाथलना चमकावनारा समाचार मळ्या. तार्तरी विजेता तैमुर एकाएक दावानळनी पेठे आवी दिल्ही बाळी अनर्गळ लूंट लेई स्वदेशे पाछो वळी गयो हतो; पराभव पामेलो लोदी बादशाह पाणीपतना मेदानमांथी पलायन करी गयो हतो; अने तख्त खाली रह्युं हतुं. आ संजोगोनो लाभ लेवानूं तकावतो खान रणमल्ल साथे सुलेह करी पाटण पाछो फर्यो. सुबेदार ज्ञफरखान मटी स्वतंत्र सत्ताधारी थयेला सुलतान मुजफरशाहे त्रण वर्ष पछी अजित ईडरने जीतवा वळी एक सवारी करी. कहे छे के आ सवारीमां सुलताने ईडर शहेर अने गढ कबजे कर्या. परंतु ते तेना हाथमां रह्यां नहि; तेथी समजाय छे के ईडर लूंटी मुजफरशाह गढमा थाणूं मूकी पाटण पाछो वळ्यो हशे. ए सवारी दरमियान राव रणमल्ल हतो नहि; ते विसनगर गयो हतो. त्यांथी वळी आवी, सुलताने गढमां जे थाणूं मूक्यूं हतूं तेने हांकी काढी, रणमल्ले गढ पाछो हस्तगत कर्यो. त्रण त्रण सवारी थया छतां ईडरनो शूरो राव गूजरातना सुबेदार सुलतानने ताबे न थयो ते न ज थयो.

पवाडानो रचनाकाळ.

९ आ रीते ईडर उपर झफरखाने जे त्रण सवारीओ करी, तेमांनी बीजी सवारी रणमल्लछंदमां वर्णवेली होवानूं अनुमान थाय छे. संस्कृत पूर्वालापनी पांचमी आर्यामां तैमुरनो उल्लेख कर्यो छे, एटले करीने ई.स. १३९३ नी सवारी तो रणमल्लछंदमां अभिप्रेत होई शके ज नहि. वळी त्रीजी वार झफरखान ईडर उपर सवारी लेई गयो त्यारे, कहे छे के, रणमल विसनगर तरफ हतो; एटले ई.स. १४०१ नी सवारी पण पवाडामां निरूपण करेली सवारी होवी शक्य नथी. बीजी ज सवारी एवी छे के जेमां झफरखान अधवच घेरो ऊठावी पाटण वळी जाय छे. फारसी तवारिखनवेशो तार्तरी तैमुरनी चडाईने लीधे खाली पडेला दिल्हीना पादशाही तख्त माटेनी तातारखाननी लिप्साने एना पिता झफरखानना अपसरणना कारण तरीके आगळ धरे छे, त्यारे गूजराती कवि तेने राणा रणमल्लना धसाराथी हारी नासी छूटवाना कार्यरूपे वर्णवे छे. काव्यना आरंभमां श्रीधर कहे छे के मुसलमान लश्करनी खुवारी करनार बे, एक यमतुल्य तैमुर अने बीजो शकशल्य रणमल्ल[२]. समकालीन प्रासंगिक लेख उत्तरकालीन गळायला इतिहास करतां वधारे विश्वासपात्र लेखाय, ए मान्यताने अनुसरतां, बीजी चडाईमां झफरखानने खुवारी खमी घेरो ऊठावी पाटण भागी जवूं पड्यूं अने रणमल्लनी जीत थई, एवा निर्णये हूं आवूं छूं. ए बीजी चडाईनी तारीख ते ज रणमल्लछंद

२ जुओ रणमल्लछंद, तूक ५.

रचायानी तारीख. ए रीते ए काव्य ई. स. १३९८ मां तैमुरनी सवारी पछी तरत ज रचायूं ठरे छे, एटलेके ईसवी चौदमा शतकना अंतमां. बे त्रण वरसना तफावत तरफ आंखमींचामणी करी में तेने ईसवी पंदरमा शतकनां काव्योमां अग्रस्थान आप्यूं छे.

कर्ता अने तेनी कृतिओ.

६ कवि श्रीधरनां त्रण काव्य मारा जोवा जाणवामां छे:— भागवत दशम स्कंध[4]. सप्तशती अने रणमल्लछंद. ते त्रणे छंदोबद्ध छे. पहेला काव्यनी एकसो सत्तावीस तूकनी अधुरी हाथप्रत जूनी गूजरातीना रसिया सद्गत मणिलाल बकोरभाइ व्यासने मळी हती. तेमांथी आरंभना थोडाक श्लोक तेमणे ऊतारीने मारा उपर मोकल्या हता. ए काव्य आखुं ए मळी आवे (अने ते असल रूपमां मळी आवे), तो जूना साहित्यमां बहु उपयोगी ऊमेरो थाय. सप्तशतीमां मार्कंडेयपुराणनां देवीचरित्र संक्षेपमां वर्णव्यां छे. एकसो वीस तूकना ए काव्यमां आरंभे एक शार्दूलविक्रीडित संस्कृतमां छे. ते पछी चार घात (चोपाई) छे. त्यारपछी बे आर्या (उपगीति) चार रूपक[5]

४ हायप्रतमा कवितभागवत सरा छे.

५ रोउला (अक्षर २१) नामे अक्षरबंध, अर्धनाराच (प्रमाणिका), तोटक, स्रग्विणी, भमराउली (भ्रमरावली), कामक्रीडा (गुरु १६), अने नाराच, ए छ रूपबंध, तथा हनूमत (दा दाल दादा गाल), अघसारसी, पाधडी (पद्धरी), सारग (४ दादाल), वाडव (रोळा), सारसी (हरिगीत), हांदकी (मरहट्टा), त्रिभंगी अने गीता (दा+६ दालदा+दालगागा) ए नव मात्राबंध छंद, ते सोळ रूपक.

अने एक पूरवछाहु (दोहरो) मळी परस्पर यमकनी सांकळी लीधेली सात सात तूंकना सोळ खंड आवे छे. छेवटे चार छपय मूक्या छे. रणमल्लछंदमां मात्र सित्तेर तूक छे. आरंभनी दस आर्या संस्कृतमां छे; ते शुद्ध पथ्या आर्या छे. बाकीनूं काव्य गूजरातीमां छे. तेमां चुप्पई (घात), सिंहविलोकित[६], सारसी (हरिगीत), हांढकी (मरहट्टा), दुमिला अने दुहु (पूरवछाहु) ए छ मात्राबंध, भुंजगप्रयात अने नाराच ए बे रूपबंध अने मिश्र मात्राबंध छप्पय, ए छंदो वापर्या छे. अनुप्रास अने प्रास जेम सप्तशतीमां छे तेम रणमल्लछंदमां पण छे. परंतु शसशतीनी यमकसांकळी रणमल्लछंदमां छे नहि.

पवाडानी समालोचना.

७ रणमल्लछंद न्हानूं पण वीररसथी ऊभरातूं उत्तम काव्य छे. एनी शैली प्रौढ अने ओजस्वी छे. क्यां कयो छंद वक्तव्यने अनुकूळ थशे तेना निर्णयमां श्रीधरे संपूर्ण कलाचातुर्य अने रसमर्मज्ञपणूं दर्शाव्यूं छे. कविए नायकना वीरत्वनूं जे वर्णन कर्यूं छे, ते तो शान्त वृत्तिवाळा वाचकनां ए रोमांच खडां करे तेवूं अने हृदय हलबलावी नांखे एवूं छे. कमधज वीरनो झपाटो कंइ ओर ज हतो. ऊधांधळी सांजे धोळकामां, तो माझम राते खंभातमां अने मोटा मळसकामां तो पाटणमां रणमल्ल आव्यानी बूम पडती. एनूं नाम सांभळी मुसलमान थाणदारो थरथर कंपता. मोडासाथी पाटण जतो सरकारी

६ प्राकृतापिङ्गलमां एनूं सिंहावलोक नाम छे; जुओ प्रा. पि. । १।१३९।. वाणभूपण एने सिंहविलोकित कहे छे.

खमानो पण रणमल्ले बेधडक आप मारी झूंटी लीधो. एनी फरियाद सुलताननने काने प्होंची. ते अत्यंत क्रोधे भराई गंजावर लश्कर लेई ईडर उपर चढी आव्यो. आम तळाटीमां मुसलमान सिपाइओ मूछ मरडता, होंकारा करता अने तीर वरसावता धसे छे, आम गढ उपर रौद्र रसना आवेशमा राती आखे जोता रणमल्लनी मूछ फरके छे. आम सुलतानी नेजा आकाशमां फरहरे छे अने रणतूर गडगडे छे; आम गंभीर नादे धमकतूं रावळो ढोल रजपूत सुभटोने रणखेल खेलवा तेडे छे. आम मुसलमानो गर्जना करता आगळ वधे छे; आम राठोड राणो झंपावावाने अधीरा थई रहेला घोडानी लगाम खेंचतो ऊभो छे. झफरखान ईडर पासे पडाव नाखे छे, अने आवी माथू नमावी हालहाल लूंटेलो खजानो धरी देवा राणाने कडक कहेण मोकले छे. रणमल्ल माथामा धागे एवो उत्तर कहावे छे. सुलतान तळाटीनूं शहेर लूंटे छे. त्राहि त्राहि करती प्रजानी व्हारे राणो डूंगर उपरथी सुभट साथे जळधोधना झपाटे ऊतरी पडे छे. झफरखाननू लश्कर रजपूतोने भेटवा पहाणा ठेकतू गढ उपर चडे छे. कवि ए बे पक्षना धसारानू अने अपडादनूं अद्भुत वर्णन आपे छे. राठोडना वज्रप्रहार सामे मुसलमान टकवानूं करे छे, पण हाफी जाय छे, लथडिया खाय छे, पाछा पडे छे अने छेवटे पूंठ फेरवी भागे छे. मोटा अमीर उमरावो दांते तरणा ले छे. बाजी हाथथी गई, एटले सलामती इच्छी सुलतान झफरखान पाटणनो रस्तो ले छे. राणा रणमल्लनी जीत थाय छे; अने विजयना वाजा गडगडे छे. ते जाणे एम कहे छे के 'धार गढमा जयमताका

फरफरावी जाणो, किल्ले कडीमां तोबा पोकरावी जाणो. मरूच मेद्यूं जाणो, खंभात लीधूं जाणो, अरे प्हो फाटतां फाटतां मुसलमानने रगडी झगडी पाटणमां खुद सुलताननें केद कर्यो जाणो. पृथ्वी पर राणो रणमल्ल एकछत्रे राज्य करशे.' आ राठोड वीरनां स्थावर अने जंगम स्मारक रणमल्लचोकी अने रणमल्लछंद. गढ उपरनी बेठक तो रणमल्लनूं ज स्मरण आपशे; श्रीधरनो पवाडो तो राणाने अने कविने उभयने चिरंजीव राखशे. रणमल्लछंदना जोटानूं वीररसनूं खंड काव्य गूजरातीमां छे नहि.

तेमांथी मळती विशेष माहीती.

८ प्रस्तुत ऐतिहासिक काव्य ई. स. १३९२ ना ईडरना घेरानी हकिकत आपवा उपरांत पांच वरस पहेलांनी चडाईनी विगत पण पूरी पाडे छे. ई. स. १३९३ मां झफरखाने 'हिंदु ठाकोरने पोताना खंडिया करी देवानुं काम आरंभ्युं अने तेम करवाने माटे प्रथम तेणे ईडर राज्य उपर चडाई करी'.' सितेरहजारीनी साथे तेनो न्हानो भाइ शम्सखान पण हतो. दीन गजावता मुसलमान अने हरनाद करता रजपूत चोपटवाए आव्या. राव रणमल्ले धसी शम्सखानने बाथमां लीधो. खाननो भाइ मल्लकुस्तीनी मडागांठमांथी महा प्रयत्ने तनतोड प्रयासे नासी छूट्यो. शमशेरबाजीमां रणमल्ले झफरखानने पण परास्त कर्यो, राणानी तरवारना झपाटायी मोत आव्युं समजी.

---

७ जुओ रासमाळा, विभाग २, प्रकरण ३, आरंभ.

सुवो रणभूमि मेली जीव लेई नाठो; एटले फतेह करवा आवेली फोज पण हार मानी भागी. आवू रणमल्लछंदमां श्रीधरनूं कहेवूं छे[८]. मने ते मोटे भागे खरूं लागे छे. फारसी तवारिखमां लख्यूं छे तेवा प्रकारनी फतेह जो खानने पहेली चढाईमां मळी होय, तो ईडर उपर बीजी अने त्रीजी चढाई लेई जवानूं कारण न रहे. राणानूं बळ त्रण सवारीए पण एनाथी तोडायूं नहि. मुसलमान सुलतानोने ईडरनो त्रास तो पचीस वरस सुधी, एटले राव पूंजा पर्यंत, तेवो ने तेवो रह्यो. राठोड राणानो उपद्रव टाळवा छेवटे सुलतान अहमदशाहने ई. स. १४२७ मां अंतपाल दुर्ग तरीके अहमदनगर वसाववूं पड्यूं. ए हकीकत लक्षमां लेतां फारसी तवारिखनी नोंध सराहगत भरेली जणाय छे.

अन्य श्रीधर.

९ रणमल्लछंदना श्रीधर उपरांत एक गौरीचरित्रनो श्रीधर छे.

---

८ जुओ रणमलछंद, तूक ३२—३३. छापेली प्रतमां समसुद्दीन पाठ छे, ते बदल सम्मसखान वांचवा वीनती छे. हाथप्रतमां तूक ३३मां समसदीन अने तूक ६३ मां सांतल पाठ छे, ते बंने भूल भरेला छे. छेल्ली तूकमां कान्हडदेप्रबंध अने मुहणोत नेणसीनी ख्यातना आधारे सुधारी कन्हड वांचवूं पड्यूं छे, तेम तूक ३३मां सम्मसखान पाठ लेवो पडे छे. रणमल्लछंदनी तूक ५ मां दहशे अने दहवते पदथी भूत अने वर्तमान काळमां मुसलमान उपर रणमल्लना बाहुबळना पराक्रमनो निर्देश छे, तेथी पण ई.स. १३९२ नो विजय उपस्थित छे.

९ आ काव्य बृहत्काव्यदोहन, ग्रंथ ६ मां छपायूं छे.

परंतु ए श्रीधर भिन्न समजवानो छे. पहेलानूं काव्य छंदोबद्ध छे अने ते ईडरमां रचायूं छे; बीजानूं देशीमां छे अने ते जूनागढ पासे लखायूं छे[10]. गौरीचरित्रना कर्ताए रावणमंदोदरी-संवाद पण रच्यो छे. तेमां ते पोताने जीर्णदुर्गनो मोढ अडालजो कहे छे. रणमल्लछंदनो कर्ता व्यास अवटंक उपरथी ब्राह्मण समजाय छे. रावणमंदोदरीसंवादनी रचनानूं वर्ष संवत १६१९ छे. रणमल्लछंदनी रचनानी साल ई. स. १३९८ (सं. १४५४) आवे छे. बे कविनी वच्चे एकसो अगियार वरसनूं अंतर छे. 'मंत्री सहमा'नो पुत्र[11] ईडरना राजकविथी बहु अर्वाचीन छे.

वसंतविलासनी हाथप्रतो.

१० बीजूं काव्य जे वसंतविलास तेनूं ओळियूं, अमदावादमां सांकडीशेरीमां खीजडानी पोळना एक शास्त्रीनी पोथीओ वेचाती हती, तेना भेगूं मळी आव्यूं हतूं. ए प्रत खेळवाळा सूंवाळा कपडाना चीरा उपर आशरे चोराशी तकतीमां ऊतारेल छे. प्रत्येक तकतीना आरंभे एक गूजराती तूक तथा ते पछी केटलाक संस्कृतप्राकृत

---

१० जुओ गौरीचरित्र, १६, ३, सरस्वतीसागर नीर निर्मळ सोमशिर धारा ढळे. प्रस्तुत पंक्तिमां जूनागढ पासेना प्रभास क्षेत्रनो निर्देश छे.

११ जुओ रावणमंदोदरीसंवादनी समाप्तिनी नीचेनी कडीओ.

संवत पंनर पांसठइ जीरणदुर्ग निवास
पूर्ण च्यारि चूपइ बीसइ बांधी बुद्धिप्रकाशि.
सुहड मंत्री सहमा सुतन कविता सीधर नामि.
उतपत मोढ अडालजा. वस तूठा श्रीराम.

श्लोक आपेला छे; अने ते उतारानी नीचे प्रसंगने लगतुं अजंतानी गुफानी असली एतद्देशीय शैलीनूं चित्र दोरेलुं जोवामां आवे छे[१२]. काव्यनी नकल घोळी भोंय उपर लाल काळी तथा भूरी शाहीथी अने छायित करमनी भोंय उपर सोनेरी शाहीथी ब्राह्मणी मरोडनी देवनागरी लिपिमा करेली छे. ओळियाने छेडे 'शुभं भवतु लेखकपाठकयोः । श्रीगूर्जर श्रीमाल्वंसे साहश्रीदेपाल्सुत साहश्रीचन्द्रपाल आत्मपठनार्थं । श्रीमन्नृपविक्रमार्क समयातीत संवत् १५०८ वर्षे महामाङ्गल्य भाद्रपद शुदि ५ गुरौ अद्येह श्रीगूर्जरधारित्र्यां महाराजाधिराजस्य पातसाह श्री अहिमदशाह कुतबदीनस्य विजयराज्ये श्रीमदहम्मदाबाद वास्तुस्थाने आचार्य रत्नागरेण लिखितोऽयं वसंतवि-

१२ मोगल अने रजपूत चित्रकलानो गाढ परिचय अने ऊडो अभ्यास धरावनार श्रीयुत नानालाल चमनलाल महेता आइ. सी. एस. नो आ मत छे. वसतविलासना चित्रनी शैली बाबत Rupam, Nos. 22 and 23, April-July, 1925, ए त्रैमासिकमा Indian Painting in the 15th century, an illuminated manuscript ए मथाळानो एमनो लेख जोवो. वधारे विगत माटे एमना Studies in Indian Painting नूं बीजूं प्रकरण वाचवूं. ए आखुं ए प्रकरण वसतविलास संबधी छे. मध्यकाळमा आपणा देशना चित्रकार वहोळी ख्याति धरावता हता. उदीच्य कवि श्यामिलक एना पादताडितक भाणमा पटचित्र अने लिपिचित्र किंवा लेप्यचित्रमा कुशळ डिंडिक संज्ञाना कलाकारोमा लाट डिंडिकनो खास निर्देश करे छे; जुओ चतुर्भाणी, पा. ता., पृ. २१–२२.

प्तास:। ' एवी पुष्पिका छे. प्रस्तुत प्रतमां आरंभनी छ तकती नाश पामी होवाथी तथा बचेली तकतीमांथी केटलीक दुर्वाच्य नीवडवाथी वसंतविलासनी बीजी हाथप्रत में पूनाना सरकारी संग्रहमांथी मेळवी हती. ते प्रत पोथीना आकारमां हती. एमां कुल पत्र आठ, पृष्ठ वार लींटी अगियार अने लींटीमां अक्षर अडताळीस हता. ग्रंथमान वसें पचीस श्लोक आप्यूं हतूं. प्रत जैन देवनागरी लिपिमां ऊतारेली हती. ते सुवाच्य हती, पण बहु शुद्ध न हती. ओळियानी अने पोथीनी गूजराती तूको लगभग समान हती. परंतु संस्कृतप्राकृत श्लोकमां बहु कमीजास्तीपणूं हतूं अने फेर पण हतोः पूनानी पोथीने अंते 'इति श्रीवसन्तविलासः समाप्तः।' एटली ज नोंध हती. आ बे प्रतो उपरांत सुरतनी साहित्यपरिषदना प्रदर्शनमां रजू थयेली एक जैन पोथीमांथी वसंतविलासनी केटलीक गूजराती कडीओ जूनी गूजरातीना रसिया सद्गत मणिलाल बकोरभाइ व्यासे मारा उपर ऊतारीने मोकली हती, तेनो पण में संशोधनमां उपयोग कर्यो छे.

रचनाकाळ.

११ रचनार विशेनी तथा रचनाना वर्ष विशेनी माहीती पूरी पाडवानी बाबतमां वसंतविलासनो घाट रणमल्लछंदना जेवो छे. बन्नेमां नथी रचनारनूं नाम ने नथी रचनानी साल. ऐतिहासिक काव्यना कर्तानूं नाम पुष्पिकामांथी मळे छे; परंतु शृंगारी काव्यना कर्तानूं नाम तो तेमां ए छे नहि. एटले अत्यारे तो प्रस्तुत कवि अज्ञात ज रहे छे. ओळियानो ऊतारो संवत १५०८ मां थयो छे,

ते उपरथी कही शकाय छे, के वसंतविलास ईसवी पंदरमा शतकना त्रीजा चरण पहेलां रचायो होवो जोइये. ए मतव्यनूं रत्नमंदिरगणिनी उपदेशतरङ्गिणी परोक्ष समर्थन करे छे. एना पृष्ठ २६८ मा 'वसन्तविलासेऽपि' एवी अवतरणिकाथी 'सखि! अति' ए प्रतीकनी तूक[13] नमीना पाठभेदथी टांकी छे[14]. रत्नमंदिरे संवत १५१७ मा भोजप्रबन्ध रच्यो कहेवाय छे. आथी ए जैन कविनी अवधि-गति ईसवी पंदरमा शतकना त्रीजा चरणमा अंकाय छे. आगळ कहेवामा आवशे ते अनुसार जैनेतर कविना गूजराती काव्यमाथी जैन कविना संस्कृत पुस्तकमा अवतरण लेवाय एटली तेनी ख्याति जामवा माटे एक बे चरणनो गाळो स्वीकारता वसंतविलासनी रचना ईसवी पंदरमा शतकना आरंभमा संभवे छे.

कर्ता.

१२ आ शृङ्गारी काव्यनो कर्ता अंधारपछेडो ओढी अगोचर रह्यो छे, तेथी तेनी जातमात विशे कल्पना करवी जोखम भरेली छे, तथापि वसंतविलासमा कडीए कडीए जे जीवननो उल्हास ऊभराई जाय छे ते उपरथी अटकळ थाय छे, के ते कवि संसारथी कंटाळेलो विरागी नहि, पण विश्वना वैभवमा परिपूर्ण रस लेनारो रागी पुरुष हशे. वसंतना वर्णननूं काव्य होवा छता तेने एणे फगु संज्ञा आपी नथी, त्यमवळी

१३ जुओ वसंतविलास, तूक ७८.

१४ उपदेशतरङ्गिणीनो हवालो मनसूर प. चारुचन्द्रजीए पूरो पाड्यो छे.

समग्र काव्यमां कोइ पण स्थळे जैन धर्मनो सुवास स्फुरतो जोवामां आवतो नथी, तेथी ए जैनेतर एटले वैदिक कवि होय. प्रस्तुत काव्यनी चोत्रीसमी कडीनी छाया पंडितकवि रत्नेश्वरना 'द्वादश मास'मां दृष्टि खेंचे छे[15]. वसंतविलासनो हृदयराग, एनूं माधुर्य, एनूं पदलालित्य सर्व कंइ मनोहर छे.

सीताहरणनी हाथप्रत अने रचना.

१२ ते पछीना त्रीजा काव्यनी हाथप्रत अमदावादना शुक्रवारी बजारमांथी में खरीदी लीधी हती[16]. ए प्रत पोथीना रूपमां ब्राह्मणी मरोडनी देवनागरी लिपिमां लखायली छे. कुल बावीस पत्रनी आ पोथीमां अढारमूं पत्र खूटे छे. अक्षर मापसर अने एकधारा न होवाथी पृष्ठमां लींटीनूं अने लींटीमां अक्षरनूं प्रमाण रह्यूं नथी. प्रतने अंते 'श्रीरामायणं समाप्त। संवत् १६०९ वर्षे कार्तिक वदि ९ दिने वै. बछा लषितं।' एवी पुष्पिका छे. प्रस्तुत काव्यनी कडी ४, १८, १९ अने ४९९ विचारी जोतां तेनूं नाम रामायण अने रामकथा पण होय एम जणाय छे. एना पूर्वे रामचंद्रजीना जीवनना विविध

---

१५ सरखावो रत्नेश्वरकृत द्वादश मास, फागण, कडी ३.

केसु कुसुमनी पांखडी (वांकडी थई पेर)
जाणे मन्मथ आंकडी रांकडीने करे केर.

१६ सीताहरण विशे एक आकर्षक लेख कान्हडदेप्रबंधना संशोधक अने अनुवादक श्रीयुत डाह्याभाइ पीतांबरदास देरासरीए साहित्यपरिषदनी सुरतनी बेठकमां वांच्यो हतो, ते ए परिषदना निबंधसंग्रहने शोभावे छे. जिज्ञासुए त्यांथी ते जोई लेवो.

प्रसंग संबंधी कर्ताए कविता रचेली, ते एणे पछीथी आ रामकथामां मेळवी दीधी जोवामां आवे छे. ए ऊमेरेली पूर्व कृतिओ पैकी कडी २०-२१ रामवनवासना मंगळाचरणनो भाग लागे छे. कडी १८१–१८२ लंका उपर सवारी विशेना काव्यमांनी पंक्तिओ होय, एम भासे छे. कडी १८९–१९२ नूं सपनगीत पण तेमांनो भाग जणाय छे. कडी १९३–२४९ मां सीताहरणनां धूळ छे. एने छेडे फळश्रुति आपी छे, तेथी ए स्वतंत्र कृति तरीके तरत ओळखाई आवे छे. कडी १–३ एनी पूर्वपीठिका छे. एमांनी त्रीजी कडीमां जणाव्या प्रमाणे सीताहरणनां धूळ किंवा पांच धोळनूं सीताहरण काव्य संवत १९२६ मां रचायूं हतूं. रामकथा रचाई ते आ धोळ पछी.

कर्ता कर्मण.

१४ प्रस्तुत सीताहरण किंवा रामकथानो कर्ता कर्मण छे. ते पोताना नामने मंत्री उपपद लगाडे छे; ते उपरथी, ए कोइ राजा राणा के ठाकोरनो कारभारी हशे, एम समजाय छे. साहित्यनी सृष्टिमां तो कर्मण सामान्य कथाकार तरीके ओळखाशे. रामकथामां एणे रामायणना पहेला अने छेल्ला कांडनो कथाभाग मूकी दीधो छे अने पोतानां प्रधान पात्र साथे प्रत्यक्ष संबंध न होय एवो अन्य कांडोनो कथाभाग टूंकावी नांख्यो छे अथवा मात्र सूचव्यो छे, ते एनी विवेकबुद्धि विशे सारो अभिप्राय बंधावे छे. परंतु एनां पात्रनूं आलेखन जे एणे कर्यूं छे, तेमां औचित्यनो भंग थाय छे. वळी कथा भागमां एणे जे स्वकल्पित वधारो कर्यो छे, तेमां पण एनी अकुशळता

देखाई आवे छे. एनो मूळकथा साथे सांधो मळतो ज नथी. विक्रमाना नृत्यमां भंगाण, मानमरोवरथी शक्तिनी व्हार, अगियारमा रुद्रनो कोप, हनूमानने अतळीबळ विरुद् मळवूं, इत्यादि नवा गोठेला प्रसंगमां दृष्टिगोचर थती कलाविधाननी खामी हृदयमां खूंचे छे. सीताहरण साधारण आख्यान अने वार्तानी कोटिनूं काव्य छे. एनी साथे एनी पूर्व कृतिओ जोडी देवामां कर्मणे भालणना जेवी भूल करी छे. आ कविए उत्तर वये रचेला भागवत दशम स्कंधमां पूर्व वयनां कृष्णबाळलीलानां पदो गोठवी दीधां छे. ए छूटक कवितानी दखलथी कथाना वहेणनो स्थळे स्थळे रोध थाय छे; अध्यायोनूं मापसरपणूं फीटी जाय छे; अने काव्यनी सुश्लिष्टताने हानि पहोंचे छे.

सीताहरण अने कान्हडदेप्रबन्ध.

१९ कर्मणनूं सपनगीत पद्मनाभना स्वप्नगीतनी स्मृति आपे छे[१७]. सीताहरणनी केटलीक पंक्तिओ कान्हडदेप्रबंधनी पंक्तिओ साथे मळतापणूं धरावे छे. बन्ने काव्यमां केटलाक पदप्रयोग अने प्रसंग पण समान छे. पद्मनाभ अने कर्मण लगभग एकज समयना कवि छे. ए बे एक ज स्थळना ए न होय?

सीताहरणनो पद्यबन्ध.

१६ सीताहरणनो पद्यबंध बहु सादो छे. ते दोहरा, चोपाई, छप्पय, पवाडा अने गीतनो बनेलो छे. एमां उतारेलां संस्कृत सुभाषित मोटे भागे प्राचीन नथी. 'किहां चन्दन' प्रतीकनूं गुजराती सुभा-

१७ जुओ कान्हडदेप्रबंध, खंड १, तूक १२२-१२४.

पित चंदनमलयागरीनी वार्ताना प्राचीनपणा विशे ध्यान खेंचे छे. जे जूना रासमाथी कर्मणे ते लीधुं होय, ते तपास करी मेळववानी जरूर छे[१८].

उपाहरणनी हाथप्रतो.

१७ संग्रहमाना चोथा काव्यनी जूनी हाथप्रत Baroda Central Library मां छे. ते सद्गत उत्साही संशोधक चमनलाल डाह्याभाइ दलाले मेळवी हती. ए प्रत उपरथी तेमणे प्रस्तुत काव्य Baroda Miscellany, Vol. II, nos 3-4 मा छपाव्यु हतु. एमा घणी पंक्तिओ अशुद्ध छे अने पद्यबंध अत्यंत दूषित छे. उपाहरणनी बीजी बे हस्तलिखित प्रत गुजरात वर्नाक्यूलर सोसाइटीना संग्रहमा छे[१९]. तेनी भाषा अर्वाचीन थई गई छे, अने मूळमां फेरफार पण बहु थयेलो जोवामा आवे छे. आ बे हायप्रतमा लख्यासाल छे नहि. Baroda Miscellany मा उपाहरणने छेडे 'संवत १६७३ वर्षे प्रथम आसो शुदि २ सोमे लिपितं ऋषि जेसंग । स्वपठन-अन्येषा पठनार्थं । शुभं भवतु लेखकपाठकयोः' एवी पुष्पिका छे.

---

१८ भद्रसेनकृत चदनमलयागरीरासना आरभमा आ सुभाषित आप्यू छे. परतु जैन कवि भद्रसेननो समय संवत १६६५ नी आसपास छे, जुओ जैन गूर्जर कविओ, भाग १, पृ. ५९६-९७. जैनेतर अने जैन उभय कविए कोइ प्राचीन काव्यमाथी आ सुभाषित उतार्यू हशे.

१९ आ बे प्रतो गुजरात वर्नाक्यूलर सोसाइटीना आसिस्टट सेक्रेटरी रा. हीरालाल त्रि. पारेखे मेळवी हती. उपाहरणना संशोधनने माटे ए

रचनाकाळ.

१८ प्रस्तुत काव्यनी समाप्ति संवत १९९४ ना दामोदरमासमां कार्तिक एकादशी ने गुरुवारे थएली कही छे. दामोदरमास, पुरुषोत्तममास, अने अधिकमास ए पर्याय सममूं छे. ऊतारानी तिथि कार्तिक एकादशी छे, तेथी अधिकमास कार्तिक ठरे छे पक्ष शुक्ल के कृष्ण, ते जणाव्यूं नथी. ते निर्दिष्ट गुरुवारने आधारे गणी काढवूं रहे छे.

कर्ता जनार्दन.

१९ उपाहरण अवाटी निबाना पुत्र अवाटी जनार्दने रच्यूं छे. ए ज्ञातिए खडायतो ब्राह्मण हतो अने अमरावतीमां रहेतो हतो[20]. जनार्दन कथाभाग गानारो लेखक छे. एनी कविता सादा लोकगीतनी कोटिनी छे. प्रतिभानो चमत्कार के कळानो ओप उपाहरणमां छे नहि. जनार्दननी बीजी कृति मळी नथी.

उपाहरनो पद्यबंध.

२० वर्से बावीस [21]कडीनूं उपाहरण आखूं ए विविध देशीमां

कलाकना कलाक मारी साथे गाळता हता. उद्धारनूं कार्य सिद्धिए पहोच्यूं ते एमनां आग्रह अने खतने लीधे.

२० कवि जनार्दननूं निवासस्थान क्यां आव्यूं ते नक्की करवूं मुश्केल छे. दक्षिणनी उमरावतीनो तो संभव थोडो छे. बनते काठियावाडमांनूं अमरेली ते अमरावती होय. 'नगरी एक उमरावती, तहीं राज्य करे सुलतान' ए वैवाहिक गीतमां कोइ उमरावतीनूं नाम आवे छे.

२१ उपाहरणना आरंभे कविए काव्यमान वसें वीस कडी कह्यूं छे, तेनाथी बे कडी मुद्रित प्रतमां वधारे छे.

रच्यू छे. एमा आतर प्रासनी एकपदी देशी जनार्दनने विशेष प्रिय होय एम जणाय छे, कारण के ए चच वार कडवामां एणे वापर्यो छे". इनि बदलातों आखा कडवाए देशीमा रचाता वध पडे छे. उत्तर कालमा कडवानू म्होडियू ज प्रस्तुत देशीमां वापरवामा आवेलू जोइये छिये. जनार्दने उपयोगमा लीधेली बीजी देशीओथी ' साहेलडी 'नी अने 'श्रीरग'नी देशी तेना बंधथी नोंखी ओळखाई आवे छे". उपाहरणना उद्धारमा हाथप्रतो जे सहायता आपी शकी नथी ते देशीना मापे आपी छे.

प्रबोधचिंतामणिनी हाथप्रतो.

२१ पाचमू काव्य पहेलू प्रकाशमां मूकवानु मान सस्कृत प्राकृत अने अपभ्रंशमा निपुणता धरावता Baroda Central Library ना पंडित लालचद्र भगवानदासने छे. प्रस्तुत काव्य एमणे ' त्रिभुवनदीपक प्रबध' ए नामथी गवेषणापूर्ण प्रस्तावना साथे पाचेक वर्ष उपर छपाव्यू हतू. एनी वाचना वडोदरामा कोठीपोळना उपाश्रयना पुस्तकसंग्रहमानी हाथप्रतने मोटे भागे अनुसरे छे एमा पत्र २९, पृष्ठमा

२२ जुओ उपाहरण, कडवा २, ५, ६, ८, ११, १३, १४, १५, १६, १७, २८ अने २९. आतर प्रासनी साकळीमा कहींक त्रण अने कहींक बे अकोडा आवे छे. त्रीजा अकोडावाळा खड बहुधा न्हानो होय छे.

२३ जुओ कडवू १० अने कडवू ३२. सत्तावीसमा कडवानी "हरगोपाळा'नी देशीनो बध ' साहेलडी 'नी देशीना बधने मळतो छे.

पंक्ति ११ अने पंक्तिमां अक्षर ३२ थी ४० छे. ए प्रत पडिमात्रा-वाळी नागरी लिपिमां उतारेली छे. उतारानो समय एमां नोंध्यो नथी. पण पंडित लालचंद्र ते प्रत संवतना सोळमा सैकामां लखायली धारे छे[१४]. पाठना उद्धारमां में तेनी मुद्रित वाचनानो उपयोग कर्यो छे. प्रकाशित 'त्रिभुवनदीपक प्रबंध'मां संशोधके वडोदराना आत्माराम जैन ज्ञानमंदिरमांनी हायप्रतनां पाठांतर परिशिष्टमां आप्यां छे. शंका-स्थान विशे ऊहापोह माटे में प्रस्तुत हायप्रत उदार आशयवाळा मुनिमहाराज प्रवर्तक श्री कांतिविजयजी द्वारा निर्दिष्ट ज्ञानमंदिरना सेक्रेटरी तरफथी मेळवी हती. तेमां पत्र ४६, पृष्ठमां पंक्ति १९ अने पंक्तिमां अक्षर ६० थी ६८ हता. ए प्रत पडिमात्रा वगरनी देवनागरी लिपिमां उतारेली हती. प्रत्येक पृष्ठमां वच्चोवच वीस अक्षरपूर जगा रोकतो स्वस्तिक हतो. तेमांनूं पहेलूं आरंभमां अने छेल्लूं अंतमां अधुरूं हतूं. तेथी समजाय छे के सदर पोथी कोइ मोटी पोथीनो भाग हशे. एमां 'त्रिभुवनदीपक प्रबंध' निरंक पत्र २ थी निरंक पत्र १३ सुधीमां समायेलो छे. प्रतमां कोइ पण स्थळे लेखनकाळनो उल्लेख छे नहि. पडिमात्राना अभावना कारणथी आ नरसिंहजीनी पोळनी हायप्रत कोठीपोळनी हाथप्रतथी कंइक अर्वाचीन होवी संभवे छे. एनी उपर नंबर ७६१ चडावेलो छे. अधिक प्रकाशना लोभथी मुंबईनी मोहनलालजी सेंट्रल लाइब्रेरीना संग्रहनी हायप्रत पण में मगावी हती. ते मने सुप्रसिद्ध 'जैन गूर्जर कविओ'ना कर्ता रा. रा. मोहनलाल दलीचंद देशाइए मेळवी आपी हती. ए त्रेवीस पत्रनी

पोथी छे. ते पैकी पत्र १६ तथा २२ खूटे छे. प्रत्येक पृष्ठमां पंक्ति
तेर चौद अने पंक्तिमा अक्षर अडत्रीसने आशरे छे. लिपि पडिमात्रा-
वाळी देवनागरी छे. आ प्रतमां जूना शुद्ध पाठ जळवाई रहेला मने
प्राप्त थया. एनी पुष्पिका नीचे प्रमाणे छे. 'इति श्री त्रिभुवनदीपक
प्रबंध समाप्त मिति । संवत् १६२२ वर्षे आषाढ मासे वदु(ल) पखे
एकादशी ११ गुरुवासरे ॥ शुभ नक्षत्रे लग्ने । पुस्तकं च भट्टारक
श्रीपुण्यप्रभसूरीश्वराणां शिष्य भट्टारक श्री जयसिंह सूरिणा लेपयाचक्रे ।
आचंद्रार्क चिर नंदात् । इत्यादि.

रचनाकाळ.

२२ प्रस्तुत काव्यनी रचनानो समय पण 'वसंतविलास'नी
पेठे अनिश्चित छे. परतु जेम उत्तरनो उत्तर अवधि स्थपाय छे, तेम
पूर्वनो पूर्व अवधि आंकी शकाय छे. जयशेखरसूरिए सं. १४६२ मां
संस्कृत भाषामा प्रबोधचिंतामणि[२५] नामे काव्य रच्यूं, त्यारपछी

२४ जुओ पंडित लालचद्र भगवानदास सपादित त्रिभुवनदीपक
प्रबधनी प्रस्तावना, पृष्ठ १३.

२५ भावनगरनी श्रीजैनधर्मप्रसारक सभाए सस्कृत प्रबोधचिन्ता-
मणि काव्य छपाव्यूं छे. अत्यारे ते दुष्प्राप्य छे. एनू गूजराती भाषांतर
पण ए ज सभाए छपावी प्रगट कर्यू छे प्रस्तुत संस्कृत काव्य उपरथी
धर्ममंदिरे स. (१७४१) मा मोहविवेकनो रास रच्यो छे. ए रास श्रीयुत
मनसुखलाल रवजीभाई महेताना जैन काव्यदोहन भाग १, पृष्ठ २२८—
३६४ मां छपायो छे.

तेमणे मूळनी रूपरेखामां जूज फेरफार करी ओर रंग पूरी संस्कृतना अणजाण श्रोताने रुचती प्राकृत वाणीमां स्वतंत्र काव्य रची काढ्यूं; ते ज आ गूजराती प्रबोधचिंतामणि छे. एने हूं ईसवी पंदरमा शतकना पहेला चरणमां मूकूं छूं.

कर्ता जयशेखरसूरि.

२३ जयशेखरसूरि श्वेतांबर जैन संप्रदायना अंचल गच्छना महेन्द्रप्रभसूरिना वचट शिष्य थाय. सौथी न्हाना शिष्य मेरुतुंगसूरिए संवत १४१८ मां दीक्षा लीधी हती, अर्थात् जयशेखरसूरिनो दीक्षासमय ते पहेलां. एमणे संस्कृत प्राकृत अने गूजरातीमां काव्य रच्यां छे. एक ज वर्षमां उपदेशचिन्तामणि, धम्मिलचरित महाकाव्य अने प्रबोधचिन्तामणिनी संस्कृतमां रचना सूरीश्वरनी असाधारण शक्तिनी प्रतीति करावे छे. एमणे जैनकुमारसंभव नामे महाकाव्य पण रच्यूं छे. आ उपरांत एओए शत्रुंजयद्वात्रिंशिका, गिरनारद्वात्रिंशिका, महावीरद्वात्रिंशिका अने क्रियागुप्तस्तोत्र तथा आत्मावबोधकुलक पण रच्यां छे. आ लघु कृतिओमानी छेल्ली प्राकृतमा छे; अने छेल्ली द्वात्रिंशिका भाषासमकरूपे छे; बीजी न्हानी मोटी कृतिओ संस्कृतमां छे. जयशेखरसूरिनी मातृभाषामां कृति तो संग्रहेलो प्रबोधचिंतामणि ज छे[२६]. एना बंधनी सरळता, वाणीनो प्रसाद अने कवितानी चमक जोतां सूरीश्वरे बीजां गूजराती काव्यो रच्यां होवां जोइये.

---

२६ आ हकीकत पंडित लालचंद्र भगवानदास संपादित त्रिभुवनदीपक प्रबंधनी प्रस्तावनामांथी संक्षेपमां उतारी छे.

प्रबोधचिंतामणि अने प्रबोधचन्द्रोदय.

२४ प्रबोधचिंतामणि गूजरातीमां जूनामां जूनूं रूपक छे. जयशेखरसूरिनो आदर्श कवि कृष्णमिश्रनूं प्रबोधचन्द्रोदय नाटक होय, एम तेनी संकळना अने तेना नाम उपरथी जणाय छे. प्रबोधचन्द्रोदयमांना बीजभूत वैष्णव रूपकनां शैव अने जैन, नैयायिक अने रासेश, एम अनेक वधतां ओछां संवादी प्रतिबिंबो संस्कृतमां घडाया छे[२७]. ते बधां ज्यारे नाटकरूपे छे, त्यारे प्रबोधचिंतामणि काव्यना रूपमां दर्शन दे छे. बिंबभूत प्रबोधचन्द्रोदयमां, ब्राह्मण महामात्य गोपाले ई. स. १०६९ मां चेदि देशना कलचुरि राजा कर्णने हरावीने जेजाकभुक्तिना चंद्रवंशी (चंदेल) राजा कीर्तिवर्मानो उदय साध्यो, ते वृत्तांत साथे संवाद धरावतूं संविधान योज्यूं छे. एमां मोह राजानो पराजय करीने विवेक पण प्रबोधचंद्रनो उदय साधे छे[२८]. प्रस्तुत संवादी नाटक उक्त विजयना महोत्सवमां राजा अने महामात्य समक्ष भजववामां आव्यूं हतूं. ए रूपक कृष्णमिश्रे पोताना शिष्य गोपालनी प्रसन्नता

२७ जेवा के वेंकटनाथनूं सकल्पसूर्योदय, आनंदराय मखीनूं विद्यापरिणयन अने जीवानन्दन, गोकुलनाथ उपाध्यायनूं अमृतोदय, पद्मसुंदरनूं ज्ञानचन्द्रोदय, वादिचंद्रनूं ज्ञानसूर्योदय. यशःपालना मोहपराजयमां पण रूपकनो प्रयोग छे.

२८ जुओ प्रबोधचन्द्रोदय । प्रस्तावना । ९ । विवेकेनेव निर्जित्य कर्णं मोहमिवोर्जितम्। श्रीकीर्तिवर्मनृपतेर्बोधस्येवोदयः कृतः॥. अहीं बोध पदथी प्रबोध किंवा प्रबोधचन्द्र अभिप्रेत छे.

अर्थे रच्यूं हतूं. प्रबोधचंद्रोदय सारी ख्याति पण पाम्यूं अने एनां बहु अनुकरणो पण थयां, ते बधू ए खरूं. तथापि कहेवानी जरूर छे के रूपकात्मक वस्तु रंगभूमि उपर ओछूं मजववा योग्य छे. अध्यारोपने अंगे रहेली अवास्तवता प्रयोगनी सफळतामां आडी आवे छे. अमूर्त भावो अभिनयमां मूर्त पात्रोनूं कार्य करवा असमर्थ नीवडे छे. रूपकनी घटना दृश्यना करतां श्रव्य काव्यने अने कथाने विशेष अनुकूळ छे. ते जोता प्रयोगबंधनो मार्ग मूकी जयशेखरसूरिए काव्यबंधनो मार्ग लीधो ए बहु योग्य कर्यूं छे. रूपक मननग्राह्य छे. तेना काव्यरूपे निरूपणथी औचित्य सचवाय छे अने नवीनता ए आवे छे.

रूपकनूं वस्तु.

२९ जयशेखरसूरिना प्रस्तुत काव्यमां विविध पेटारूपको समायां छे[२९]. ते बधानूं निरूपण करवुं आवा लघु संग्रहनी प्रस्तावनामां अस्थाने गणाय. ते कारणथी प्रबोधचिंतामणिना मुख्य अंशनो संक्षेपमां उद्धार करूं छूं.

२१ विश्वनूं साम्राज्य धरावतो परमहंस नामे राजा छे. कोइ एने अर्हत[३०] कहे छे, कोइ ब्रह्म (अलख) कहे छे. तेने चेतना नामे

२९ जेवां के अविद्यानगरी अने तेनूं अधिकारिमंडळ, पुण्यरंगपाटण अने तेनूं अधिकारिमंडळ, विवेक अने मोहनी युद्धसामग्री.

३० भ्रम न थाय ते सारू में परमात्मा माटे कथासारमा अर्हंतनो अने परमेष्ठीने माटे अरिहंतनो उपयोग कर्यो छे. कवि उभयने माटे अरिहंत बोल वापरे छे.

राणी छे. राजाराणीने परस्पर गाढ प्रेम छे. एक दिवस वर्णे श्याम पण मोह उपजावती, विकारी दृष्टिवाळी माया नामे नवयौवना सुंदरी परमेश्वरनी नजरे चडी. तेनी मधुर मूर्ति राजाना अंतरमां वसी. मलिन मननी मायामां लुब्ध न थवा राणीए राजाने बहु कह्यूं, पण तेना कहेणनी कंइ टेकी लागी नहि. त्यारथी चेतनाए स्वामीने विशेष कहेवानूं ज नहि, पण नजरे पडवानूं ए बंध कर्यूं. मायाने तो एटलूं ज जोईतूं हतूं. ते हवे परमहंसनी मानीती राणी थई बेठी. तेना फंदमां फसी नवी कायानगरी वसावी मन नामे अमात्यने कारभार सोंपी देई परम ऐश्वर्य कोरे मूकी राजा नवी राणी साथे अखंड भोगविलासमां मग्न थयो. विषयनी केफमां भान भूलेला राजाने राणी अने अमात्ये पापनी बेडी जडी केदमां नांख्यो. मायाना प्रीतिपात्र मन अमात्ये हवे राजमुगट धारण कर्यो. ए धारे तेने बांधे, धारे तेने छोडे: एकने लूंटी ले, एकने न्याल करी दे.

२७ मन राजा बे राणीओ परण्यो, प्रवृत्ति अने निवृत्ति. पहेली राणीए मोहने अने बीजीए विवेकने जन्म आप्यो. प्रवृत्तिने निवृत्ति आंखना पाटा जेवी लागती हती. शोक्यनूं समूळ साल कादवानी मतलबथी तेणे स्वामीना कान खूब भंभेर्या. एनी कूडी शीखवणीथी मन राजाए निवृत्ति अने विवेकने देशवटो दीधो. तेमना गया पछी मोह कुंवरने राज्याधिकार अपाववो ते तो स्हेज वात हती. प्रवृत्तिना म्होनो पडतो बोल झीली मने मोहने राजा बनाव्यो. नवा राजाए अविद्या नामे नगरी वसावी तेने पोतानी राजधानी करी. मोह राजा

दुर्मतिने परण्यो. तेनाथी तेने काम राग अने द्वेष ए त्रण कुंवर तथा निद्रा अधृति अने मारि ए त्रण कुंवरी मळी छ संतान थयां. दुर्मति राणीए घर भरी नांख्यूं.

२८ देशवटो पामेलां निवृत्ति अने विवेक विप्रपुरी आदि अनेक स्थळे भमतां भमतां प्रवचनपुरी नामे नगरी पासेना आत्माराम वनमां वसता विमलबोधने त्यां जई चड्यां. एणे तेमने ऊतारो आप्यो एटलुं ज नहि, पण विवेक कुंवरनां उत्तम लक्षण जोई तेने सुमति नामे कन्या पण परणावी. पछी राजानां पासां सेववाथी भाग्य ऊघडशे एवो विमळबोधनो उपदेश थतां सुमतिने लेई निवृत्ति पुत्र साथे प्रवचनपुरीमां जईने रही. विवेक त्यांना राजा अरिहंत रायना दरबारमां गयो. तेना उपर प्रभुनी अमीदृष्टि ठरी. अवसर साधी विवेके मोह राजाना अत्याचारनी वात करी. ते उपरथी प्रभुए विवेकने हुकम कर्यो, के मोहना अमलथी जे जे मनुष्यो त्रासी गया होय तेमने लेईने तारे आपणा राज्यमां मुक्तिपुरी वसाववी. ए हुकम बहु सारी रीते अमलमां मूक्याथी प्रसन्न थई अरिहंत प्रभुए विवेकने पुण्यरंगपाटणनी जागीर आपी.

२९ विवेक पुण्यरंगपाटणमां सुखे राज्य करे छे, त्यां दंभ कदागम अने पाखंड नामे मोहरायना त्रण छूपा जासुसो तेनूं पगेरूं गोतता आवी पहोच्या. परामां रही तेमणे त्यांनां केटलांक मनुष्यने भोळवी पोताना पक्षमां लीधां. पछी तेओ शहेरमां पेसवा गया; पण ज्ञान नामे कोटवाळे तेमने विदेशी जाणी पेसवा दीधा नहि.

'एटले करीने कदागम अने पाखंड पाछा वळी गया. पाछळ रहेलो दंभ वेश बदली शहेरमां दाखल थयो. त्यां तेणे विवेकरायनो वृद्धि पामेलो प्रताप पोतानी आंखे जोयो. विशेषमां, मोहरायने जीतवा समकित नामे मंत्री साथे विवेक मसलत करतो हतो, ते पण तेणे अदृश्य रूपे कानोकान सांभळी. राजयना जोशीनूं एम कहेवूं थयूं के अरिहंत प्रभुना सामंत सदुपदेशने संयमश्री नामे कुंवरी छे तेनी साथे जो राजाजीनो विवाह थाय, तो सर्व शत्रु नाश पामवानो जोग छे. विवेके एक राणी उपर बीजी राणी करवानी आनाकानी करी. पण सुमतिए पोते आग्रह कर्याथी अरिहंत राय तरफ विवाहनी विष्टिए दूत मोकलवानूं ठर्यू. आ बधी हकीकत जाणी लेई दंभे आवी मोहरायने निवेदन करी. ते सांभळी मोह अत्यंत भय पाम्यो, अने विवेकने जीवतो जवा दीधो ते बाबत संताप करवा लाग्यो. तेने पाटवी कुंवर कामे धीरज आपी कह्यूं के 'पिताजी! फिकर न करो. आ वसंत आवे छे, एटले हूं दिग्विजयनी सवारीए नीकळूं छुं, अने विवेकनो ठाम ज फेडूं छुं.'

३० काम कुंवरे बोलेलूं पाळ्यूं. अबळा कहेवाती पण अपरिमित बळवाळी स्त्रीओनी सेना सजी ते विजययात्राए नीकळ्यो. प्रथम ते ब्रह्मलोकमां गयो. त्यां सावित्रीनी सरदारी नीचे भूदेवीओना मोटा कटके ब्रह्मदेवने अने ब्रह्मर्षिओने जीती लीधा. ब्रह्मलोकनो छपड्यो काम कुमार भूलोकमां आव्यो. त्यां तेणे कालिंदीने कांठे कृष्णावतारी विष्णुने जोया. तेमने तेणे सोळ सहस्र गोपीओनी

फोजथी घेरी लेई वश कर्या. त्यांथी ते वायुना वेगे उत्तरमां कैलासे पहोच्यो; अने शंकरने हाकेटीने कह्यूं के तमे मदनदहन बिरुद धरावो छो, तो आवी जाओ सामा, मने युद्ध आपो; अथवा तो हाथ जोडी मारी महारथिनीमांनी आ पार्वतीने धणियाणी करी तमारे माथे एनूं धणियापूं स्वीकारो. कामना परिबळथी मूढ बनेला योगीराजे पार्वतीनूं पाणिग्रहण कर्यूं एटलूं ज नहि, पण अर्धनारीश्वररूपे अर्धा अंगनां अने शक्तिरूपे सर्व देवनां धणी बनाव्यां. तेमनूं अनुकरण करी वसिष्ठ विश्वामित्र जेवा आरूढ तपस्वीए पण कामसूत्रना शासनने मान आपी गृहस्थाश्रम स्वीकार्यो अने तेने चारे आश्रमोमां शिरोमणि ठराव्यो.

३१ ए रीते देशदेशांतर जीती वळी काम कुमार पुण्यरंगपाटण भणी धस्यो. ए समाचार जासुस एकध्यासे विवेकराय हजुर लाव्यो, ते ज घडीए वगर विलंबे प्रवचनपुरीए आववानो अरिहंत प्रभुनो आदेश लेईने विष्टिकार पण आव्यो. प्रभुनी आज्ञा माथे चढावी विवेक प्रवचनपुरी जवा नीकळ्यो. एणे करेला संकेत प्रमाणे एनो बाळमित्र वस्तुविचार पुण्यरंगपाटणनी प्रजाने पाछळथी प्रवचनपुरी लई गयो. तेमना जवाथी नगर लगभग खाली थई गयूं. एटलामां शत्रुनी सेना दडमजल करती आवी पहोची. शहेर खाली जोई काम कुमार काकाने व्हीकनो मार्यो भागी गयेलो मानी फूलायो. शहेरमां एदी आळसु पडी रह्या हता तेमने बंदीवान करी विश्वविजयी योद्धो नासेडुनी पूंठ लेवी नादुरस्त धारी गडगडती नोबतें अने फरहरतां

निशाने अविद्यानगरी पाछो फर्यो. नगरना लोके एने मोतीए वधाव्यो, माताए एनां ओवारणां लीधां अने पिताए एनी पीठ थाबडी.

३२ मोह रायना मनमां एक ज वातनी खटक रही गई. विवेक छटकी गयो ते तेने खूंच्यूं. ते पळे प्रतीहारे आवी कह्यूं, के एक प्रचंड योद्धो दर्शनार्थी देवडीए ऊभो छे. राजानी आज्ञा थतां ते नवतर वीरे आवी मोहने प्रणाम कर्यो. राजाए पूछ्यूं के 'तमारूं नाम शुं, माइ?' तेणे जवाब दीधो: 'महाराज! मने कळिकाळ कहे छे. हूं तमारा शत्रुओनो काळ छूं. विवेकने हूं कूटी नांखीश; मुक्तिपुरीनो रस्तो ऊजाडीश; अने प्रवचननगरीने पण खळभळावीश.' राजाए सत्कार करी तेने राखी लीधो. कळिकाळे वैरीना राज्यमां भेळ पाडी केटलाकनूं सर्वस्व लूंटी लीधूं; केटलाकने बंदीवान कर्या; अने केटलाकने भवाटवीमां रखडता कर्या. तेणे केटला ए आश्रम उज्जड कर्या; केटलां ए गाम हतां–न–हतां कर्यां; केटलां ए शहेरं बाळी मूक्यां. मोहरायना किंकरे वर्तावेला केरनो पोकार ठेठ अरि-हंत प्रभुने काने पहोच्यो.

३३ ते अवसरे प्रवचनपुरीमां संयमश्रीना स्वयंवरनी धामधूम मची रही हती. त्यां भरी राजसभामां अरिहंतराय समक्ष विवेके पांच अपूर्व पराक्रम करी बताव्यां. पछी तेणे अति दुष्कर राधावेध पण साध्यो. ते ज क्षणे संयमश्रीए तेने कंठे वरमाळा आरोपी. हाथे-वाळो मळ्या बाद कांकणदोरा छोडवा न रहेता अरिहंत प्रभुना

आदेश अनुसार विवेक संयमश्री साथे जगतमां त्रास वर्तावता मोहने जीतवा महा बळवान सैन्य लेई नीकळ्यो.

३४ विवेकने आवतो सांभळी मोह राजा पण असंख्यात दळ साथे मेदान पड्यो. शत्रुंजयनी पंचकोशीमां बे सैन्य भेटाभेट थयां. उभय पक्षना योद्धाओ जीव पर आवी बडी बहादुरीथी लड्या. कटोकटीना समयमां मोहराजानां घाडांमानी भडकणभूत भरकुशे भागवा मांड्यूं; तेनो चेप लागी लश्करमां भंगाण पड्यूं. ओटवारवा मोहराजा आगळ धस्यो. वैरना अग्निथी प्रजळता राजाए भेंसाद्रोह वर्ताव्यो[31]. तेणे विवेकनूं सैन्य डामाडोळ थवा लाग्यूं. ए परिस्थितिमां विवेके आगळ आवी मोहने आंतर्यो. बंने वीर वच्चे प्राणांत युद्ध जाम्यूं. छेवटे विवेके ब्रह्मास्त्र मूकी मोहनूं माथूं ऊडावी दीधूं. अरिहंत रायनो जय थयो.

३५ मोहनी वांसे एनी माता प्रवृत्ति झुरी मुई. मन राजाने पण पूर्वना चिरपरिचयने लीधे पुत्रनूं मरण बहु साल्यूं. परंतु विवेके प्रीतिपुरःसर पिताने कषायोने हणी इंद्रियोने जीती शमरसना पूरमां झीलवानो प्रतिबोध कर्यो. ते मार्गे चटी मन राजाए अंते शुक्ल ध्यान रूपी अग्निमां प्रवेश कर्यो.

३६ चेतना राणी अत्यारसूधी अज्ञातवास सेवती हती, ते मायानो पक्ष तूट्याथी अवसर जोई स्वामी पासे आवी कहेवा लागी के ' परमहंस प्रभु ! आ अनेक उपद्रववाळी कायानगरीमां तमारो

३१ जुओ छट्टा अधिकारनो उत्तर भाग.

वास घटतो नथी. न्हाना गामधणी मटी तमे विश्वना सम्राटनूं परमैश्वर्य पुनः स्वीकारो. परमज्योतिःस्वरूप! तमे तमारूं महान तेज प्रकाशो.' ए वचन मायाना बंधनथी मोकळा थयेला राजाना हृदयमां वस्यां. तेणे कायानगरीनो त्याग कर्यो; विवेकनो पण प्रसंग छोड्यो; अने परमैश्वर्य पाछूं सिद्ध कर्यूं.

समालोचना.

३७ जयशेखरनी जुगलिया संततिनी परस्पर तुलना करवी इष्ट नथी. एक काव्यमां कविए अलंकारप्रधान महाकाव्यनी आडंबरी शैली स्वीकारी छे; अने बीजामां प्रसादप्रधान कथावार्तानी ऋजु शैली हृइये धरी छे. कर्ताना समयमां पंडितोए पहेलाने वखाण्यूं हशे; अने सामान्य श्रोताओए बीजाने वधावी लीधूं हशे. संस्कृत कवि तरीके जयशेखरनूं जे स्थान होय ते हो, गूजराती कवि तरीके तो तेनो दरज्जो ऊंचो छे. आ एक ज गुर्जर काव्यथी जैन कवि प्रथम पंक्तिनो साहित्यकार बने छे. प्रबोधचिंतामणि प्रबोधप्रकाशना करतां अधिक यशस्वी थवा निर्मित छे. कविनी प्रतिभा वस्तुनी गूंथणीमां, पात्रनी योजनामां अने रूपकनी खीलवणीमा एकसरखी विजयशाळी नीवडे छे. प्रस्तावोनूं वैचित्र्य अनेक रसनी मिलावटने पोसे छे; अने कार्यनो वेग तथा संविधाननूं चातुर्य वांचनारनूं कौतुक छेवट सूधी टकावी राखे छे. गूजराती कृतिनो रस झीलनार जैनेतर हशे, ए दृष्टिथी कर्ताए तेने सर्वेनी रुचि संतोखे एवूं रूप आप्यूं छे. संस्कृत मूळमां जैन मुनिए मौर्य संप्रति अने चौलुक्य कुमारपाळ ए बे

परम आर्हत राजाओए मोहरायना नवा योद्धा कलिकाळ साथे दारुण विग्रह मचाव्याना प्रस्ताव आप्या छे[३२], ते बंने विवेकबुद्धि अनुसार पडता मूकी कविए नवा काव्यनूं अखंडपणूं खंडित थवा दीधूं छे. वळी देशवटो पामेला निवृत्ति अने तेनो पुत्र मार्गमां आवता विविध जैनेतर आश्रम तेमा वर्णवे छे[३३], ते विशेनूं कथन आमां टूंकावी दीधूं छे अने ते ते संप्रदायना नामनिर्देश वगर सामान्य शब्दमां आप्यूं छे. जैनेतर साहित्यनी पेठे जैन साहित्य चकले चौटे गवायूं होत, तो जयशेखरसूरिए पण भालण अने प्रेमानंदना जेवी प्रसिद्धि लोकमां मेळवी होत.

वाणिज्यमूलक अने षाड्गुण्यमूलक रूपक.

३८ प्रेमानदनूं नाम लेतां एनो वणजारो अने तेना वर्गनां बीजां बे काव्य याद आवे छे. त्रणे वणजारा प्रबोधचिंतामणिना जेवां रूपक छे. सौमां वधारे जाणीती वडोदराना कविनी कृति छे. नव्याशी कडींनूं आ काव्य कर्ताने व्हाली रामग्री रागनी देशीमां रचवामां आव्यूं छे[३४]. एमां गणपति अने सरस्वतीने मूकी यमदंडथी मूकावनारा संतसाधुनूं मंगळाचरण छे. पछी चित्रविचित्रना चोपडामां खतवायला पापपुण्यनूं लेखूं पूछनारा धर्मराजानी साधारण पौराणिक भावनाने अनुसरतूं जीवतवाणिज्यनूं रूपक आप्यूं छे. एमानूं तत्त्व-

३२ जुओ छठो अधिकार.

३३ जुओ चोथा अधिकारनो पूर्व भाग.

३४ आ काव्य बृहत्काव्यदोहन, भाग २ मा प्रगट थयूं छे.

ज्ञान श्रोताना मनमां सहेलाइथी ऊतरे एवूं होवाथी प्रस्तुत काव्य बहु लोकप्रिय थयूं छे. एनी रचनामां केटलाक प्रकारनी कचाश नजरे तरे छे. कायानगरीना पुरनायक वणजाराने, अने मनने पण, संबोधीने कवि प्रस्तुत काव्य आरंभे छे. ए संबोधननी पद्धति त्रीजी कडी पूरी थतामां तजी देई ते चोथी कडीथी पुरनायकनो वृत्तांत त्रीजा पुरुषमां आपे छे, जोके ध्रुवपद तो संबोधनात्मक ज चालु राखे छे. वळी रूपकनी घटनामां पण जाण्ये अजाण्ये एकना एक प्रस्तुतमां भिन्नभिन्न स्थळे भिन्नभिन्न आरोप कर्याना दृष्टांत आ खंडकाव्यमां अनेक छे. एकवार भ्रांति अने ईर्ष्यानू प्रवृत्तिनी पुत्रीओ रूपे अने बीजी वार भाग अने आबळी रूपे निरूपण छे. प्रपंचने वाणोतरे कह्यो छे अने पीतळे कह्यो छे; तेवी ज रीते विवेकने निवृत्तिना पुत्र तरीके अने वाणोतर तरीके पण वर्णव्यो छे. एनूं ए कपट खोटा काटलाना रूपमां कथीरना रूपमां अने काचळीना रूपमां नटना खेल खेलतूं देखा दे छे. आ अने बीजा केटलाक आरोपमां वर्णसाम्य उपरांत सादृश्य कशूं ए जोवामां आवतूं नथी. आवी आवी कचाशने लीधे पौराणिक वणजाराने कर्ताना जीवननी बीजी वीशीमां मूकवा हूं प्रेराऊ छूं. कालक्रममां एना पछी उदयरत्ननो जैन वणजारो आवे छे[35]. ते संवत १७९७ मां रचायो लागे छे[36]. रामग्रीनी देशीनो

३५ आ न्हानू जैन काव्य पण बृहत्काव्यदोहन, ग्रंथ २ मा आप्यूं छे.

३६ 'संवत सत्तावनना पोठी भरे ते उदार मरजे' एवी मतलबनो

एमां पण प्रयोग छे. सात कडीनूं आ टूंकूं काव्य पर्युषणपर्वना विज्ञप्तिपत्र जेवूं जणाय छे. त्रीजो वणजारो धोळकाना जीवराम भटे रचेलो छे[३७]. तेनूं नाम जीवराज शेठनी मुसाफरी राखवामां आव्यूं छे, वाणिज्ययात्रा ज तेमां पण निरूपित होवाना कारणथी में तेनो सामान्य वणजारानी संज्ञाथी व्यवहार कर्यो छे. एनी रचना संवत १८००मा थई छे. ए काव्य आत्मकथनी तरीके कर्ताना जीवन उपर प्रकाश पाडनारूं होई उपयोगी छे[३८]; पण रूपक तरीके एनी कीमत ओछी छे. धोळकाना कविनूं रूपक गंठाई गयेला छोडनी पेठे अणखील्यूं ज रह्यूं छे; एना आरोपमां सादृश्यनूं धोरण जळवायूं नथी; अने उपपत्तिनी खामी डगले डगले ठेबे चडे छे. काव्यमां समायलूं तत्त्वज्ञान उपलकियूं छे; सबब हू एने लौकिक वणजारो कहूं छूं. जीवराम भटनूं छंदनी धाटीमां रचेलूं आ सत्याशी कडीनूं काव्य उदयरत्नना पूर्वोक्त सात कडीना पद साथे पण सरखामणीमा ऊभूं रही शके के केम, ते शक पडतूं छे.

आत्मा रूपी वणजाराने पहेली कडीना उत्तर भागमा उपदेश छे. ते उपरथी रचनाना वर्णनी मे कल्पना करी छे.

३७ आ काव्य बृहत्काव्यदोहन, ग्रंथ १ मा छपायू छे.

३८ औदीच्य टोळक कवि बाळपण बाळरोलमां अने यौवन लाभलोभनी प्रवृत्तिमा गाळ्या पछी चादोद करनाळीमा तीर्थवास करी वृद्धावस्थाए निवृत्ति सेवी आत्मकल्याण साधे छे, तेनी नोंध प्रस्तुत काव्यमा छे.

३९ उपरनां त्रणे अर्वाचीन काव्योमां रूपक वाणिज्यमूलक छे. तेने ठेकाणे जूना प्रबोधचिन्तामणिमां अने प्रबोधचन्द्रोदयमां ते षाड्गुण्यमूलक छे. ए योजना वृत्तांतना भरावनी, प्रस्तावोना वैचित्र्यनी अने रसना वैविध्यनी पोसनारी छे. जयशेखरसूरिना काव्यनी अधिकता वणजाराओने पडछे विशिष्ट रूपकमां रहेली छे.

जूज ऊणपो.

४० प्रेमानंदना वणजारानी पेठे प्रबोधचिंतामणिमां पण जूज ऊणप झीणी नजरे जोनारने मळी आवे छे. विवेक अने मोहना प्राणांत रणसंग्राममां जालिम जोद्धो कलिकाळ केम जणातो नथी? परम आर्हत कुमारपाळ सामे तो कदाच ए युद्धना अखाडामां ऊतरवानी छाती न चलावे; पण बीजानी साथे तो बाथ भीडी शके. त्यहे एणे संग्राममां भाग न लीधो तो. ए वेगळे रही रणभूमि उपर देखरेख राखी शकत. संस्कृत मूळमां पण अहीं कलिकाळ शोध्यो जडतो नथी. युद्धमां विजय मेळव्या पछी विवेकनो वृत्तांत पण तूटक छे. परमहंस अने चेतनाना तार हाथमां लेतां विवेक अने अरिहंत रायना तार कविना हाथमां रमतां रमतां सरी पडे छे. अध्यारोपमां पण कहीं कहीं प्रस्तुत काव्यमां वणजाराना जेवां गरबडगोटा ध्यान खेंचे छे. समकितने एक वारे विवेकना प्रधान रूपे अने बीजी वारे मुक्तिपुरीना एक राजमार्ग रूपे वर्णवेल छे: तेवी ज रीते संवरने विवेकनो पुत्र तेम ज मुक्तिपुरीनो बीजो राजमार्ग पण कह्यो छे. राग अने द्वेष मोहना पुत्र छे, ते ज संयमश्रीना

स्वयंवरमंडपमा विवेकना सामा थनारा सिंह पण छे. तपमा प्रथम पुण्यरंगपाटणना दरवाजानो अने पछी उक्त स्वयंवरमंडपमा कुस्वातिया भूमिनो आरोप कर्यो छे. न्हानी न्हानी न्यूनता ते बीजी वाते पूर्णतानूं प्रमाण.

पद्यबंध अने बोली.

४१ प्रबंधचिंतामणिनो पद्यभाग मात्राबंध अने लयबंध ए बे रूपे विभक्त छे. मात्रात्मक छंदमा आशरे अढीसें चउपई अने लगभग पोणो सो दूहा छे. ते सिवाय पद्धरी, चरणाकुल, मरहट्टा, दुमिला अने गीतिना नामे जाणीता मात्रामेळ छंद वधताओछा देखा दे छे; अने अपभ्रंशमाथी जूनी गूजरातीमा ऊतरी आवेलो वस्तु[३९] नामे छंद पण तेमा योजेलो छे. उपरांत छपय, सरस्वतीधउल[४०] तक–

३९ वस्तु छंदना लक्षण माटे जुओ हेमाचार्यविरचित छन्दोनुशासन । ५ । ३० ।. एनू नीजू नाम रड्डा छे, ए मिश्र मात्राबंध छे. पहेला चरणमा आरभनो सात मात्रानो खड गूजरातीमा बेवडावेल छे, ते अपभ्रंशमा बेवडातो जणातो नथी वस्तुनो हायमतोमा मल्हार राग आप्यो छे.

४० सरस्वतीधउल मिश्र मात्राबंध छे. एमा तेरमी मात्रा पछी लय निमित्त ऊमेरेला एकारवाळो दूहो, तेनी साथे चरणकुडळीथी जोडाता काव्य किंवा रोलाना चार चरण अने ते पछी अंत्य गुरुने ठेकाणे एक लघुवाळा चोपायाना, एटले के रणपिंगळमाना सत्तावीस मात्राना सरसि छदना, बे चरण गोठवेला जोवामा आवे छे. हेमाचार्यना छन्दोनुशासनमा केटलाक धवल्कना प्रकार आप्या छे, तेमा प्रस्तुत घउल छे नहि. परतु तेमणे नोंधेलो धवल्क उपरात बीजा बहु धवल्क छे एम तेओ जणावे छे, अने ते सातवाहनोक्तिओमा जोई लेवा सूचवे छे.

हारु[41] अने घउल[42] ए मिश्र मात्राबंध पण कविए उपयोगमां लीधा छे. बाकीना पद्यात्मक भागमां सोरठा जेवा एक कडीना द्रूपदनो, पद जेवां अनेक कडीनां द्रूपद तथा [43]झावट्टनो अने घउल किंवा घोळनो समावेश थाय छे. लयबंध आखा काव्यनो नवमो भाग ज रोके छे. गद्यभागमां बोलीनां बे उदाहरण छे. जयशेखरसूरिना न्हाना गुरुभाइ मेरुतुंगसूरि, तेमना शिष्य माणिक्यसुंदरसूरिए जूनी गूजरातीमां गद्यात्मक पृथ्वीचंद्रचरित्र[44] संवत १५७८ मां रच्युं छे; ते बोलीमां छे. अक्षरना, रूपना, मात्राना अने लयना बंधनथी मुक्त छतां तेमां लेवाती छूट भोगवतुं प्रासयुक्त गद्य, ते बोली. माणिक्य-

---

४१ तलहारु पण धवलकवर्गनो एक मिश्र मात्रामेळ छंद जणाय छे. ए यमकसांकळीथी जोडायला प्लवंगम अने सारसी[हरिगीत]नो बनेलो छे. पंदरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य, पृ. १२४-१२५ ना प्लवंगम अने सारसीना प्रत्येक जोडकानो एक एक तलहारु लेखाय छे. हाथप्रतोमां तलहारु छंदनो गुर्जरी राग आप्यो छे.

४२ आ घउल पण मिश्र मात्राबंध छे. पहेलुं तथा त्रीजुं ए बे प्रासयुक्त चरण चोपाईनां, अने बीजुं तथा चोथुं ए बे प्रासयुक्त चरण दूहाना तेर मात्रावाळा खंडनां लय निमित्त उमेरेला एकार सहित, ए चारनी साथे शब्दकुंडळीथी जोडातां सारसी (हरिगीत)नां चार चरण मळी ए छंद बने छे.

४३ झावट्ट दोहरानी घाटीनो लयबंध छे. पंदरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्यना पृ. १२२ मां जे पद आप्युं छे, ते ज झावट्ट छे.

४४ प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह (Baroda Oriental Series) मां आ गद्यकाव्य छपायुं छे.

सुंदर बोलीवाळा प्रबंधने वाग्विलास एटले बोलीनो विलास एवूं नाम आपे छे. आवी जातना गद्यनो प्रचार सारा भाग्ये हवे साहित्यमा बहुधा ओछो, अथवा छेक अणउतो थयो छे.

संज्ञा संबंधी चर्चा.

४२ उपयोगमां लेवायली आदर्शभूत त्रण हाथप्रतोमां समाविष्ट जयशेखरसूरिनी उद्धृत कृतिनूं नाम त्रिभुवनदीपक प्रबंध आप्यूं छे. ए नाम तेने छेवटनी कडी उपरथी मळेलूं लागे छे. मुंबइनी श्रीमोहनलालजी सेंट्रल लाइब्रेरीनी प्रतमा ए कडी नीचे मुजब छे[४५].

त्रिभुवनदीपक एह प्रबंध, पाप तणउ न सुहावइ गंध;
ता मेयणिमंडलि थिर थाइ, जा नहयलि दिणयर शशिराइ.

प्रशस्तिनी कुल चार कडीमानी आ छेक छेल्ली कडी छे. एना पहेलांनी त्रण कडीमा, कथानायक जे विश्वनो सम्राट परमहंस, तेनी प्रशंसा छे; अने आ कडीमा काव्य किंवा प्रबंधनी प्रशंसा छे तथा ते अमर रहेवानी आशंसा छे. कृतिनी उत्तमता अर्थगर्भित त्रिभुवन-

४५ वडोदराना आत्माराम जैन ज्ञानमंदिरना मुनिमहाराज प्रवर्तक श्रीकांतिविजयजीना भंडारनी प्र. का. संज्ञानी हाथप्रतमा पण उपरनी कडी जूज फेरफारथी काव्यने छेडे ज आपी छे, जुओ जैन गुर्जर कविओ भाग १, पृ. २५. ए कडीनु उत्तरार्ध कोठीपोळवाळी हाथप्रतमा छे नहि, अने पूर्वार्ध 'तिणि सीसामणि' प्रतीकवाळी अने 'मोहध्यान' प्रतीकवाळी कडीनी वच्चे जोवामा आवे छे. त्या ते असगत छे. वर्से वर्षं उपर प्रस्तुत प्रत जेणे उतारी हशे, तेनाथी आ भूल थई लागे छे.

दीपक विशेषणथी जे मात्र सूचवी छे, ते जैन मुनिनि नम्रता छे. प्रस्तुत विशेषणमा नामनो भ्रम थयाथी पुष्पिकावाळो गोटाळो ऊभो थयो छे. कोइ हाथप्रतमा त्रिभुवनदीपक प्रबंधने बदले परमहंसप्रबंध, हंसप्रबंध अथवा हंसविचारप्रबंध नाम आपेलूं जोवामा आवे, तोये नवाई नहि[46]. आथी जे हाथप्रतोमा मळता भिन्न भिन्न नाम अपायला मळी आवे छे. प्रेमानंदना वणजारानी अठ्यासीमी कडीमा आवो ज भ्रम थयाने लीधे अपायलू विवेक वणजारो नाम वर्से वर्ष थया चाल्यूं आवेलूं छे[47], जोके विवेक तो पुरनायक वणजारानो वाणोतर छे-

४६ जयशेखरसूरिना आ गुजराती काव्यनी एक हाथप्रत रा. रा. मोहनलाल दलीचंद देशाई तरफथी हाल तरतमा ज मळी छे, तेमा एनू नाम अंतरगचउपई आप्यू छे. ते प्रत खभातना शांतिनाथजी-ना भंडारनी छे. एना निरंक पत्र १६२ थी लाक पत्र १८१ सूधीमा प्रस्तुत काव्य समायू छे. प्रत्येक पृष्ठमा पंक्ति ११ अने पंक्तिमा अक्षर ५० ने आशरे छे. वचमा चोवीसेक अक्षरपूर स्वास्तिकनी कोरी जगा छे. पत्रना अक्षर जेटला सुंदर छे तेटलू लखाण शुद्ध नथी. समाप्तिनी पंक्ति-ओनो गोठवण वडोदरानी नरसिंहजीनी पोळनी हाथप्रतने मळती छे, मात्र एमा नरसिंहजीनी पोळनी अने मोहनलालजी सेंट्रल लाइब्रेरीनी प्रतवाळी अंतिम पंक्ति छे नहि. एनी पुष्पिका नीचे प्रमाणे छे—इति श्री अंतरंग चउपई संपूर्ण समाप्त ॥ ग्रंथाग्रं ७२४ ॥

४७ प्रस्तुत कडीमा 'विवेक, वणजारो ते आतमा' एवा बोल छे; ते कविए रूपकनी कूंची रूपे मूक्या छे. आत्मा ते ज वणजारो छे, आवो विवेक एटले खुलासो छे. प्रेमानंदनी उत्तर अवस्थानी शिष्या

वणजारो नथी. ए ज काव्यनी एक हाथप्रतमा एने कायामन वणजारो ए कहेल छे[48]. आ भूलभरेली संज्ञाओनो उत्तर अंश, एटलूं सारूं

ओरपाडनी अजाचक बाई न्हानीए पोताना तरफनूं केटलूक ऊमेरी मूळ वणजारानी नवी आवृत्ति करी तेने विवेकवणजारो नाम आप्यू छे ते उपर ऊतारेल्ल बोलमा विवेकवणजारो सामासिक शब्दरूपे लेईने आपद्रे लागे छे. ए ऊमेरणवाळा काव्यनी बीजी कडीमा 'वरणवू आतमा अनुभवी विवेकवणजारो नाम' एवी पंक्ति छे, ते उपरनू अनुमान करवा मनने प्रेरे छे. ए काव्य संवत १७८४ ना जेठ मासनी वदि बारश ने गुरुवारे रच्यानी बाई न्हानीनी नोंध छे. जुओ स. १९६१ ना वसतनो अंक १, नानीबाई अने वणजारो. ए बाईनू पेढीनामू बहु श्रम लेई रा. रा. तनमनीशकर लालशकर शिने मेळवी आप्यू छे, ते प्रमाणे पेढीओ गणता बाई न्हानीनो ए ज समय आवी रहे छे. आजे तेने वर्समा माण बे वरस ओछा छे.

४८ संवत १८८३ ना असाड वदि अगियारशथी संवत १८८५ ना भादरवा वदि अमास सुधीमा पटेल रणछोड हरिभाइए ऊतारेला हाल गुजरात वर्नाक्यूलर सोसाइटीनी मालकीना चोपडामा काव्यना आरंभे "काया मन वणजारो' नाम छे. 'ए विवेक वणजारो आतमा' पछीनो छेवटनो भाग एमा छे नहि. सोसाइटीनी मालकीना ऊतार्या साल वग- रना बीजा एक गुटकामा जीवणरामनी चातुरी, प्रेमानदनो वणजारो, संतोषकल्पतरु (हिंदी), हारमाळा (पद १४६), अने अलखबुलाखी- नाम, कृष्णराम महाराज वगेरेना थोडाक पदो छे. एमा काव्यना आरंभे अने अंते वणजारो नाम आपेल्ल छे.

छे, के वाणिज्यवाचक छे. परंतु त्रिभुवनदीपक प्रबंध संज्ञानो तो एके अंश आवो सार्थक नथी. प्रबोधचिंतामणि नाम विषयनूं बोधक छे, मूळनूं सूचक छे, मूळना आदर्शनूं ज्ञापक छे अने ज्ञानस्वरूप अर्हंत भगवाननूं अवगमक छे.

संक्षेप बाबत खुलासो.

४३ आ काव्यनी पचासेक कडी जे ओछी जरूरनी के ओछी स्फुट जणाई, ते में मूकी दीधी छे कापकूप करता कोइ मर्मभूत भाग ऊडी गयो तो नहि होय-अथवा बीजी आशातना थई तो नहि होय, एवी आशा राखूं छूं.

संग्रह सबंधी सामान्य विचार.

४४ संगृहीत पाच काव्यो सैकाभरना गाळाना छे. रणमल्लछंद अने प्रबोधचिंतामणि शतकना पहेला चरणमां आवे छे, वसंतविलास मध्यमां मूकाय छे, अने सीताहरण तथा उषाहरण त्रीजा चोथा चरणमां गोठवाय छे. शतकना पूर्वार्धमां अधिक प्रचार छंदनो थाय छे, उत्तरार्धमां देशीनो वपराट वधे छे अने छंदनो घटे छे.-शतकना छेल्ला दसकानूं उषाहरण तो नरू देशीबद्ध ज छे. प्राकृत प्पासेथी वारसामां मळेली छंदनी पूंजी वधारीने अपभ्रंशे गूजरातीने आपी४९. एने लीधे गूजरातीनूं पुरातन साहित्य छंदमां रचायूं. समय जतां गूजरातीए नवूं साहस खेडी विविध देशीनो लयबंध ऊपजाव्यो.

४९ जुओ हेमाचार्यविरचित छन्दोनुशासननो प्राकृत अने अपभ्रंश छंदोने लगतो भाग.

चिरंतन गूजराती साहित्य ओछुं उपलब्ध अने ओछेरूं प्रसिद्ध होवाथी, गत काळनूं गूजराती साहित्य तो देशीमां ज होय—छंदमां न होय, एवी मान्यता बांधनार पुरुष अपभ्रंशे आपेलो वारसो भूली जाय छे. रणमल्लछंद एना नामथी ज ए वारसानूं भान करावे छे. वळी, छंदनो कलामय उपयोग आजकालनो नथी—पण कलाना जेटलो जूनो छे, एनो पण कंइक ख्याल एनी रचनाद्वारा ए आपे छे.

आभार.

४९ आ संग्रह बहार पाडवानो मारो जे प्रयास छे, तेने अनेक दिशाएथी सहायता न मळी होत तो ए केवो बहार पडत ते कही शकाय नहि. वडोदरानी सेंट्रल लाइब्रेरीना पंडित लालचंद्र भगवानदासे प्रबोधचिंतामणिनी हाथप्रतोने लगती केटलीक उपयोगी माहीती पूरी पाडी हती. मुनिमहाराज प्रवर्तक श्रीकांतिविजयजीए वढवाण मुकामथी वडोदरे आत्माराम ज्ञानमंदिरना सेक्रेटरी भाइ जीवणलाल किशोरदासने पत्र लखी भंडारमांनी प्रत कढावी आपी हती. वळी 'जैन गूर्जर कविओ 'ना कर्ता श्रीयुत मोहनलाल दलीचंद देशाइए मुंबइथी श्रीमोहनलालजी सेंट्रल लाइब्रेरीमांनी हाथप्रत मोकली हती, अने हवणां खंमातना श्रीशांतिनाथजीना भंडारनी पण मोकली छे. ए बंधुकृत्य माटे त्यागी अने संसारी जैन बंधुओनो हूं ऋणी छूं. अहीं भावनगरना शेठ कुंवरजी आणंदजीए करी आपेली अनुकूळतानी नोंध लेतां मने बहु आनंद थाय छे. एमणे त्यांनी जैन लाइब्रेरीमांथी मुद्रित मूळभूत प्रबोधचिन्तामणि मोकल्यूं न होत, तो

हूं ते जोवा पामत नहि; केमके ए हवे अप्राप्य बन्यु छे. विशेषमां एमणे एनुं गुजराती भाषान्तर भेट मोकल्युं हतुं. ए माटे हूं एमनो आभारी छुं. वळी शृंगारत्रिवेणीना कर्ता भाइ तनमनीशंकर लाभशंकर शिवे प्रेमानंदना वणझाराना रचनाकाळ उपर प्रकाश पाडनार अभाचक बाई न्हानीनुं पेढीनामुं बीजी जणवाजोग विगत साथे मेळवी आप्युं हतुं, तेमने पण हूं केम भूलुं ?

४६ मारा कलारसिक स्नेही नानालाल चमनलाल महेता, आइ. सी. एस, पण अहीं मने याद आवे छे. एमणे 'रूपम्'मा स्वतंत्र लेख लखी अने ताजा बहार पाडेला Studies in Indian Painting ए नामना कीमती पुस्तकनूं आखूं एक प्रकरण रोकी ओळियाना चित्रभागने प्रसिद्धिमां आणी वसंतविलासनी पण परोक्ष ख्याति वधारी छे. आ संग्रहने छेडे परिशिष्ट आप्युं छे, ते एमनी सूचनाने आभारी छे. अने आ ओछूं खपनारूं जूनी गुजरातीनूं पुस्तक बहार पाडवानूं खरच गूजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी विना कोण व्होरे ? ए संस्थानी प्रेरणा तो आनूं आदिकारण छे.



शुद्धिपत्र.

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१७	हतो	ईडरमां हतो
१४	२०	पं	पंडित
३७	७	लगमग	लगभग
	१५	मलहार	मल्हार
३८	११	प्लवगांम	प्लवंगम
	१८	शद्व	शब्द
३९	११	शशिराइ	शशराइ
४३	१९	ऋणी	ऋणी
४४	४	वणझाराना	वणजाराना
	१३	गुजरातीनूं	गूजरातीनूं
३	९	उलट्टिय	ऊलट्टिय
		वेस असेस पलट्टिय	पण्डरवेस पलट्टिय
७	४,७	सिहर	सिहरि
	१०,१४	पण्डर वेस	पंण्डरवेस
८	४	गाह अङ्ग	गाम गेह
	५	तेह	नाह
९	१०	तरवर वेस	पण्डरवेस
११	६	पण्डर मिडस	पण्डरवेस
१२	८	भइवाय	भटवाय
१३	५	पण्डर दरइ समरि	पण्डरवेस डरइ
१५	४	पहुती	पहुत्त
	१७	पुरिहिं	पुरहि
१६	१०	जलनइ	जलसइ

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	१३	पूंजइ	पूजइ
	१४	कूंजइ	कूझइ
	१६	यु वानि	जुवान
	१७	जे किम	जे कि
१८	४	जीअ	जीइ
१९	१८	करां भलु	करांभलु
२०	९	जनु रङ्ग	सह रङ्गि
२१	१७	विधि	विधि
२२	१९	विरूअउ	गरुअउ
२३	१३	मञ्जुवइण	मंजु वयणि
२५	३	मागि जि	मागिजि
२६	२६	प्रीछइ	पूछइ
३४	५	नयण	वयण
	१४	अन्तरीख पुहिराज	दन्ति राखि पुहिवी
३९	९	देखु (?)	देखु
	१८	कोट साकला	कोटसांकली
४०	३	तखिण	ततखिण
	१३	असराप	सराप
४९	६-७ वचे		(५)
५२	९	पांडय	ग्वाडय
५४	६	अन्तरिधु	अन्तरिखधु
५८	११	भेद	'भेद
५९	४	मूटा	सूंता
६३	९	दसइ	दसइ सिरि
७०	२	कणगार	कणगार

पृष्ठ	पङ्क्ति	शुद्ध	अशुद्ध
७१	२०	शद्द	शब्द
७८	१४	जग	जगत
७९	१८	ताणि	ताणी
८१	११	तो	तूं
९६	६	अंस	ङस
	९	नवगा	नवमा
	१८	अंस	हस
९८	१०	दाव	दाघु
१००	१२	वाती	वीती
	१७	अणयोलि	अणवोलिउ
		रहूं	कहूं
१०१	१०	मोहिनी	मोहनी
	२०	टेहड टेहड	दटइ, हडटइ
१०२	३	वावर घालइ	चाचरि घालइ
	९	रातोराण	राणोराण
	१४	अमरिषु	अमरिसु
		चामरवाल	चागरदाल
	२१	पीरवीर	परिकरि
१०३	२	गाल	गोल
	१२	हलइ मयधांधा	टलइ मयधन्धा
	१३	वांधा	अन्धा
१०४	१०	लाजइ	लीजइ
	२०	धरियां	धरीयइ
१०५	६	यहूनि	पिहूनि
	१३	साहि	आहि

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
	२०	चूयाइ	चूंपइ
		खाडि	खोडि
१०६	४	तउ, वयण,	वयणतउ,
	१२	चडायी	चडावी
	२०	मािउ	मानिउ
१०७	१४	मागइ	मारइ
	२१	जग	जग
१०८	३	रात्वेवे तइ	रले चडइ ते
	६	हाय	हथि
	७	जनमय	जनमन
		ए	रा
	१४	प्रवृत्ति	सुमति
	१८	धन	ध्यानधज
१०९	६	मयदण्डी	न दण्डि
	१६	मू+उ	मूंकिउ
११०	४	मनि	मन
		पयइ	पयट्ठ
	१८	तें	ते
१११	४	मयरचित्त	मयरचित्त
११२	६	निहु	विहु
	१७	मुहता !	मुहता ! एक अजी मनि राइ.
	१८	माइ ते	माइ मोह
११४	१६	मे–माइ	मोरमाई
११६	३	मेगि मम्मावि	मेगि मम्मावि

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११७	८	विहसन्ति	हरसन्ति
	११	बहि नर	बहिनर
११८	३	सिरि सिरक	सिरिरक्त
	४	वर जिम वीडउ करि	जिम वीणी दीहर
११९	१३	गडमडइ	गडयडइ
	१९	साहण	साहस
१२०	२	थिनकइ	थानकि
	८	करी	घरुं
	१०	वापडी	चापडो
	१५	रसि लीण	रसलीण
१२१	२	कुमर राइ	राइकुमर
	१२	हकार	कार
	१५	गूगलिउ	धूंधलिउ
	२१	पूरति	पूरी
१२२	१४	काल हंस ।	राआइसु
१२३	२१	थोक	छोकु
१२४	८	दोहल्ऊ	दलोहल्उ
	१५	तउ पण	पण
		घड्या	घड्ठ्या
	१६	ते	मह
		भीडय	भडन्ति
		नट्या	नट्ठ्या
	२१	बेडी	दूंनटी
१२५	२	पगभरि	रही पगभरि
		रही गदद	भड मन्दइ

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
	८	चलिउ	वलिउ
	२०-२१वचे		सारसी
१२६	५	रि–साल	चउसाल
	१२	धारेणि	धोराणि
१२७	४	छकार	बुकार
	१३	कुमरि सुम किय	कुमर! सु सुहकर
१२८	४	वचन	वदन
१२९	२	थात न	वात न
	५	याड –कं	थोट सिऊ
	१७	हू वकऊ	वडूडऊं
	१९	पइन	पइन्न
१३०	१५	जोअणहारी	जोअणहारि
१३१	७	ससारनउ थिर	संसार अथिर
		दम्म	उदम्म
	२०	चारि	चाचरि
१३२	७	शृङ्गारिक	शृङ्गारिउ
	१३	परण	परण्या
१३३	३	पुरनी वूठी	नगरि विठूठी
	१३	मडउ	मरडउ
	१६	पसाउउ	पवाडउ
१३४	६	दमदन्तु मडु	दमदन्तउ
	९	बाहु बाहुबलि	बाहुबली बलि
	१०	आदरिउ	अगलउ
	२१	लगइ चलइ	लगि फिरी वलि

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३५	७	होइ–	होइ न रेसु
	८	जसवाँहि	मणिरहि
	९	कीधा	कीधी
	१५	मूकइ	न मूकइ
		दडवडी	घडी
१३६	७	क्षोभ	थोभ
	१४	दिट्ठु	दिट्ठु
१३७	१२	नीपाइ	नीपाई
	१८	लीधी	लाधी
१३८	६	साहणि	साहणि
	८	जिम	धुरि
	१२	घसइ	घसइ
		बसइ	बरवइ
		छलछलइ	खलभलइ
	१५	लहलहकइ	लहु लहकइ
	१६	नन्दा	नाद
१३९	५	अणन्त	अनंत।
	६	गुघट	सु गंठ
	१२	मिलिम	भोडिम
	१४	पमितिदय	पमिन्दिय
१४०	१	महाभाडि	महाभडि
	२	तणइ जे	अणंतु जि
	७	करपकलकणय	करपंकुलकणय

प्राचीन गुर्जर काव्य.

पन्दरमूं शतक.

रणमल्लछन्द.

आर्या ।

शंकरगुरुगणनाथान् नत्वा वरवीरछन्दआरम्भे ।
कवयेऽहं रणमल्लं प्रतिमल्लं यवनभूपस्य ॥ १ ॥
छत्राधिपमदहर्ता कर्ता कदनस्य समरकर्तॄणाम् ।
वीरजयश्रीधर्ता रणमल्लो जयति भूभर्ता ॥ २ ॥
यमसदनं प्रति नीताः सीतारमणेन दानवाः स्फीताः ।
अधुना कमधजमल्लो रणमल्लस्तत्र तान् नयति ॥ ३ ॥
हम्मीरेण त्वरितं चरितं सुरताणफोजसंहरणम् ।
कुरुत इदानीमेको वरवीरस्त्वेव रणमल्लः ॥ ४ ॥
दिल्लीपतिपरिभूतौ तद् दृष्टो दृश्यते च बाहुबलम् ।
शकशल्ये रणमल्ले यमतुल्ये तिमिरलिङ्गे भ्रत् ॥ ५ ॥

---

१ मथाळूं रसवृत्त छंद छे. नाथं; युवन. २ कदन सबलकर्तानाम्. ३ शीता; दानवा स्फीता. ४ हमेरेण; संहरणे; कुरुते तदिदानीं [illegible] ५ परिहरणे तद्रूपे; स[illegible] लि[illegible] –

कति कारयन्ति भूपा भुवि यूपान् केऽपि वापिकाः कूपान् ।
एको ननु पुनरास्ते रणमल्लो घोरिकारयिता ॥ ६ ॥
यदि न भवति रणमल्लः प्रतिमल्लः पादशाहकटकानाम् ।
विक्रीयन्ते धगडैर्बाजारे गुर्जरा भूपाः ॥ ७ ॥
सुभटशतैरति विकटं पट्टुकरटिघटाभिरुत्कटं कटकम् ।
तत्नटयति रणमल्लो रणभुवि का वैरिणां गणना ॥ ८ ॥
अनवरतं भरतरसं सरसैः सह रतरसं समं स्त्रीभिः ।
वीररसं सह वीरैर्विलसयत्येष रणमल्लः ॥ ९ ॥
खलु कमलागुरुहरणं परवरणं समरडम्बरारम्भे ।
शिवशिव रमणल्लोऽयं शकदलमदमर्दनो जयति ॥१०॥

चुप्पई.

-सतिरि सहस साहणवइसाणह गई अरदास पासि सुरताणह.
कणगरु कोस लीध हरि हिन्दू तु रणमल्ल इक नह बन्दू. ११
पुण फुरमाण आण सुरताणी नहि रणमल्ल गणइ रणताणी.
जिम हम्मीर वीर सिम्भरवइ, तिम कमधज्ज मूछ मुहि मुरवइ. १२

---

६ कूपाः ८ सुभतटैरति; पट्टुघा. ९ सुरतरसं समरसं समं; विलसन् स एक एव. १०–११ आ बेनी वच्चे श्लोक १ नरवीर पाठांतरथी ११ आंक चडावी करीने आप्यो छे. ११ मथाळूं चुप्पई नथी आप्यूं. साहण वै; कणगरु किद्ध सिद्ध सह हिन्दू; तू. १२ पण; गणिइ; हिम्मीर; संमरविह; कमधज मुछ; मरवे.

चम्चालि चडी चिहू दिसि चम्पइ. थरयर थाणदार उरि कम्पइ.
कमधज करि धरि लोह लहकइ, विबहर बुम्ब अ बुम्ब ह बंकइ. १३
निशि खम्भाइच नयर उध्रकइ; धूंधलि धूंस पडइ धूलकइ;
ग्रहि पुकार पढइं पट्टणतालि, 'रे रणमल्लघाडि!' जव सम्भलि. १४
मुहुडासिया, मीर रहमाणी, दाम हराम करइ सुरताणी
माल हलाल खानखिजमत्ती तु रणमल्ल इक नह खित्ती. १५
इक रणमल्ल राय सुणि आलमि रहिउ हुई हैराण खुदालम.
हेलां लाख बन्द बुल्लावि; लखि फुरमाण खान चल्लावि. १६
हय गय कटक थाट उल्लट्टिय; दहु दिसि वेस असेस पल्लट्टिय.
निहुटी वाटि काढगढ घल्लि; करु पराण रैयत–रणमल्लि. १७
ईडर भणी भींछ सुरताणी फूंफूंकार फिरइ रहमाणी.
मूंगल मेच्छ मुहइ मच्छर भरि हसि हुसियार हुया हलहल करि. १८

सारसी.

फूँगराइ फूं फूं फार फारक फोज फरि फुरमाणिया.
हुङ्कार करकडि; करइ शरझडि करवि करि कम्माणियां.

---

१३ चडि; चाउद्दिशि चंपि; थिरथिर; अरि; कम्पिइ; लहकिइ बियहरि बूंब बूंब बहकिइ. १४ खम्भनयर उध्रकिइ धुंधलि धुंस पडीइ धुलकिइ; पोकार पडिइ; तव. १५ मुहुडासीया मीर रजाणी; करिइ; खजमत्ती तू; ए नह. १६ आलम हैं हराण रहिय ग्वूंदालम; हेलउ; बोलावीय; चल्लाविय. १७ दहुं; नहुटि; घल्लिउ रैयति करु पराण रणमल्लह. १८ सुरताणी य; फिरिय रहमाणी य; मुंगल मुह मिछ मछर; हूसीयार हौया.

फुक्कारि मीर मलिक मुफरद मूछ मरडी मच्छरइ.
संचरइ शकसुरताण साहण साहसी सवि सङ्गरइ. १९

दुहु.

साहस वसि सुरताणदळ समुहरि जिम चमकन्त,
तिम रणमल्लह रोस वसि मूछ सिहरि फुरकन्त. २०

सारसी.

फुरफुरहि ळम्ब अ लम्ब अम्बरि नेजनिकर निरन्तरं,
भरभरहि भेरि भयङ्क भूंकर मरलि भूरि भयङ्करं,
दडदडी दडदडकारि दटवड देसि दिसि दिसि दडवडइ.
संचरइ शकसुरताण साहण साहसी सवि सङ्गरइ. २१

दुहु.

साहस वसि सुरताणदल समुहरि जिम दमकन्त,
तिम तिम ईडरसिहर वरि ढोल गहिर दमकन्त. २२

१९ 'छन्द' एटलुंज मथाळुं छे; नाम नथी आप्युं. फुंगराय फुर फुर; करि फुरमाणीआ; थाण करि जडि; कंमाणया; फुक्कारि; मलिक; मुरडीय, मच्छरे; संवरीय; साहण सेन थिव शिव संगरे. २० मथाळुं आर्या आप्युं छे. समहरि जेम; तिम तिम रणमल; मुंछ. २१ मथाळे छंदनुं नाम आप्युं नथी. निरन्तरा;. भरभरहिं; भयङ्कप; दडवडी य दडवडकारि देस दवडिय दह दिसो; संचरि य; सेन शिव शिव संगरे. २२ मथाळुं आर्या आप्यू छे. समहरि; गमकन्ति; सिहरतलि; गुहिर डमकन्ति.

सारसी.

दमदमइ ढमढमकार ढूंकर ढोल ढोली जङ्गिया.
सुर करहि रणसरणाइ समुहरि सरस रासि समरङ्गिया.
कलकलहि फाहल कोडि. कलरवि कुमल कायर थरथरइ.
संचरइ शकसुरताण साहण साहसी सवि सङ्करइ. २३

दुहा.

जिम जिम लसकर उध्रसइ करी नि बुम्बुङ्कार,
तिम तिम रणमल रोस भरि तोलइ तरल तुखार. २४

सारसी.

तुक्खार तार ततार तेजी तरल तिक्ख तुरङ्गमा,
पक्खरिय पक्खर, पवनपङ्खीपसरि पसरि निरुप्पमा.
असवार आसुरअस अस लीइ असाणिअसुहड ईडरइ.
संचरइ शकसुरताण साहण साहसी मवि सङ्करइ. २५

चुप्पई.

'हल ऐयार' हकारवि बुल्लइ; भुजबलि सबल मुट्ठि दल घल्लइ.
गयुं खान खुद नगतलि चल्लिअ;शकदल दहु दिसि दिद्ध डहल्लिअ. २६

---

२३ मथाळे छंदनूं नाम नथी. ढमढमीय कार, ढीली जङ्गया; करहिं समहरि ससर सर सरणाईया; कलकलिहिं; कलिरव कमल कायर धूजए; सेन शिव शिव सङ्करे. २४ उध्रसिइ करि; रणमल्ल; सोल्हिइ. २५ मथाळे छंदनूं नाम नर्थी. तोपार; तेजी य; तिरस पप्परीय पप्पर पंपि पसरीय पवन, अस लीय; ईडरे; सेन शिव शिव सङ्करे. २६ मथाळूं चुपई आप्यूं नथी. बुल्हिइ; मुंठि, पद गतलि चल्लिय; दहुं दिशि, डहल्लीय.

मलिक मन्त्र मज्झिम निशि किद्धउ. तव हेजब फुरमाण स दिद्धउ.
ईडरगढि अस्सइ नाडि चाल्लिउ, जइ रणमल्ल पासि इम बुल्लिउ.२७
'सिरि फुरमाण धरवि सुरताणी धर दय हाल माल दीवाणी.
अगर गराम दास सवि छोडिअ करि चाकरी खान कर जोडिअ.'२८
रा असि सरिसु बाहु उब्भारिअ बुट्टइ हठि हेजब हक्कारिअ,
'मुझ सिरकमल मेच्छपय लग्गइ, तु गयणङ्गणि भाण न उग्गइ.२९

सिंहविलोकित.

जा अम्बरपुडतलि तरणि रमइ, ता कमधजकन्न न धगड नमइ.
वरि वडवानल तण झाल शमइ; पुण मेच्छ न आपूं चास किमइ.३०
पुण रणरसजाण जरद्द जडी गुण सींगणि खञ्ची खन्ति चडी
छत्तीस कुलह बल करिसु घणू पय मग्गिसु रा हम्मीर तणूं.३१
दल दारण दफ्फरखान जयी मिडं भग्गउ अग्गइ खग्गरयि.
हिव पट्टणपद्धरि धरिसु पयं, नइ विनडिसु सविरिसहस सयं ३२
मिइ सङ्गरि समसुद्दीन नडी पडिभग्गउ अङ्गोअङ्गि भिडी.
जव मण्डिसि मुझ रणमल्ल समं तव देखिसि ल्सकरि सरिसु जमं.३३

---

२७ अन हीं चाडि चल्लु, जई, बुल्लउ. २८ सुरताणी य, दयदय, दीवाणी य, सव छोडिय, किरि, जोडि य. २९ 'रा' नथी, असि दर, उब्भारी य, गोल्हई, हेजब्ब हकारी य, सिरि, लग्गिइ, उग्गिइ. ३० मथाळे छंदनूं नाम आप्यूं नथी. तरणि तपिइ, नमिइ, वडवानल झाल झमिइ, तु मेछ, किमिइ ३१ सींगिणि पञ्चिम, छत्रीस, तणू मग्गिसि रा हम्मीरपणू. ३२ दफरखान जवे, भग्गु अग्गि खग्गरवे, हव, धरिसु वलं, सहस दलं. ३३ सम्मसदीन, पडिभग्गु, भडी, दाखिसि ल्सकर.

मम मोडि म मण्डि मलिक्क घणूं. हूं समरि विडारण मेच्छ तणु.
जव ऊठिसि हठि हक्कन्त रणि, तव न गणूं त्रण सुरताण तणि.३४
वल वुल्लि म. वल्लि मलिक्क कहि, "म म वरणि सिमुणासिम द्रूतमुहि.
जव चम्पिसि ईडरसिहरतलं, तव पेक्खिसि मुह रणमल्लवलं."३५
हय हेडवि सवि हेजब्ब गया. वहि वल्लि मलिक्क सलाम किया.
'हिव करिसु धरा रणमल्लमयं, इम बोल्लइ हठि तोलन्त हयं'३६
नरकेसरि ईडरसिहरधणी'. जव हेजबमुहि फरियाद सुणी,
तव चमकि दमक्कि मलिक्क करी धासि धाडिइ धायउ धूंस धरी.३७

छुप्पई.

पसरइ पण्डर वेस भयङ्कर. नर पोकार हि कराहि निरन्तर.
हयमर वेगि गया ईडरतलि. सवि रणमल्ल करइ साहसि हुलि.३८
बिबहर भरि बुम्बारव वज्जइ; जलहर जिम सींगणिगुण गज्जइ.
बहु वलकाक करइ बाहुब्बल. धन्वलि धगड धरइ धरणी तलि.३९
'अरियणदारण ! दनि--अभयकर ! पण्डर वेस थया निब्भय धर.
बम्भण बाल बन्दि बहु किज्जइ. धा कमधज्ज ! धार करि लिज्जइ.४०

३४ मेछ; रणे; सुरता। मणे. ३५ वोलि; कहिइ; मन वरलिसि चरविसि वहुत मुहिइ. पेषिसि मू. ३६ गइ वल्लि; बोलिइ. ३७ सुरकेसरि; सिहर तणी; फरीआद; दमक्कि मल्लिकि; धसी; धायु धूंस. ३८ मथाळूं छुप्पई आप्यूं नथी. पसरीय; पोकार करिहिं; करिइ सहसा हुलि. ३९ वज्जिइ; गज्जिइ; धरिइ बाहुब्बलि; धूंधडि; धरिइ. ४० अरीयणदारण; थया नि भयकर; किज्जिइ; धार धर लिज्जिइ.

पञ्चचामर.

रउद्द सद्द आसमुद्द साहसिक सूरइ
कठोर थोर घोर छोर पारसिक पूरइ.
अद्दङ्ग गाह अङ्ग गाहि गाळि वाळ किज्जइ.
विरोहि जोइ तेह नेहि मेच्छ लोडि लिज्जइ '. ४१

दुहु.

जिम जिम कमधज चीतवइ असपति सरिसु विवाद,
तिम तिम योगिनि रहिररासि रत्ता करइ प्रसाद. ४२

सारसी.

परसादि वसि दिगन्त योगिनि जयजयारव अम्बरि.
उच्छकि छकि दियन्त सिक्खा वीर धीर धरा वरि.
'दुद्दम्भ मेच्छ विरोह रोह अ खोहि गाहवि किज्जइ.
तूं हट्टि उट्ठवणीइ हट्ठवि. लोह हत्थइ लिज्जइ. ' ४३

दुहु.

जिम जिम लसकर लोह रसि लोडइ, शासन लक्खि
ईडरवइ चडसइ चडइ तिम तिम समरि कडाकि. ४४

---

४१ मथाळे छदनूं नाम आप्यूं नथी. रवद्द, साहसीक सूरया, कठोर चोर छोर घोर पारसी॰ पूरया, अद्दङ्ग गाम गाह गेय वाल गाल किज्जए, ताह तेह मेछ, लिज्जए. ४२ मथाळूं आप्यूं नथी. चीतविइ, करिइ ४३ मथाळूं आप्यूं नथी. प्रसाद लक्ष दियन्ति, उंछकि उट्ठि, सिखा वीर धार धरातले, दुट्ठ मिछ छोहि जोर पोहि गाग्र किज्जए, नि हट्ठि उट्ठि रच्छ उडण लोह हत्थि लिज्जए. ४४ मथाळूं आर्या छे. लोडि, लठि, ईडरवै चडसिइ चडिइ, कडडि.

पञ्चचामर.

कडक्कि भूंछ भींछ मेच्छ मल्ल मोलि मुग्गरि;
चमक्कि चल्लि रण्णमल्ल भल्ल फेरि सङ्गरि:
घमक्कि धार छोडि धान छण्डि धाडि--धग्गडा.
पडक्कि वाटि पक्कडन्त मारि मीर मक्कडा. ४५

चुप्पई.

'हयखुरतलरेणइ रवि छाहिउ. समुहर भरि ईडरवइ आइउ!'
खान खवास खेलि वलि धायु. ईडर अडर दुग्गतल गाह्यु. ४६
दमदमकार ददाम दमक्कइ. ढमढम ढमढम ढोल ढमक्कइ.
तरवर तरवर वेस पहट्टइ, तरतर तुरक पडइ तलहट्टिइ. ४७
विसर विरङ्ग बङ्कग्व पसरइ. रहि रहिमान मनन्तरि समरइ.
गह गुज्जार--निमाज कराणी हयमर फोज फिरइ सुरताणी. ४८
सात्तिरि सहस साहिय सिल्लार ह दहु दिसि फिरवी करि पुक्कार ह.
मुहडसद्द सम्भालिवि रउद्द ह धसमस धूंस करइ मफरद्द ह. ४९

ढांढको.

मदभींभल सेरबचा बङ्गाली मूंगल महा मलिक्क
| ईडर अड्डर सिक्खरि रणथम्भरि तलि तरवरइ तुरक्क;

---

४५ मथाळे छंदनूं नाम नथी. कडछि मुंछ मोलि मल्ल मेछ भींछ मोगरे; राणमल्ल; सङ्गरे; धडक्कि धार धाडि छोडि धान छण्डि धूंबडा; पवित्त चित्त पंकडन्तिं; मकडा. ४६ मथाळूं चुप्पई नथी आप्यूं. ताल॰ रोणि; तव समहर; आसु; तालि आयु. ४७ दमाम दमक्कीय; ढमक्कीय; पहट्टीय; पडिइ तलहट्टीय. ४८ पसरी य; समरीय; कराणी य; फिरिइ सुरताणी य. ४९ सहीय; करिइ; रवद्द; हसमस हास करिद्द.

हक्कारवि विकट वहकटि चल्लइ; बुल्लइ बिरद बहुत्त.
सुरताण सरिस सिल्लार सिपाही सवि मिलि समरि पुहुत्त.५०

तलहट्टिइ मेल्लवि तरल तुरक्की तार ततार तुरङ्ग
उल्लट्टिअ असपति असणिअ वायरि सायरवेलि तरङ्ग.
' हल, हल ' 'बिगरी, बिगरी' बोलन्ति अ नीरलहरि छिल्लन्त.
रणकन्दलि कलह करइ; किलवायण कायर नर रेलन्त.५१

हेपारवि हयमर हसमसि; खुररवि असाणि किपाण कसन्त.
उद्धसवि कसाकसि, असि तरतर बिसि. घसमसि घसाणि घसन्त.
भूमण्डलि भड कमधज्ज भडोहडि भुजबलि भिडस भिडन्त
रणमल्ल रणाकुल राणि रोसारुण मुणसचाणि तुवरन्त.५२

उल्लालवि झालवि झुज्झकमाल ह लथबथि लोथि लडन्त.
धारुक्ट धारि धगड धर धसमसि धसमसि धुव्व पडन्त,
कमधज्ज उदयगिरिमण्डण सविता झलमल मल्ल मडन्त
धुरि धासि धसि धुंस धरइ धगडायणि. धर वरि रुण्ड रलन्त.५३

---

५० मथाळूं नथी. सीरचचा वङ्गाली य; मुहा; अडरशिहर; तरवरीय; हाकारवि विक्क; चेल्लिय बुल्लवि; सरिसु सवाही य. ५१ तलट्टिय भेलयि; तुरक्की य; ऊलट्टिय; वायर; तरन्त; बोलन्तीय; कन्दल; करिइ. ५२ खुररवि हसमिसि घसणि; नरनर वसि; भड रणमल्ल; भिढस मिलन्त; तरवन्त. ५३ झुझ; लथिवधि; पडन्त, धार; धसमिसि धसमिसि; कमधज; झलहल; मिडन्त; धरि धरि धरि धुंस धरी धगडायण.

चुप्पई.

वर कमधज्ज वीर शासन छलि कित्ति फुरइ नवखण्डि धरातलि.
'असपति सरिसु इक ईडरवइ राणि रणमल्ल मूछ मुहि मुरवइ'.९४
असुर अभङ्ग-अङ्ग ईडरतलि असपतिदल कोलाहल सम्भलि
बम्भण वाल सुरहि अबला छलि हठि ऊठिउ कमधज्ज भुजाबलि'.९५
पक्खरि पण्डर भिडस भिडन्तु धसि धगडायण धूंस धरन्तु
हणहणि मुणासिम भणइ असंभम,ताल मिलिउ हरि जम्भ तणउ जिम.९६
दुज्जणरुक्ख-इक्कदावानल हयमर हठि हेडवि कोलाहलि
रणवाउलु रणमल्ल रणाकुल असिरसि गाह करइ गोरीदलि.९७

दुमिला.

गोरीदल गाहवि दिट्ठ दहुद्दिसि गढि मढि गिरिगह्वरि गडियं.
हणहणि हक्कन्तउ हुं हुं हय हय हुङ्कारवि हयमरि चडियं,
धडहडतउ धडि कमधज्ज धरातलि धसि धगडायण धूंस धरइ.
ईडरवइ पण्डर वेस सरिसु रणि रामायण रणमल्ल करइ. ९८
रोमञ्चिय रणरासि, रादि डरावण, रहि रहि बल बोल्लन्त बलि,
पक्खर वर पुट्ठि पवंगम पट्ठिय, पुहुतउ पह पतसाहदलि,

९४ मथाळूं नथी आप्यूं. वर हमीर वीर; फुरिइ; पण्ड; ईडरवि;मुंछ; निरपिइ. ९५ अवल सुरही; कमधज. ९६ पपर; धुंस; हणि हणि भणि मुणस; मिल्यु हरि बम्भ तणु. ९७ दुज्जणभुज्जइक, कोलाहल; करिइ.
९८ मथाळूं आप्यूं नथी. दहदिसि गढि गुहि गडिम् गहियं; हणि हणि हकन्तु; धडदडतु धडि हमीर धुंसि धरिइ, करिइ.

असि मारवि रुम्ब रणायरि रगडिअ भञ्जइ धगड महा मडया.
रणमल रणङ्गणि मोडि मिळन्ता मेच्छायण मूंगल मिडिया. ५९

मुहु उच्छलि मूछ मुहुच्छवि कच्छवि भूमइ भूंछ समुच्छलिया.
टल्लालवि खग्ग करग्गि निरम्मल गणइ तिणइ दलअग्गलआ.
मल्लय करि लसकरि लोहि छवच्छव छण्ट करइ छत्तीस छलि.
रणमल्ल रणङ्गणि राउत विलसइ रवितालि ग्विचिय रोसवलि. ६०

सीचाणउ रा कमधज्ज निरम्मल झडपइ चडवड धगडचिडा.
मडहड करि सत्तिरिसहस भडक्कइ, कम्मधजभुज भहुवाय झडा.
खत्तिचणि ग्वय करि खक्खर खूंदिअ खान मान खण्डन्त हुया.
रणमल्ल भयङ्कर वीरविडारण टोडरमाळि टोडर जडिया. ६१

चुप्पइ.

सोनगिरउ कन्हड सिम्भरवइ वेढि करी गज्जणवइ असुरइ
दहु दिसि दुज्जणदल दावट्टिअ सोमनाथ वड हत्थइ झट्टिय. ६२

---

५९ रोमाञ्चीय रणरसि रव रढि रावण, बोल्न्त बले, पप्परव, पुहुतु; दले, मरिरवि; रणायर रगडय मञ्जिद, महाल्डया; मेछायण मोगर. ६० मुंछउलि मुछ मुहु छवि चडवि भुंटरि मुंड समुछल्या, गणि तमिङ्गल थग्गल्या, ल्य ल्य करि, लोह छवछव छञ्छट करिइ छत्तीस छले, विलसिइ; रोसवसे. ६१ सीचाणु, झडपिद, मडक्कीय, ग्वत्तणि हयमर फाररवि धूंदीय पानमान धूंदन्ति हया, विडारीय; टोडरमल्ल. ६२ मथाळूं चुप्पई नथी आप्यूं. सोनगिरौ सन्तल सम्भरधिइ, वेगि करि असुरह गज्जणविइ, दह दिशि, दावट्टी. चोथूं चरण छे नहि.

आदर करि शंकर थिर थप्पिय अचल राज चहुआण समप्पिय.
असपति सरिसु साहसिम बकइ; सुरटमान रणमल्ल न मुकइ.६३
मरडी मूछ वडी मुहि मण्डइ मेच्छ मरिसु, गह गाह न छण्डइ.
कसवइ काल्ह किवाण करड्डिय जा रणमल्ल रोसवसि उड्डिय.६४
पण्डर डरइ समरि बाहुब्बलि. खग्ग, ताल जिम, तोलइ करतलि.
दुज्जउदण्ड दुदम्भ दुहण्डइ, इक अनेकि मलिक्क विहण्डइ.६५

भुजङ्गप्रयात.

जि बुम्भा अ बुम्बा उलक्कि सलक्कि,जि बक्कि बहक्कि,लहक्कि चमक्कि,
जि चङ्गि तुरङ्गि तरङ्गि चडन्ता, रणम्मल्ल दिट्ठेण दीनं दडन्ता. ६६
जि मुद्दा–समुद्दा, सदा रुद्दसद्दा, जि बुम्भाल चुम्भाल बङ्गाल बन्दा,
जि झुज्झार तुक्खार कम्माल मुक्कि, रणम्मल्ल दिट्ठेण ते ठाम चुक्कि.६७
जि रुक्का मलिक्का बलक्काक पाडि, जि जुद्धा मुडुद्धा सनद्धा भजाडि
तिभू आखडी आ नडी दण्ड किज्जि,रणम्मल्ल दिट्ठि मुहि घास लिज्जि.

६३ राज कमधज्ज, बुकिइ, मूकइ. ६४ गुराडि मुछ मुह थडि चडि मण्डीय, मेछ सरिसु दोह नवि छण्डिइ, कसने, करडीय, जोड,उडीय. ६५ डरहि, ग्वड्ग ताल तोलिइ यम हाथलि, उड्डण्डिभ दूझ दुदम्भ दुहण्डिइ, एक अनेक,विहण्डिइ. ६६ जि बुम्बे अ लम्बे उलके सलिक्किइ; जि बक्के बहके लहिके चमुक्किइ, जि चङ्गे तुरङ्गे तरङ्गे चढन्ता, रण मल्ल, मुडन्ता ६७ यमुद्दा, चम्बाल, झुझार तुषार, मुक्किइ, ठाम चुक्किइ. ६८ रका, कि बुठमा पहला सनद्धा विभाडिइ, ति आपण्डि भूदण्डि दहु पडि किज्जिइ, रणमल्ल दिट्टे मुहे घास घल्लिइ.

जि बक्का अरक्का शरक्का वहन्ता, जि सव्वा सगव्वा झरव्वा सहन्ता,
जि झुज्झार उज्जार हज्जार चाल्हि रणमल्ल दिट्ठि मुहि घास घल्हि.६९

छप्पय.

'हिव किर भाल्लपहारि धार गढ गाहवि छण्डूं.
कसबे—कडी किवाणपट्टि किलवायण खण्डूं.
भुजबलि मल्लइ भिडिअ भरी भय भल्लयाचि पइसूं.
धरी अ खम्भाइच्च असुरासिरि चम्पवि बइसूं.
प्रहऊगमि पट्टणि पट्ट करि धगद्धायण धन्धलि धरूं.'
ईडरवइ रा रणमल्ल कहि, ' इक्कछत्त रवितलि करूं '. ७०

---

६९ बुक्का; जि सद्दा सगद्दा जरद्दा सहन्ता; जि झुझार उझार हझार चल्हिइ; रणमल्ल दिट्ठे मुहे. ७० मथाळूं कवित्त छे. पहरि; गाहिवि; करि किलवाण हूं; मल्लि भिडीय; भय भरि मल्लयाच्चि पिसूं; धरूं अ लम्भा छत्र; विसूं; प्रहि; धूंधलि; ईडरवै; एकछत्र.

वसंतविलास.

पहिलूं सरसति अरचीसूं (रचीसुं वसन्तविलास),
वीण धरइ करि दाहिण, वाहण हंसलु जास. १
पहु तीय तिउणीं हिव रति वरति; पहुती वसन्त.
दह दिसि पसरइ परिमल;निरमल थ्या नभ अन्त. २
सीत गिऊं हिमवन्ति; वसन्ति लिउ अवतार.
आलि मकरन्दि मुरिआ; कुहुरिआ सवि सहकार. ३
मयण तणा गुण गहगह्या, महमह्या महु महकार.
त्रिभुवनि जयजयकार पुकारइ पिक अपारि. ४
पद्मिनी परिमल बहिकइ. लहिकइ मलयसमीर.
मयण जिहां परिपन्थी, पन्थी धाइ अधीर. ५
मानिनी जन मन क्षोभन शोभन वाउला वाइ.
निधुवन केलि पामी कामी अङ्गि सुहाइ. ६
स्मर मुनिनां मन भेदइं, छेदइं मानिनी मान,
कामी मनि आनन्दइ, कन्दइ पथिक पराण. ७
वनि विरच्या कदलीहर दीहर मण्डप माल;
तलीआ तोरण सुन्दर; चंन्दरवा छि विशाल. ८
खेलन वावि मुसाली; (जाली गूख विश्राम).
मृगमदपूरि कपूरहिं पूरिहिं जल अभिराम. ९

रङ्गभूमि सजकारी, झारी कुङ्कुम घोल,
सोवनसांकळ सांधी वांधी चम्पकदोल. १०
तिहां विलसइं सवि कामुक जामक हृदयाचि रङ्गि
कामु जिस्या अलवेसर वेस रचइ वर अङ्गि. ११
अभिनव पिरि शिणगारी नारी रमइ विसेसि.
चन्दनभरी कचोली चोली मण्डन रेनि. १२
नव यौवन अभिराम ति रामति करइं सुरङ्गि,
स्वर्गि जिस्यां सुर भासुर रासु रमइं वर अङ्गि. १३
जयराणि रोचइ तीवन - जीवन चणूं सुवान.
वामभवनि तिहां विलसइं जलनइ अलिअल आन. १४
कामुक जन मन जीवन ती वन नगर सुरङ्गु.
राजु करइ अभङ्गिहि रङ्गिहिं राउ अनङ्गु. १५
अलि जन वसइं अनन्त. वसन्त तिहां परधानु.
तरुभर वासनिकेतन. केतन किंशुकसंतान. १६
चन्दन वन अवगाही, नाही सरवर नीरि,
मन्द-सुरभि-हिम-लक्षण दक्षिण वाइ समीर. १७
वनि विरचइ श्री नन्दन चन्दन चन्द्रसु मीत.
रति प्रीति स्यूं सोहइ, मोहइ त्रिभुवन चीत. १८
गरुउ मदन महीपति दीपति सहिणु न जाइ.
फरइ नवी नवी जुगति; जुगति प्रताप न माइ. १९

कुसुम तणू करि धणह रे, गुण ह रे भमरमाल;
लख लाघवि नवि चूकइ; मूकइ सर सुकुमाल. २०
मयणजि वयणनिरोपइ लोपइ कोइ न आण.
मानिनी जन मन हाकइ; ताकइ किशलकृपाण. २१
इम देखी रिद्धि कामनी कामिनी किंनरकण्ठि
नेहगहेली मानिनी माननी मूकइ गण्ठि. २२
कोइलि आबुलाडाली आली! करइ निनाद.
'काम तणु करि आइसु' आ इसु पाडइ साद. २३
जं भणु थिर न पयोहर, मोहरचु भग मार,
मानरचु किस्या कारणि? तारुण दीह बिच्यारि. २४
नाहु निशी छइ गामटि, सामटि मय थय जाणि.
मयण महा भड न सही अ सहीं! असु हणइ बाणि. २५
ईण परि कोइलि कूजइ; पूंजइ जुवति मणोर.
विधुर वियोगिनी धूजइ. कूजइ मयण किशोर. २६
विणसइ, जिम जिम विहसइ, सहसइ मानिनी मान.
यौवन मदिरहि ऊदम्प ती दम्पती थाइ जु वानि. २७
जे किम इभगति चालइ, सालइ विरहिणी अङ्ग;
बालइ विरहकराली बाली ते बहु भङ्ग. २८
घूमइ मधुप सकेसर केसर मुकुल असङ्ख,
चालति रतिपति सूरइं पूरइं सुभट कि शङ्ख. २९

बउलविलूघला महुअर बहु अ रचइं झणकार;
मयणर हइआणन्दण वन्दण करइ कइ वार. ३०
चांपुला तरुअरनी कली नीकली सोवनवान.
मार मार्गे उद्दीपक दीपक जीअ समान. ३१
कामिनी बांधइ तरकस तरकस पाडल फूल.
मांहि रच्यां कि रे केसर के शरनिकर समूल. ३२
आवुलि मांजर लागी लागी मधुकरमाल,
मूकइ हिइ के विरहिअ विरहि अ धूमविराल. ३३
केसू कली अति वांकुडी आंकुडी मयणची जाणि
विरहिणीनां ईण कालि ज कालिज काढइ ताणि. ३४
वीर सुभट कुसुमायुध. आयुध साल अशोक.
किदाल जिस्यां असि. झबकइ झबकइं विरहिणी लोक. ३५
पथिक भयंकर केतु कि केतकीदल सुकुमार,
विरहिअ हिअअ विदारण दारण करवतधार. ३६
इम देखी वन संपइ कम्पइ विरहिणी साथ;
आंसूइ नयण निशां मरइ, सांभरइ जिम नाथ. ३७
विरहि कराली बाली फाली, चोली, चङ्ग
विषय गिणइ त्रिण तोलइ; बोलइ ते बहु भङ्ग. ३८
रहि, रहि, तोरी. जो, अटी कोइली! स्यूं बहु साथि ?
नाहु अजी नवि आवइ. भावइ मूं न विलास. ३९

दाला मावावस्फा३ ना ॥५६ निगंथोवमथा दट्ठसोरवबाहिसिद्दामियावच्छणादायात
पुरतः ऊना पिंदंस्द्दाशाता वन्मयावछस.। मरथ किंकरवालिपाणिकमालभुव्वावाग।
मांदसमतनीवातनजगामयत्तनऊानाजाना निवेकश्वन ॥५७॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु॥



दिसुकहुरवांवासिरवामिवलीसरण॥मातनवांचनिहूपमहूपमपांमुडीबउ॥

ધર્મનવિધામ

વાયસને આવકાર આપતી વિરહિણી ॥

૧ ૪

हार ते भार मूं उर वरि. सइरि! शृङ्गार अङ्गार.
चींत हरइ नवि चन्दन. चन्द नहि मनोहार. ४०

सखि! दीह दूख अनीठउं. दीठउं गमइ न चीर.
भोजन आज उत्रीठउं. मीठउं सदइ न नीर. ४१

सकल कला तूं निशाकर! शा कर सइरि संताप?
अबला म मारि कलङ्की! शङ्की हुवइ पापु. ४२

भमरला! छाडि न पाखल? खाखल थ्यां अम्ह सइर.
चांदुला! सइर संतापण! आपण तां नहि वइर. ४३

बहिनू! रहि नहि मनमथ मन मथतु मुह अराति;
अङ्ग अनोपम शोपइ; पोपइ वइराणि राति. ४४

कहि सहि! मुझ प्रिय वातडी. रातडी किमहि न जाइ.
दोहिलउ मकरकेतन. चेत नहीं मुझ ठाइ. ४५

सखी! मुझ फरकइ जाघडी; तावडी विलगइ आज.
दूख सवे हवं वामीसू, पामीसूं प्रिय तणूं राज. ४६

विरह सहू ते भागलु कागलु करल्उ पेखि.
वायमना गुण वरणइ, अरण इ ताजि विशेखि. ४७

धन धन, वायस, तूं सर. मूं सरवस तूं देसु.
भोजनि कूर करां बलु. आंचलु जरहु लहेसु. ४८

देसु कपूरची वासि रे, वासि रे सर एउ,
सोवन चांच निरुपम, रूपम पाखडी बेउ. ४९

शकुन विचारि संभाविआ आविआ तिहां वाल्म्भ.
निशि भरि निज प्रिय निरखी हरखी दिइ परिरम्भ. ९०
रङ्गि रमइ अति हरषी सरसी निज भरतारि.
दीसइ ते गयगमणी नमणी कुचयुगभारि. ९१
कामिनी नाहुलां जीं सुख, तीं मुख कहण न जाइ.
पामी अनइ प्रिय संगम अङ्ग मनोहर थाइ. ९२
खूप भर्या शिर केतकि सेत किया शिणगार,
मिलिआ मण्डन सारी नारी स्यूं भरतार. ९३
रासु रमइ अबला वनि, लावनिमय जसु रङ्ग.
सहज सलील मदालस आं लसइ तीह अङ्ग. ९४
वीणि भणूं कि भुजङ्गम, जङ्गम मदन कृपाण.
करि कुसुमायुध प्रगटी भ्रगुटी धणह समान. ९५
कानि किन्नरकउ वीजनु? वीजनु चंद कि भालि?
गछ हसइ सकलङ्क ह मयङ्कह बिम्ब विशाल. ९६
मुख आगलि तूं मलिन रे; नलिन रे! जई जलि गाहि.
दन्तह बीज दिखाडि म, दाडिम, जित सुखमाहिं. ९७
नीलमणि कुण्डल कानि ह वानि हसइ हरिआल.
पञ्चम आलवइ कण्ठइ, कण्ठइ मुक्तामाल. ९८
सीमन्त सींदुरि बुरिउ, पूरिउ मोती सुरङ्ग.
राखडी जडी माणिकि आणि कि फणिमाणि चङ्ग. ९९

दरिणदरावइंडौतीश्रमानीत्रनांगरिज्ञालारंगिनिहूपमत्रधरास्त्रधरक्षिशापर

वालाादश्रधरं [illegible]

पदमछा वदनक्षादवतनाादश्र ॥ श्रीसारदायेनमः ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ ॥

भमहि कि मनमथ धणहि अ; गुण हिअडइ वर हार;
बाण कडाखला सोहइ; मोहइ सयल संसार. ६०
पल्लव पेशल पाणि कि जाणि कुसुम सुकुमाल.
सरल तरल भुजदण्ड कि दण्ड कमलिनी नाल. ६१
हरिण हरावइ जोती. मोतीनां शिर जाल.
रङ्गि निरुपम अधर जि; अधर जिस्यां परवाल. ६२
तिलकुसुमोपम नाक रे. लांक रे लीजइ मूठि.
किशलय कोमल पाणि रे जाणि रे चोल मजीठ. ६३
बाहुलता अति सुकुमल कमल मृणाल समान.
जींण्इ कटि पञ्चानन. आनन नहि उपमान. ६४
कुच बिहु अमीकलसा, पाणि थापणि तणी अनङ्ग.
तींहुं राखणहार रे हारु रे धवल भुअङ्गु. ६५
नमण न करइं पयोधर योध रतिह संग्रामि;
कञ्चुक त्यजइं संनाहु रे नाहु रे महामड पामि. ६६
उन्नत कुच कि हिमशिखरी. शिखरि तेह पईठ
हार नीझरण; मांहि रे नाहु रे झीलतु दीठ. ६७
रूपमई विधि तां घडी जांघडी, उपम न जाइ.
करि कङ्कण, पाइ नेउर, केउर बाहडीआंइ. ६८
अलविहिं लोचन मींचइ, हींचइ हींडोलि एकि.
एकि हणइ प्रिय कमलि रे. रमलि करइ जलि एकि. ६९

एकि रे दिइ ताली ताली छन्दिहिं रास.
एक दिइ उपालम्भ रे वाल्म्भरि सविलास. ७०
मुरकलइ मुख मचकोडइ, मोडइ लवलव अङ्ग,
वानि सुवर्ण वखोडइ, लोडइ नितु नवरङ्ग. ७१
कण्टक संकटि एवडइ केवडइ पइसी भृङ्ग
छयलपणइ गुण माणइ; जाणइ परिमलु चङ्गु. ७२
पाडल कली छइ कूंअली, तूं अलिअल ! म धन्धोलि.
तूं गुणवेद ते सावउ काचउं मही म विरोलि. ७३
वउलसरी मद भींमलु हुं भलु भणि अलि राजु.
संपति विण सुकुमाल ती मालती वीसरु आजु. ७४
पालइ नेहु पुराणु न; जाणु न भलु सखि ! भृङ्गु.
अलग थिकउ गुण विमणइ दमणइ लिइ रसरङ्गि. ७५
वालि विलसिवा विवरानि भंवर निहालइ मागु
आवरिआ इंणि णीगुण णीगुण स्यूं तुझ लागु. ७६
केसू गरव म तूं धरि, मूं शरि भमर वईठु,
(मालती विरह वहु वहइ) हू हवइ मणी पईठु. ७७
सखि ! अलि चरण न चांपइ चांपइ; लिइ नवि गन्ध.
रूडइ दोहग लागइ आगइ इमु निबन्धु. ७८
नितु नितु वरीअइ मरुअउ; विरूअउ गध कुरङ्गि.
भमर ! भमी भमी रीण उ लीणउ तस रस रङ्गि. ७९

भमर भन्मतउ गुण करइ अगर अंकोरिउ जे इ
अजी अ तोणइ विरसइ वंस विणासइ सोइ. ८०
मूरख ! प्रेम सुहाती जाति गई म चींति.
विहसी अलि ! नवमाली. बालीइ मांडि प्रीति. ८१
एकि थडि (सरिखी ' बउल बिउ लता; नवि भेउ.
भमर ! विचार किशा (कारें) पामर. विलसि स्यूं बेउ. ८२
मकरन्दि माती पद्मिनी पद्मिनी जिम नव नेहि
अवसरि लेवु रसु मूवइ, चूवइ भमरलु देहि. ८३
भमर ! पलास करां बला; आंबला आंबली छांडि.
कुचफलि फलित कि तरुणी करणी सिउ रति माडि. ८४
दमनह गुणि मदमातउ रातउ रूपिहिं भृङ्गु
कुन्द कुसुम रमाडइ; छांडइ चांपुला सङ्ग. ८५
ईण परि नितु प्रिय रञ्जवइ मञ्जु इण ईग ठाइ.
धन धन ते गुणवन्त, वसन्तविलास जे गाइ. ८६



सीताहरण

दुहा

' जय लम्बोदर विघ्नहर ! पहिलूं तुझचूं नाम.
सुर नेत्रीस इ तुझ तवइ; कर्मण करइ प्रणाम. १
सरसति सामिणि ! वीनवूं ; गाइस्यूं तुझ पसाइ.
साचा अक्षर मेलवे. कर्मण लागइ पाइ.' २
संवत पन्नर छव्वीसइ सीताहरण विचार.
कर जोडी कर्मण तवइ, 'अक्षह गिरा आधार.' ३
' देव सवे चलणे नमी. त्रिभुवन थुवी जे माइ.'
कर्मण वीनवइ.'' अह्मे गाऊं अयोध्या राय.' ४
अयोध्या नयर सोहामणूं. रूयडा पोलि-पगार.
वीस सहस विवहारिया; प्रसाद न ल्हइ पार. ५
चूरासी चुहुटा भला. बहुतरि सइं वखार.
वरण अढार तिहा वसइ, अवर न वर संसारि. ६
गूख, गवाख, नइ मालिआ रूअडा; उत्तम ठाम,
दैत्य हणण जहि अवतरिउ रघुवंशि श्रीराम. ७
दशरथ राजा राजिउ. साहण संखि न पार.
नितु नितु उच्छव पेखणा सवि कहिनइ सुखकार. ८
दूख अङ्गूठइ ऊपनू; दशरथ नावइ नींद;
पीड न भाजइ पापिणी, राय करइ आक्रन्द. ९

कौशल्या कर चांपतां. अङ्गूठउ मुखि लेउ,
सुखभरि राजा पूछिया, कइगइनइ वर देउ. १०
'नारि ! गमइ ते मागि जि,' तूठा दशरथ राय.
'कर जोडी नइ वीनवूं, स्वामी ! लागूं पाय. ११
वर वंछित अम्हि मागिउं, अवर नहीं अम्ह काज,
रामचन्द्र वनि मोकलु, भरथ बइसारु राजि.' १२
'किहां रतन, किहां कोइलु ? किहां सरसव, किहां मेरु ?'
राजा सांसा महिं ठर्या. नयणे वूठां नीर. १३
इशां वचन तव सांभली राम गया आवासि.
'तातवचन अम्हि पालिस्यूं, अम्हि आसिउ वनवास. १४
'त्रूटइ जीभ अक्षारडी; कूंअर कहूं किम जाइ ?'
माय ताय मोकलाविआं; ततखिण लागा पाय. १५
'रामचन्द्र वनि सांचरइ' पुहुता नयर मझारि;
जनरखवेटी सामही साथि सीता नारि. १६
लक्ष्मण राजा वीनवइ, 'राम, न मेहेलूं साथ'.
कर जोडी कर्मेण नमइ त्रिहु भुवननु नाथ. १७
नरग जेह नामि छूटीइ. पाप प्रलय सवि थाइ,
नर नारी सहू, सांभलु, वर्णूं अजोध्या राइ. १८
रामकथा जे सांभलइ, तेहनी पुहुचइ आस;
मनुष्यलोक सुख भोगवी ते नर मुक्तिनिवास. १९

पवाडु.

जय लम्बोदर देव दूंदाला ! मोदक देसिं मोटा.
रामचन्द्र नइ सीता गातां अक्षर टाले खोटा. २०
सरसति सामिनि ! करूं वीनती. चरण तुम्हारे लागूं.
शत्रुघन सीखामण देइ ते बुद्धि माता ! मागूं. २१
अयोध्या केरूं राज भलावूं; तातवचन वनि पालूं;
शत्रुघन देइ सीखामण वन्धव पाछां वालु. २२.
पायक परहु साथ न मूकइ सगू सणीजूं लोक;
संतोषी नइ सहू इ वालूं: 'मनि म धरिस्यु शोक.' २३
तिहां थिका राम सांचरिया अनुदिन मारगि धाइ.
सयर तणां आभरण ऊतारइ; वनचारी बेहु थाइ. २४
समरथ प्रधान साथ न मूकइ; वालइ लक्ष्मण वीर.
'तुह्म विहूणा दीह किम जाइ?' बोलइ साहसी धीर. २५
गंगा केरइ तीरइ पुहुतां लक्ष्मण सीता राम.
दीठा रिखि जपतपि बइठा; वेगि करइ प्रणाम. २६
पूर्व कर्म किस्यां ते मीछइ, (हइइ) निहालूं ज्ञानि.
अजोध्या केरूं स्थानक छांडिउं, राम पुहुता रानि. २७

कर्मणो हि प्रधानत्वं किं कुर्वन्तु शुभा ग्रहाः ।
वसिष्ठदत्तलग्नोऽपि रामः प्रव्रजितो वने ॥

उदयति यदि भानुः पश्चिमायां दिशायां
प्रचलति यदि मेरुः शीततां याति वह्निः ।

विकसति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायां
तदपि चलति नैषा भाविनी कर्मरेखा ॥

पधाडु.

'एक दुःख तुह्म'आंगइ सालइ; माय विजोग्या तात.'
'हूं जाणूं; म पूछेसि लक्ष्मण ! वलता कहिस्यूं वात.' २८
रिखि तणां वचन सांभली नइ चित्रकोटि जई पुहुता;
गुहु भील देखाडइ थानक, आगइ राजा रहिता. २९

भरथेश्वर तिहां नगरि पुहुता. अजोध्या दीठी झांखी.
'एक महिलाइ कूडूं बोलिऊं.' 'पगि धरी नइ नांखी ३०
मारुं वइर इ; मात न जाणूं,' 'माइ! काम सिऊं कीधूं ?
रामचन्द्र नइ लक्ष्मण ऊभां ' भरथ राज सिऊं दीधूं ?' ३१
कौशल्याइ भरत बोलाविउ, 'पाटि अजोध्या ठइस्यु.
पिता तुह्मारानूं उर फाटूं. तुह्मे दुःख म वहिस्युं. -३२
शत्रुघन नइ जई संभालु. पिता करेवूं काज.
बाधव बिह्नै वनि पधार्या तुह्म भलावी राज.' ३३
'छांडइ छुरी य खर जिम पाखर; हंस बगह सरसाइ.
एक जई नइ छीलरि नाहइ बीजउ गंग अवगाहि; ३४
तारा शशी सूर जिम अंतर; तिम भरथेसर राम.
बिह्नि सहोदर आणूं पाछा; वन माहि सोधूं ठाम.' ३५
लेई सेन अनइ सांचरिउं; साथि लीधी माता.
नान्हां मोटां मारग पूछइ, 'रामचन्द्र क्यहूं जाता ?' ३६

मिलिआ ऋषि, मनोरथ पूगा, शुद्धि सवे तिहां जाणी.
'रामचन्द्र नइ लक्ष्मण बांधव, श्रीजी सीता राणी
प्राण करी नइ पाऊं याल्यां. भोजन तणी समाइ.
सील देई नइ सहू इ मूतू. भरथ ! सांभलि भाइ !
मागी मान अनइ सांचरिआ. याजित्र याजति कोडि
सेन सहको रासूं पार्टूं. आपण आवइ खोडि.'
जाणिऊं काहिनां कटक विछूटां; दल उपराठि होइ.
रामचन्द्रि लक्ष्मण बोलाविउ; वृक्षि चडी नइ जोइ. ।
दीठु भरतनइ आवंतु, 'कांइ कीजि काज !
वयर भणी वइगइ मोकलिउ. करइ निकंटक राज.' ५
सीता भाइ, 'हिवइ सी विमासण ? आपणु कांइ अपराध ?
दसरथ राइ देसुड दीधु; एहवु आयस लाध. ४
छाडइ हाथी, छांडइ घोडा, आयुध नइ हथियार.
आडे वींटे धोतीए आवइ उतारी शणगार. ४
पद्म सरिसु आवी मिलिउः 'रामचन्द्र ! अवधारु.
तात तुह्मारानूं उर फाटूं ! तिहां लगइ पाउ धारु. ४

दुहा.

'कर्मि पाट पटन्तर्या, कर्मि हुआ वनवास.
कर्म विहूणा मानवी. ते किम पूहचइ आस ? ४५
आगिम कोइ म चिंतवु; मन चिंतव्यूं न होइ.
बांधा कर्म न छूटीइ. लक्ष्मण ! तूं अ म रोइ.' ४६

राम रोअन्तां रोयूं वन; रोयां पर्वत शृंग;
रोयां सावजडां वनि, अनइ कुरङ्गी कुरङ्ग. ४७
रुदन करन्ता वारिया, भरथ वोलाविया धीर.
'तिहां जई नइ सारीइ, जिहां हुइ निर्मल नीर' ४८
'अन्न विण कहु किम कीजीइइ ? अन्न विण कहु किम पिंड?
ईंगोरे ईंगोरडां !' 'जोई नइ सारु कुंड'. ४९
भरथेश्वर घणूं प्रीछविउ. 'तूं बान्धव अजोध्या जाइ.
राजवचन सांभळूं तुझे. दुःख म धरिस्युं भाइ!' ५०
'तुझि आरोगु पानडे! अम्हि आगि लिस्यूं त्राट?
स्वामी पूढइ साथरइ! हूं किम सूऊं खाट?' ५१
भरथेश्वर रोइ घणूं; ऊछङ्गि लि श्रीराम.
'नगर भली परि राखिज्यो, रूडां करिज्यो काम.' ५२
अनेक बोल अछइ घणा, कहितु न लहू पार.
वन्धव पाछा वालियां सेन सहित परिवार. ५३

पधाडु.

चित्रकोट थिकू करिऊं पियाणूं; पंचवटी वनि गइया;
उत्तम स्थानक दीठूं, लक्ष्मण तिहां मढी करी रहिया. ५४
करी मढी तिहां राम पुढेवा बीजी सीता राणी.
नालिकेर नइ केलां राइणां लक्ष्मण आपइ आणी. ५५
कावडि कांधि करी नइ चालिउ वनफल लि ऊतारी.
एक नारि तिहां ऊभी देखइ. जाणिऊं, ए धूतारी. ५६

वन माहि वार घणेरे लागि. बान्धव जोइ वाट.
रामचन्द्रि सोगठा अणाव्यां, आगलि माडिउ पाट. ५७
सीता राम रमइ बिहू पासि, लक्ष्मण वनफल ल्यावइ.
रावण तणी सहोदर वाली नितु नितु आइइ आवइ. ५८
सूपनखा समरथ नर देखी जाणि, 'हूं वर वरीसइ.'
वली वली लक्ष्मण वालइ राखसी, 'अह्म बान्धव साभलीसइ.' ५९
ढिइ फेरा. हसइ घण सीता. रोसि चडी तिहा गाढि
सूपनखा रूप धरिउं. लक्ष्मण उठी नासिका वाढि. ६०
करी आक्रन्द रोई घण वाली. राक्षस जई जणाव्या.
कोपि चड्या खर दूषर बोलइ, 'कवण पुरुष त्रि आव्या?' ६१
धूस पडिउ नइ सहू इ धायूं 'भला पाहि भलेरा
आज सहू को अह्मनइ सेवइ. ए छइ कुण अनेरा?' ६२
माडिऊ झूझ अनइ वन मीथरि राम सरीसा मडिया.
हेलामात्र हण्या सवि दाणव, चोद सहस रणि पडिया. ६३
कोपि चडी नइ कामिनी चाली, लङ्क नयर माहि टलनी.
'खर दूखर बि बान्धव हणिया!' राव करइ वळवलती. ६४
'विण अपराधइ हूं अ वनरडी. सार करु अह्मारी.
पञ्चवटी माहि पुरुष बि आव्या, एक अपूरव नारी.' ६५
'सूपनखा! तु बहेन अह्मारी, वालूं वयर वन सोधी.
स्वर्ग मृत्यु पातालि पइसइ, तिहा थिका लिऊ रोधी.' ६६
सेतोम्बी नइ मन्दिरि मोकली, जोवा जण चह्लाविउ.
जोया आश्रम, मढी, नइ थानक. राक्षस लंका आविउ. ६७

करी य कूडी बुद्धि वीसासइ मामु मिरीयच तेडइ.
शिर धूणी नइ काह्यो दशशिर, 'लङ्क नयर को फेडइ?' ६८
'ग्रह मइं बांध्या; पवन सारवइ; चण्डी करइ तलारूं;
सुर तेत्रीस इ मुझ घरि सेवइ, करइ काम कइ मारूं.' ६९
मिरीयच भणइ, 'मरण नवि बीहीइं अन्धकूपतु कहीइ;
हरिहाथि जु मरण पामीइ मुक्तिमार्ग फल लहीइ. ७०
जाणे तूं कांइ भूलु, दशशिर! खर दूखर कुणि जीता?
परणी सीत; सारङ्ग पूरिउं: जमला तुह्मे हूंता.' ७१
'पुरुषारथ म बोलिसि, मामा! वली वली तुझ वारूं.
'मांटीपणि अजोध्या मूकी! कहिउं करु अह्मारूं' ७२
कलिइं शशी सूर किम ऊगइ? सीतहरणि सांचरिया.
करी वेस नइ रूप पालटिउं, सागर विहि ऊतरिया. ७३
मिरीयच मृग थई सांचरिउ, रावण हूउ कमाली.
सोव्रणरूप धरूं तिहां मृगलइ. रुहाडि मांडइ थाली. ७४
कांइ विपरीत विनाण जाणेज्यो, कइ दाणव कांइ दोखी,
पान्हीइं बुद्धि नारिनइ; आगइ रही सोगठां नांखी. ७५
भणइ राम, 'मांडी सी रुहाडि? ए राक्षस धूतारु.
पूरुं खांति, सीवाडूं कांचली, तम कारणि मृग मारूं.' ७६

रामो हेममृगं न वेत्ति नहुषो याने युनक्ति द्विजान्
विप्रस्यापि सवत्सधेनुहरणे जाता मतिश्चार्जुने।
द्यूते भ्रातृचतुष्टयं शशिमुखीं धर्मात्मजो दत्तवान्
प्रायः सत्पुरुषोऽप्यनर्थसमये बुद्ध्या परित्यज्यते॥

न निर्मितः कैरपि दृष्टपूर्वो
न या श्रुतो हेममयः कुरङ्गः ।
तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य
विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ॥

यस्य मन्दोदरी भार्या काम्या रूपवती सती ।
तेन सीता समाहृत्य रामः शत्रुरुपार्जितः ॥

पवाडु.

नारी तणु नेह मनि आणी पूरी बाण पाउ धार्यो.
'सूपनखा मइं आगइ नाणी तहींइ दैत्य विडार्यो. ७७
ए वडूं वयर वसूं वन भीतरि; वली विभ्रम मनि लाया.
लक्ष्मण ! सीता रूडि राखिज्यो.' रामचन्द्र वनि धाया. ७८
खिण खिण अन्तरि, खिण बोलावइ; इणी परि मृगलु चालइ.
हणिउ दाणव दीठउ 'धाए बान्धव !' तिहा इम बोलइ, ७९
इस्या वचन सीताइ साभल्या; 'रामचन्द्र वनि अहिया!
तुह्म बान्धव जु हुउ जीवतु, अह्म पाखलि स्यू रहिया ? ८०
हूं तु अबला सिरजी; स्वामिकाज ! कवण मइ थाइ ?
सगु सहोदर तूह जि, बान्धव! राम भणी वनि धाइ.' ८१
'अनेक दैत्य आवन्तइ चाली, रामचन्द्र जु भाजइ,
'सूर न उगइ, पवन न फरूकइ, सायरसलिल न गाजइ ! ८२
वेद न वर्तइ, ध्रू हु सलकइ, गगपूर नवि चालइ.
रामनइ काणि कुहु को गाजइ ?' लक्ष्मण ईण परि बोलइ. ८३

प्रीछवणूं म करिसिउ, लक्ष्मण ! भलां पगोपइ भाइ.
वेगि करी बन्धव बोलावइ; जाणिऊं, आवसि धाइ. ' ८४
आण देई लक्ष्मण सांचरिया; सीतवचनि वनि गइया.
भरडा रूपि थइगु कमाली; मढी आगलि तां रहिया. ८५
आंगणि जोतां अतिथ ज आव्यु, जाण्यु कोइ सन्यासी.
थाल भरी नइ केलां रायणां तनइ नारि विमासी. ८६
कापडी भणइ, 'हूं लीह न लोपूं; राम आण इहां दीधी.'
मांडी पाटली. पाय परठिउ. ततखिण सीता लीधी. ८७
वेगि दैत्य पवन परि चालइ. वदनि विलापइ बाली.
जटायु पङ्खीइ मारग ग्रहिया. ' मांटी थाउ कमाली ! ८८
हरी नारि नवि हूं यूं जावा जनरख राजकुमारी. '
हाथि घाई नइ दाणव जाइ. पुहुतु लङ्क मझारि. ८९
भणइ मंदोवरी, 'सुणि हो, स्वामी ! साठि सहस तुझ राणी.
रामतणी घरघरणी भणीइ, तुझे सीत का आणी ? ' ९०
' गिउ कैलास, कमाट खटूकिऊं तिहा भेद मइं लाधु.
हरिहाथि जु मरण मागवा मइं अपराध ए कीधु. ' ९१
वल्या राम, तिहां लक्ष्मण मिलिया, 'मढी छाडी का आव्या?'
'तुझ आगलि स्यूं कहीइ, रामजी, सीतइ बोल जे बोल्या?' ९२
धुरि-लगइ तां पडिउ वरांसुः ' कहिऊं नारिनुं कीधुं;
कूड करी नइ दाणव आव्या; मृगलइ पूरूं दीधुं. ' ९३

वेगि करी बे बान्धव आव्या; मढी बारि तिहां रहिया;
'सीत न देखीइ! सुणि, हो लक्ष्मण! सूपनखा छेतरिया!' ९४
नाणिक, 'हासूं करिउ जानकी,'. ठाम सवे ढण्ढुलिया.
'गयु मीत दाणव को लेई.' धरणि राम तिहा ढलिया. ९५
विलखाइ नइ नयण विठाइ. आज पूवा (?) ए लाधूं.
हर्यो बे (?) शङ्खापुर हणिउ सीतहरण इम साधूं. ९६
दशरथनन्दन राय अयोध्या धरणि पडी आलेटइ.
मातङ्गनइ घरि नीर ज आणिऊ हरिचन्द्र; कर्म न छूटइ. ९७
'स्वर्गलोक हूं सोधूं, स्वामी, मृत्युलोक, पायाल;
हरी सति किहा जाइ दाणव? जल माहि बाधू जाल. ९८
षन माहि सावजि बाघि विणासी, तु स्वामी! नवि जाणू.
छती सीत जु श्रवणि साभलूं, त्रिहू भुवनथी आणूं. ९९
हिरण्याक्ष नइ हिरण्यकशिपु दाणव देवि विदार्या.
अन्तरीख पुहिराज पुरोषत्तम सेवक बिन्हि सिद्धार्या. १००
ईणी परि दाणव बहुरि भमाडूं, त्रिहू भुवनथा टालूं.'
करी कोप नइ लक्ष्मण बोलइ, 'स्वामी, सीत हू वालू.' १०१
राम रोइ; लक्ष्मण वूझवइ, 'गहिला राम! म रोइ.
गई सीत आपणि वालिस्यू लीसोटूं मुख धोइ. १०२
रोयन्ता नवि छूटु, राघव! ज पडइ तं सहीइ.
कहिनइ दोस म देस्यु, स्वामी! कर्म आपणां कहीइ. १०३

दूहु

किहां चन्दन किहां मिलियागरी, किहां सायर, किहां नीर!
जिम जिम पडइ अवत्थडी, तिम तिम सहइ शरीर

पवाडु

बाहार वात पडसइ, पुरुषोत्तम, अनेक रा सांभलिसइ,
"एक नारि रामइ न रखाणी!" सहूको काचडा करिसइ. १०४
भीडि भडइ भड जीपी गाजइ, सबल जोध तूं कहीइ.
वेगि करी नइ पाग चलावु. सूनइ मढि स्यूं रहीइ? १०५
पूर्वपुरुषि, पुराण सांभलूं, गंग स्वर्ग थिकी आणी;
बइठा थई नइ मुख पखालु, स्वामी! ऊधारु, पाणी.' १०६
ऊठिआ राम वीरना बोलइ; 'सीत न देखूं बाली.
हरी नारि!' मेहेलइ नीसासा; हाथ घसइ; दि ताली. १०७
'पाछा जइ मुख स्यूं दाखवीइ? वात हूइ ता साची.
एक हाणि नइ बीजूं विगोणू! टोले मिलसइ चाची.' १०८
परसखी नइ पाग चलावइ; प्रीति आपणी पालइ.
मारगि जई नइ ऊभा रहिआ. च्यारि दिशि निहालइ. १०९
दक्षिण दिशि देव संचरइ बेहू सहोदर भाइ;
सीत तणां तिहां आभरण दीठा; रामचन्द्र गया धाइ. ११०
'कङ्कण कुण्डल हार बहिरखा, लक्ष्मण! जूउ अङ्गूठी.'
'हूं माता भणी चलणे लागूं; बीजी परि नवि दीठी.' १११

राम भणइ, 'अहिनाण ऊलखीइ सीत तणां ए साचां.
वन मांहि राक्षस दाणव जोजो, काम म करिसिउ काचा.' ११२

दीठु पङ्खी मुखि लोहीआलु; जाणिऊं सीत विणासी.
वेगि करी नइ बाण पूरिऊं; जाणीऊं, जासइ नासी. ११३

देखी बाण पङ्खी 'म म' बोलिउ; सीत संदेसु कहिउ;
रामचन्द्रनइ कहइ, 'पारधी रावण हरी नइ गइउ.' ११४

आवी नइ तिहा पङ्खी पूछिउ. 'जटाउ ! तुह्म जीवाडूं.
चोर जे कहिउ रावण राणु, ते जुगतिइ पाडूं.' ११५

'पाइ लागी नइ करूं वीनती, स्वामी, मुगति हूं मागू.
दाणव सरिसा युद्ध करन्तां प्राण अह्मारु भागु'. ११६

रखिमुखि पर्वत मारग पूछइ वाणर केरा ठाम.
वेगि करी नइ नीर अणावू; तरस्या हूआ श्रीराम. ११७

करि कचोलूं लक्ष्मण लीधूं; नीझर जाई जोइ.
एक पुरुष तिहां आडु सूतु, स प्रवाहि तिहां रोइ. ११८

दुःख देखी नइ लक्ष्मण पूछइ, 'कांइ पुरुष ! तूं पडिउ ?'
'राज्यां ग्राम ग्रास नइ नारी, तेह सरीसु भटिउ.' ११९

वली विमासी लक्ष्मण बोलइ, 'पूछूं नाम तुह्मारूं.
एह वातनु सिउ आमलु ! दोहिलूं न छइ अह्मारूं.' १२०

'दीठा पाखइ बोल म बोलु. स्वामी ते, सपराणु.
कर भीतरि खट माम चांपिउ जेहनु रावण राणु.' १२१

'वयरी सगळा वसि करावूं. थानक पाणि दाखु;
अह्म बांधवनइ जई वीनवूं. वात हिया मांहि राखूं'. १२२

भरी कचोळूं लक्ष्मण पुहुतु; 'रामचन्द्र! अवधारु.
एक पुरुष छइ पर्वत उपरि, तिहां लगइ पाउधारुं. १२३

आगइ आपणि वात सांभली, "रविमुखि पर्वति जाजो—
मित्राचार ज एह सरीसु तिहां जई नइ करेजो".' १२४

'वृक्षतलि बइठा वात विमासइ बिहू सहोदर भाइ,'
इस्यां वचन सुग्रीवइ सांभल्यां; ततखिण आव्यु धाई. १२५

हरख वदनि, हरि साहमा ऊठ्या, अङ्गि आलिङ्गन दीधूं.
'पाइ लागी नइ करूं वीनती. स्वामी! काज अह्म सीधूं. १२६

अठसठि तीरथ मइं अवगाह्यां, रामचन्द्र जु मिलिया;
किष्किन्धा तणूं राज पामिऊं; मन मनोरथ फलिया.' १२७

नाम प्रमाणइं सहू इ पूछिऊं. तिहां मिली सगाइ.
'रामचन्द्र नइ लक्ष्मण बान्धव, तिम त्रीजु तूं भाइ. १२८

मारुं वालि; मनोरथ पूरूं. आज वाच मइं दीधी.
वेगि करी नइ सुद्धि अणावु, सीता कुणहि लीधी?' १२९

'कर जोडी नइ करूं वीनती, स्वामी कोप म करिस्यु.
तुह्म आगलि वरतूं नवि बोलूं. ए छइ अनेरु पुरिस. १३०

राणा एणि सहू रणि भागा, दाणव दैत्य न छीपइ.
सप्त ताड इक बाणइ वेधइ, ते ज वालि रणि जीपइ.' १३१

वालि तणा पुरुपारथ बोल्या; भला पवाडा कीधा.
करी कोप कोदण्ड पूरिऊ; सप्त ताड तिहां वींधा. १३२
आणान्दिउ एणि परि बोलइ, 'आज भेद मइं लाधु,
वालि राजा जे दान देयन्तां वामन रूपि बांधु.' १३३
सुग्रीवइं संग्राम ज मांडिउ. झूझ नहीं कहीं लेखइ.
बेहू भड तिहां बाथि आव्या. राम सरीखा देखइ. १३४
प्राण करी नइ पाछा कीधाः 'स्वामी! करु कां सांसु?'
'अन्तर विण आयुध किम मेहलूं? प्राणि पडिउ वरांसु.' १३५
शङ्खाहूली माल पहिरणइ, वली आव्यु रणि चाली.
अङ्गदि जई नइ वालि वीनव्युः—'किम्हि इ मनावु आली' १३६
वालि बोलइ वचन, 'साभलु, ए सिउ सी अ सगाई?
राज तणी तुह्मि पइरी न प्रीछु. न गणइ बान्धव भाइ.' १३७
तारा बोलइ, 'सुणि, हो स्वामी! जीता सहू सीमाडा.
रामचन्द्र सखायति आव्या, जेणइ दाणव ताडचा.' १३८
वालि भणन्ता, 'पडिउ वरांसु? जोजो कयूं अह्मारू.
किष्किन्धा तणूं राज भोगवु. फेडूं साल तह्मारूं. १३९
भणती तारा 'गर्व न कीजइ. गर्वि हुइ विणासु.
मोटा सरिसूं वयर न कीजइ. कहूंतु कीजइ नासु?' १४०
'अलीक वचन म बोलिसि, बाली! तांत अह्मारउ लाजइ.
सूरापणइ सूर ते मांटी, जे रणि साहमु गाजइ. १४१

सुर नर पन्नग सहू जाणइ, अङ्गद ! जूउ विमासी.
आगइ अनेक पवाडा कीधा. कहि, किम जईइ नासी ? १४२
भुवितालि राजाराण कहीजइ, ते मइं हारि मनाणा.
कर भीतरि खट मास चांपिउ लङ्का रावण राणा. १४३
दुन्दुमि सरिखा दैत्य विडार्या. कां मन आणु न, वाली ?
अनेक दाणव दूरि भमाड्या; लीधा देस उदाली. १४४
सिरज्या कोइ न छूटइ तारा ! करम करइ ते थाइ. '
अङ्गदनइ सीखामण देई वालि अखाडइ जाइ. १४५
गङ्ग तरेवूं देखु (?) नारी ! रामचन्द्र पाउधार्या.
जीन्योस तु वली जस वाधीसइ, नहींतरि दुस्तर तार्या. १४६
तारा अङ्गद विहि वारता समरथ करइ सजाई;
अखाडइ चाली नइ आव्या विन्हि सहोदर भाइ. १४७
वलि चड्यां तिहां थाइ बाकरी; पाहाड पडछन्दि गाजइ,
बिन्हे भड तिहां बाथइ आव्या; कुणइ कोइ न भाजइ. १४८
हुइ संग्राम. सहोदर झूझइ. सुर नर पन्नग मिलिया.
रामचन्द्र तिहां ऊभा देखइ. सूर तणा रथ खलिया. १४९
वाजइ पाटू, ढीक, मूकडी सीसि; सन्ध वछूटइ;
प्राणि चड्या तिहां ढोट ज मेहलइ; कोट सांकला त्रूटइ. १५०
आगइ चाली अनइ सपराणु तालि तालि तिहां चडतु.
लक्ष्मण जई नइ राम वीनव्या, ' कोइ न दीसइ पडतु. १५१

पूरूं बाण. वालि बोलाविउ. सर सांघी तिहां हणिउ,
रामचन्द्रनूं नाम लेयन्तां पर्वतनी परि ढलिउ. १९२

नखिण तारा अङ्गद आव्यां. 'आम वालि ! स्यूं कीधूं ?
वार विच्चारइ मइ तूं वार्युं. वयरी पूरु दींधुं !' १९३

तारा बोलइ. 'सुणि हो रामजी ! हणिउ वालि शूं काम ?
जुइतु राखतु एह जीवतु. साभलि एहनां काम. १९४

राणु रावण ईगइ चापिउ कर भीतरि खट मास.
आप सनारथ तइ जु करिउ, कहि शी राखी आश ? १९५

अन्यानी तुह्मि आगइ हूआ ! सापि लीधी नारि.
मूरख वन्यत्र तुह्म हूट जे मेहेलिउ सीहदुआरि. १९६

अन सिरजी संसार किही मृग सोनन काया कीधी ?
दाणवि आवी तुह्मे भोलव्या, माहा सती सीता लीधी. १९७

आगइ तुह्मे दूखभरि हूआ; किम दिउं असराप ?
दशरथ कुलि जु तुह्म अवतरिया, अन्याइ न बांहु, बाप. १९८

मर्म तुह्मारा हूं कहूं रामजी ? तुह्मि म धरासिउ रोस.
दशरथ राइ श्रवण मारिउ. ते कहु केहा दोसि ? १९९

वामनरूपि तुह्मि अवतरिया, वेद भण्या मुखि च्यारि;
बलि राजा जु तुह्मे पूछिउ, 'कवण अछइ घरबार ? १६०

शानि विप्र आविउ अनइ बलि सरिसूं स्यूं काम ?'
सत्तर सामी ऊडवु कही 'मागूं मढीली ठाम.' १६१

वलि राजा मनि चींतवी बोलि, 'विप्र ! गमइ ते मागि.'
उदक लेई हरि चालिउ तेतलि बलि चांपिउ पागि ! १६२
कहु, देव ! तुह्मि. कुण वरांसिउ ? मनि कीधु विश्वास,
भोलवी तइ राजा बलि छलिउ ! वडवानलि कीधु वास ! १६३
अयोध्या स्थानक, राम ! तुह्मारूं. वालिइं कांइ विणासिउ ?
सबल भणी सुग्रीव करि साहिउ ! हवि किसी कथा कहेसिउ ?१६४
'जोउ,' भणन्ती तारा, 'रामनी गिहिलु ! माहारा स्वामी.
करि धरी ए कटक ऊतारत, सीत अणावत साहामी. १६५
जे नासि ते काम स्यूं करिसइ ? न जोयूं हृदय विमासी.
माहारा पियुनी फूंकइ फाटइ; नितु नितु जातु नासी.' १६६
वालि भणइः–'मनोरथ पूगा. हरिहाथ अङ्गि लागा.
स्वामी मिल्या मंत्री कर्मणचु. गर्भवास भय भागा.' १६७
रामचन्द्र नइ अङ्गद मिलिउ, सीस राहिउ सिर नामीः
'वालिइं मरता तुह्म भाळव्या त्रिहू भुवनना स्वामी. १६८
कर जोडी नइ करूं वीनतीः तूं मारइ–तूं तारइ;
रूडइ विरुइ जे नर जपसइ, अन्तकालि उगारइ. १६९
अडसठ तीरथ मइं अवगाह्यां, रामचन्द्र जु दीठा.'
'किष्किन्धानइ पाटि वइसारु.' हरख वदनि; हरि तूठा. १७०
सुग्रीव सरिसूं करी सजाई रामचन्द्र पाउधारइ;
हनमन्तनइ सीखामण देइ. अङ्गद तिलक वधारइ. १७१

आणी पाट आट मणुडाविउ; भोजन मांहि कराव्या;
कर जोडी नइ अङ्गद बोलइ.-' रामचन्द्र भलि आव्या!' १७२
गाम सीम नइ देस देसाउर विहिची नइ सहू आपिऊं.
कुलि, शशी सूर जां लगइ ऊगइ, अचल राज बिहू थापिऊं. १७३
सुग्रीवइ हनमन्त बोलाविउ राम तणि पाइ लागु;
चित्त आणतु सही सीतामण जई नइ बीडूं मागूं; १७४
कर जोडी नइ करइ वीनतीः-' सेवक स्वामी! तुह्मारु.
तेज तुह्मारइ सीत वालिस्यूं. तिहां लगइ पाउधारु.' १७५
सेन मेलिऊं; कटक चलावूं; जांबवन्त तेडावु;
राणा राय मणुडलिक मुछधा, सीतवाहारि सहू आवूं. १७६
बहुतरि कोडि रींछ सखायत जांबवन्तनां चालइ.
छप्पन कोडि सुग्रीव हनमन्ता ते वानर बोलावइ. १७७
बीजां सावज, पार न जाणूं, हनमन्त लेई सांचरिउ.
अङ्गद नइ सुग्रीव सखायत वेगि रथ जोतरिउ. १७८
देस देसाउर आविऊं सहूइ; अनेक रा मांहि मोटा.
पाणीपन्था नइ गङ्गाजल केडइ घोडा छूटा. १७९
सेन मेलिआं; कटक चलाव्यां; खेहइ सूर न सूझइ.
एकइ आमलइ वानर झूझ्या; कहु, काज किम सीजइ? १८०
प्रकृतिः स्वस्वभावस्य न मे मुञ्चति राघव ।
अहं मुञ्चामि प्रकृतिं प्रकृतिर्मां न मुञ्चति ॥

दग्धं दग्धं पुनरपि पुनः काञ्चनं कान्तवर्णं
घृष्टं घृष्टं पुनरपि पुनः चन्दनं चारुगन्धम् ।
छिन्नं छिन्नं पुनरपि पुनः स्वादुदं चेक्षुखण्डं
प्राणान्तेऽपि प्रकृतिविकृतिर्जायते नोत्तमानाम् ॥

पवाडु.

प्रकृति अम्हारी छइ पुरुषोत्तम! मूकन्तां नवि मूकीइ;
अनेक जोध जु आवइ चाली, एकु राणि न चूकीइ. १८१

छप्पउ.

' कहित ऊड्डवि नभ चडूं; कहित शशहर रवि फेडूं;
कहित पइसी पायाल शेष वासिग फणि मोडूं;
कहित स्वर्ग संचरवि इन्द्र इन्द्रासन टालूं;
कहित कपिदल मिलवि कोडि रयणायर रोलूं;
हनमन्त कहइ, ' श्रीराम! सुणि, हूं वानर एतूं करूं,
ऊपाडी लङ्क रावण सहित दक्षिणथी उत्तरि धरूं. १८२

पवाडु.

पञ्चशब्द तिहां वाजित्र वाजइ, शङ्ख, भेर, सरणाई.
डिहिली दोर, पल्हाण्या पोठी, एहवी कटकसजाई. १८३
पायक पूंठि पाछा चालइ, करकटिया नइ भाथी.
वारु सांढि नइ करह पल्हाण्या, उपरि पाखर धाती. १८४
च्यारि सहस्र मांहि हाट मंडाइ, ते साहु जाणीता.
बीजा नाहाना पार न जाणूं; कर्म दुहारूं, सीता. १८५

वरु हुइ ते अङ्गद पूरइ; मोटु हूउ भंडारी.
राणा राय जिमइ भूंजाई; बीजा अन्न अवारि. १८६
बन्दी करइ कवित विचारी; भाट छन्द तिहां बोलइ.
ऊबट वाट गणइ नवि वानर; रातिदिवस दल चालइ. १८७
बार जोअण विस्तार. सांचरइ पुहुरइ हनमन्त वीर.
कर जोडी नइ कर्मण वीनवइ, पुहुता सायर तीर. १८८

अथ सपनगीत.

राग भूपाली.

'एक ज अचरज सही! आ भणूं', बोलइ त्रिजटा बहिन,
' राम लक्ष्मण बिहू जाणूं लङ्का आव्या वानर सेनि;
मइं लाधूं सपनूं, सखी ! ध्रुवपद. १८९
बाधी पाज नीरि तिहां निश्चल; साथि हनमन्त भीड.
विकटरूप दीसइ वानरा; रौद्र घणा मांहि रींछ. मइं० १९०
माता सीता ! जाणूं वानर त्रिकूटि गढि चडिया.
सवा लाख सुत, रावणु राणु, कुंभकर्ण रणि पडिया. मइं० १९१
जाणूं लङ्क विभीषण दीधी; अमर कोडि तिहां मिलिया;
मन्त्री कर्मणनु स्वामि अयोध्या राम सीत लेई वलिया. मइं० १९२

इति सपनगीत

अथ सीताहरणनां धूल.

राग भूपाली.

(१)

सेन मिलियां सवि सायरतीरइ. वीर हनमंत वीनवइ घणूं ए.
'जाएसि लङ्का,सोधिसि सीता. अहिनाण आंपु तुझ तणूं ए.' त्रूटक १९३
अहिनाण लेई नइ सांचरिउ; ततखिण ऊड्युं वीर;
सायर जु ऊलङ्घिउ; पुहुतलु पेलइ तीरि. १९४
वन वाडी तउ जोइयां, जोइयां उत्तम ठाम.
देवी बइठी वृखतलइ राम जपन्ती नाम. १९५
आम्रपल्लव जई चाडिउ; आपिऊं लई अहिनाण.
'कीधां कर्म न छूटीइ; बोलइ वेदपुराण. १९६
सायर कीधउ अन्तरि. स्वामी! न पुहुती आस.
दैव घातक दूबलानइ!' मेहलिउ निश्वास. १९७
वदन करि लेइ कामिनी, नयणि विहि छइ नीर.
ततखिण वानर ऊतर्यु, जई पाय लागु वीर. १९८
'रामलक्ष्मणि मोकल्यु हू. जानकी! तूं जोइ.
कर्मि तुह्मारइ कटक आव्यां. माता! तूं मा रोइ. १९९
क्षुधा लागी अति घणी; भूख भञ्जु आज.'
'पड्यां वनफल भक्षि करज्यो. दुष्ट दाणवराज.' २००
'वचननइ हूं वेगरूं.' आमूल लइ छइ वृक्ष.
माली पाडी बूंबडी आविउ प्रत्यक्ष. २०१

' दल दीठां आवतां, रे सांभलि स्वामी ! भेद.
वैकुण्ठराना तुझ रूठु; जेणइ वाल्या वेद.' २२२
' नारी गिहिली कहण जाणइ ? मनुष्य मोरी चारि.
आज मुझ स्यूं रण मांटइ, कोइ नथी संसारि.' २२३
हनमन्तनी तिहां हाक वागी; लङ्क पडिउ त्रास.
ततखिण धाई त्रिजटा; ' देवि ! पुहुती आस. २२४
तुझ स्वामी आविउ. सायर सही बांधूं नीर.'
राम लक्ष्मण लङ्का आव्या, पाठइ हनमन्त वीर. २२५

(४)

कटक पुहुतां लङ्का मझारि नारी मन्दोवरि वीनवइ ए.
' अङ्गद तेडी आज, राज, सूपु जानकी ए. त्रूटक. २२६
आज सूंपु जानकी; अहंकार मेहलु मान.
रींछ वानर मेलिया ते दाखवइ पराण.' २२७
' स्वर्गि जई रुद्र पूजिउ; आलिऊ अविचल ठाम.
ए जीव सघला वाणि वींधूं रणहिं जीपूं राम.' २२८
' वारतां तूं विप्र थाइ, मनि आणइ रीस.
लोचन निहूइ हूं देखूं, तुझ फूटा वीस ! २२९
अङ्गद आविउ विष्टिनइ मोकल्यु परधान;
जेणइ वालिइ चांपिउ तेहना कुमर दि मान. २३०
आगइ तुझि हर पूज्या. हरि आव्या वरि !
परधान आपु ठगडां; चलावु रूटी पिरि. २३१

नर मोटा पूछइ. विकल केहु राज ?
कुभ पाणी ऊतारइ. सायर लाई लाज.' २३२
'भुवनि त्रिहू हूं जाणिउं; तु बुद्धि न लहइ एहु.
सूर चन्द्र जोतां भला जानकी आपी देऊं !' २३३
वनि भमतां कापडी हरी गयु ते नारि.
रामचन्द्रनां कटक आव्या, पुहुतां लङ्क मझारि. २३४
पकोपिउ रावण राण, कटक आवि लङ्का भणी ए.
पूरी सभा तेडइ प्रधान; राक्षस कोप करी आविया ए. त्रूटक. २३५
राक्षस कोप करी आविया, दाणव मागइ झूझ.
अङ्गद पहिलूं चारिया. 'ए घापडा अबूझ २३६
प्रधानवटइ आविया ! कां मांडउ संग्राम ?
आज पछइ वयर चालइ.' 'साभलि तूं, श्रीराम ! २३७
तात माहारु वालि भणीउ, तेह लागइ खोटि.'
राक्षस रण मांहि रोलिया अङ्गदि जिता कोडि. २३८
सभा ऊभु जई रहिउ. 'लङ्क छण्डु ठाम,
सीत पाछी मोकलु, नइ चलणि लागु राम.' २३९
'आगइ कोपइ धडहडिउ अङ्गद ! बोलइ धाइ.
प्रधान, कहु, किम मारीइ ? तूं वेगि पाछु जाइ.' २४०
विभीषण आवी य मिलिउ; नगर कहिउ भेद;
रामचलणइ जई लागु. 'लङ्क आपूं वेद.' २४१

राक्षस आव्या सवि मिली. बुद्धि मांडी वीर.
फेरी लङ्का लगवी. उल्हवइ लेई नीर. २०
आकलिउ तिहां अङ्ग पखालइ, उल्हवइ शरीर.
रामचन्द्रनि पाय लगु मिली सायर तीर. २०

(२)

आविउ हनमन्त; पूछइ रामः–' किम करी नइ तुम्हे आविया ए!
कहु नइ वृत्तान्त, सीता केणी परि दिन जालवइ ए ?' त्रूटक. २०
' दिवस ईणी परि जालवइ, जम्पइ तुम्हचुं नाम.
जुत आविउ वनि हूं. मेहेलि न ए " श्रीराम ! " २०५
पाय लागी हूं अ वलिउ; मइ दिन माग्या वीस.
" लक्ष्मणनइं वीनवे जई सीता तणी आसीस. २०६
घडी य जाइ वरिस सु. वानर ! म लाउ वार.
रुद्रघरणी चलणि लागूं; मिलावु भरथार." २०७
ईणी परि मेहेल्ही जानकी. सांभलि तुं, श्रीराम !'
' सबल सायर गडगडइ; किम कीजिसइ ए काम ?' २०८
कोपि चडी कोदण्ड पूरिउं रघुवंशी राइ.
पर्वत सघला डोलिया; मृत्युलोक चिहिरु थाइ; २०९
पायालराजा जागिउ; त्रिहू भवनि पडिउ त्रास;
इन्द्र–आसन थरहरइ; खलभलइ जु कैलास. २१०
समुद्र साहमु आविउ. ' सांभलि स्वामी ! वात.
आज अह्मनइ सोसवइ तूं! सगरि कीधा सात !' २११

'सागर ! पाणि नवि सोसवूं; मांहि पाडूं वाट;
दैत्य दाणव मारिसिउं, लङ्का लेसिउं पाट. २१२
जलचर जीव तइं जलि बांध्या मोटा मीन.
पाणी उपरि पाज बांधूं; ऊतारूं सवि सेन.' २१३
पूरिउ पाऊं नवि फरूं; करु मेलावा ठाम.
सागरनूं वयण पालिवा हनमन्त पूछइ राम. २१४

(३)

राम पूछइ, हनमन्त वीर 'नीर ऊलङ्घीसइ किम करी ए?'
भणइ हनमन्त, 'बाधिसि पाज; आज जई परवति चडी ए.त्रूटक.२१५
आज जई परवति चडूं साथि छप्पन कोडि;
सिला आणूं अति घणी. रखे लागइ खोडि.' २१६
'विवाद कीधु आमलइ; कहु, कवण करिसइ काज ?'
हनमन्ति सेना हकारी तनखिण बांधी पाज. २१७
पाज बाधी पाय लागु मच्छरि चडिउ भींछ.
'फोज मण्डु जूजूई नइ सबल टालु रींछ.' २१८
हनमन्त कीधा जूजूआ तहिं मुग्गि काजल लाइ.
सुग्रीव कुङ्कुमि खरडिया. अति घणा अन्तर थाइ. २१९
सेन सायर ऊतरइ; लक्ष्मणु दी छइ मान.
वीर सर्व वोलाविया आपी फोफल पान. २२०
ढोल जांगी दमदमइ; शङ्ख वाजइ भेर;
सात सायर हलहलइ; शिखर त्रूटइ मेर. २२१

राक्षस आव्या सवि मिली. बुद्धि मांडी वीर.
फेरी लङ्का लगवी. उल्हवइ लेई नीर.
आकलिउ तिहां अङ्ग पखालइ, उल्हवइ शरीर.
रामचन्द्रनि पाय लागु मिली सायर तीर.

(२)

आविउ हनमन्त; पूछइ रामः—' किम करी नइ तुह्मे आविया ए
कहु नइ वृत्तान्त, सीता केणी परि दिन जालवइ ए ?' त्रूटक
' दिवस ईणी परि जालवइ, जम्पइ तुह्मचूं नाम.
जुउ आविउ वनि हूं. मेहेलि न ए " श्रीराम !"
पाय लागी हूं अ वलिउ; मइ दिन माग्या वीस.
" लक्ष्मणनइं वीनवे जई सीता तणी आसीस.
घडी य जाइ वरिस सु. वानर ! म लाउ वार.
रुद्रयरणी चलणि लागूं; मिलावु भरथार."
ईणी परि मेहेली जानकी. सांभलि तुं, श्रीराम !'
' सबल सायर गडगडइ; किम कीजिसइ ए काम ?'
कोपि चडी कोदण्ड पूरिउं रघुवंशी राइ.
पर्वत सघला डोलिया; मृत्युलोक विहिरु थाइ;
पायालराजा जागिउ; त्रिहू भवनि पडिउ त्रास;
इन्द्र—आसन थरहरइ; खलभलइ जु कैलास.
समुद्र साहमु आविउ. ' सांभलि स्वामी ! वात.
आज अह्मनइ सोसवइ तूं ! सगरि कीधा सात ! '

'सागर ! पाणि नवि सोसवूं; मांहि पाडूं वाट;
दैत्य दाणव मारिसिउं, लङ्का लेसिउं पाट. २१२
जलचर जीव तइं जलि बांध्या मोटा मीन.
पाणी उपरि पाज बांधूं; ऊतारूं सवि सेन.' २१३
पूरिउं पाछूं नवि · फरूं; करु मेलावा ठाम.
सागरनूं वयण पालिवा हनमन्त पूछइ राम. २१४

(३)

राम पूछइ, हनमन्त वीर 'नीर ऊलङ्घीसइ किम करी ए ?'
भणइ हनमन्त, 'बाधिसि पाज; आज जई परवति चडी ए.त्रूटक.२१५
आज जई परवति चडूं साथि छप्पन कोडि;
सिला आणूं अति घणी. रखे लागइ खोडि.' २१६
'विवाद कीधु आमलइ; कहु, कवण करिसइ काज ?'
हनमन्ति सेना हकारी तनखिण बांधी पाज. २१७
पाज बांधी पाय लागु मच्छरि चडिउ भींछ.
'फोज मण्डु जूजूई नइ सबल ढालु रींछ.' २१८
हनमन्त कीधा जूजूआ तहिं मुखि काजल लाइ.
सुग्रीव कुङ्कुमि खरडिया· अति घणा अन्तर थाइ. २१९
सेन सायर ऊतरइ; लक्ष्मणु दी छइ मान.
वीर सर्व बोलाविया आपी फोफल ' पान. २२०
ढोल जांगी ढमढमइ; शङ्ख वाजइ भेर;
सात सायर हलहलइ; शिखर त्रूटइ मेर. २२१

ततखिण वोल्या वि जणा; पुहुता सायरतीर.
सुग्रीव साहमु आविउ साथइ हनमन्त वीर. २४२
रामनइ जई पाय लागु. भगत सरिआं काज.
रघुवंशी श्रीराम तूठा; लङ्क आपूं राज. २४३
'त्रैलोक्यतिलक तुह्म स्वामी ! वीनवूं कर जोडि.
पाप सघलां परजल्यां; कर्म छूटउ कोडि !' २४४
सीताहरण जे सांभलइ, राम लागइ पाय,
कर जोडी कर्मण वीनवइ, पातिग दूरि पलाय. २४५

इति धूल संपूर्ण.

पवाडु

रामचन्द्र नइ लक्ष्मण बइठा विभीषण सिउं मन्त्रि.
अङ्गद नइ सुग्रीव तेडिया. 'वेगि मण्डावउ यन्त्र.' २४६
करीं कल्मली हनमन्त उठिउ. 'त्रिकूटकोट हूं पाडूं.
कुम्भकर्ण हूं साहूं जीवतु, पेट अ साउली फाडूं.' २४७
उठइ वीर. अनइ अणियाला पायक बीडा मागइ.
छप्पन कोडि भड उठ्या हाकीं, राम तणइ पाइ लागइ. २४८
सुग्रीव जई संग्रामण मागइ. वानरि लङ्का छाही.
गूप गवाख्य मालियां पाडइ थम्भ आमूलइ माही. २४९
माटी फोनि अनइ टाउरी. पोलिइ कटक पइठउं,
'अहंकारी! अन्याय करी नइ गुणि चडी कां बइठउ! २५०

सुर नर पन्नग सेव कराव्या; ह्वइ रहिउ कां हारी ?
मांटी छइ तु ऊतरि, रावण, सूनइ लीधी नारी. ' २९१
रोसि चडिउ तिहां राउ बोलइ; पायक दीधा नेडी;
जरह जीण नइ वारु अङ्गा सविकहि आपइ केडि. २९२
मसाहणी पूंतार बोलाविया. ' गयमर पाखर घालु. '
राय राणा नइ वारु पायक, सहू इ पोलि चालू. २९३
सवा लाख बेटा रण पइसइ, बहुतरि'सु जमाट.
' ए सावजडां फूंकइ फाटइ, जई जगावूं' मांड. ' २९४
बइतालीस इ कोडि सुहुधा, ते रणि साहमा चालइ.
' ए वनचारी वेगि निहालूं. ' राउत बीडां झालइ. २९५
हाथी घोडा सवि सिणगार्या; रहिउ ठाठि मांडी.
' रामचन्द्र ! वेगिं रण आवु, नहितरि जानो छाडी. ' २९६
मेघाडम्बर छत्रइ रावण रा ऊसर मण्डावइ;
रामचन्द्र विभीषण पूछइ, ' मेघ वरसवा आवइ ? ' २९७
' मेघ नहीं. ए मेघाडम्बर; काने कुण्डल झलकइ,
नारि मन्दोवरि रङ्गभरि खेलइ, पाइ नेउरी खलकइ. २९८
पूरी बाण निकलसा पाडया; नारि सवे तिहां नाठी.
राणु रावण मांखउ दीठु, घटि विमासण घाटी. २९९
भणइ मन्दोवरिः-' सुणि, हो स्वामी ! काइ मरु विणखूटा ?
त्रिहु भुवननु स्वामी आविउ; ग्रह खाटिना छूटा. ' २९०

हूआ ददामा; दल सांचरइ; वाजइ ढोल निनाद.
वीर हनमन्त तेडइ फिरिउ; पडिघा पाडइ साद. २६१
'अङ्गद नइ सुग्रीव तेडइ. वेगि करु सजाई.
रथि वइसी नइ राणि पधार्या बेहू सहोदर भाइ.' २६२
वेगि करी विभीषण आविउ; रथ करइ छइ भेला.
हनमन्त वीर हकारइ. 'वानर ! आज आपणी वेला.' २६३
जाम्बवन्त बां महुवडि माडइ सबल जोध सपराणा.
'कहइ तूं "माणस चारि अह्मारी." ऊतरि रावण राणा !' २६४
मसाहणी पाटव बोलावा; 'घोटइ पाखर घालु;
नारु किहाडा अनइ नीलडा ऊतारे लेई चालु.' २६५
राउतनइ तिहा घोडां आलइ, जरह जीण जणसाल.
आयुध लेई अङ्गद चडिउ. दैत्यह लूटउ काल. २६६
सामसमां तिहां कटक वाठिया. बिहू दालि वाजित्र वाजइ.
शेष नाग तिहां सूतु जागिउ. परवन सरला गाजइ. २६७
पालु पाला सारिस्युं झूझइ, असवारइ असवार;
माहमा चाली आवइ हाथी; अङ्कुश दि पूतार. २६८
त्रिहु भुवनि आकम्प तिहां भयु. अङ्गद लक्ष्मण ऊठइ;
करी धरी नइ करि उन्चालइ; मांहि सूंसरा फूटइ. २६९
नाखइ तीर, भडइ भड मोटा; भाला तणा अगार.
वलगइ वानर अनइ विलूरइ, ते नवि लाभइ पार. २७०

रण मांहि राउत आयुध मेहलइ; पाखर पेट वछूटइ;
फावइ घाउ तणा तरुआरी; मांहि कटारी फूटइ. २७१
मेहलइ घाउ नइ तिहां फरसी. चालइ चिहू पखि बाण.
छप्पन कोडि रणि वाजित्र वाजइ; कायर पडइ पराण. २७२
रणकाहल रणतूर रणकइ; सींगिणिना गण गाजइ.
रथ केडि जु रथ न विछूटइ. भालइ भडुआ भांजइ. २७३
राणु रावण कुमर बोलावइ. 'पत्ति मांडु झूझ.
पशु मारन्तां पातिग लागइ. ए छइ आणी अबूझ.' २७४
'ए वात म बोले! दाशरथि नर ऊतारू नाद.'
छप्पन कोडि वानर कुपिया, जिम सायर तजि मर्याद. २७५
'हा हा' करी हनमन्त ऊठिउ; विसमु दीठउ वीर.
त्रिकूट कोट तिहां त्रूटी पडिउ: अकम्प्या शरीर. २७६
मेहलइ घाउ; पडइ रणि पायक हाथी नइ पुंतार.
लक्ष्मण बान्धव चक्र मेहलिउ दैत्य भणी संहार. २७७
ऊडी खेह; थयू अन्धारू; सइखि न, पडइ पराण.
सुर तेत्रीस इ जोवा मिलिया. रथ रहाविउ भाणि. २७८
मारी राखिस नइ रणि वाल्या दह दिश नाठा जाइ;
अनेक जोध तिहा रण माहि रहिया; हारिउ रावण राइ. २७९
रण सोधइ सुग्रीव हनमन्त; जांगी ढोल वजावइ;
रामचन्द्र रणि पूर जीतिउ धरी ऊतारइ आपइ. २८०

एकाएकि लक्ष्मण पूछइ; केहनइ लोह न लागूं.
कर जोडी कर्मण वीनवइ, दैत्य तणु दल भागूं. २८१
रवि ऊगमतइ दोउ मांडिउ, चिहु पखि वानर चढिया.
गेलि चडी त्रिपुहुरी वेला भड मला तिहां भाडिया. २८२
इन्द्रजयत ते तकि रण मांहियु (दिणयरतेजि न सूझइ)
अन्तरिखु ते आयुध मेहलइ. सी विमासण कीजइ? २८३
सूर्यनइ रथि बइठउ मारइ, बाणाउलि घण वरसइ.
अङ्गद जई विभीषण पूछुः—"कुहु, केहां ऊगरिसइ?" २८४
लहिउ भेद; तिहां वीर वांदिउ, लक्ष्मण उपरि बइठु,
सूर्य थकी तिहां ऊंचु वाल्यु. इन्द्रजयत थिउ हेठु. २८५
पूरी य बाण अनइ बोलाविउ. 'इन्द्रजयत! थाउ मांटी.'
सबल जोघ तिहां ऊठिउ साहमु, रहिउ धनुष पराठी.. २८६
इन्द्रजीत नइ लक्ष्मण झूझइ. रावण कुंवर बोलावइ.
'कर्म तुह्मारइ कुंयर! जीपीइ, लङ्का रूडी भावइ.' २८७
ततखिण तेज आपणूं दाखूं; इन्द्रजीत तिहां जीतु.
सुर भणइः-"लक्ष्मणना समवडि आज नथी बलवन्तु!" २८८
मागी नइ तिहां हेठु ऊतारिउ, धरणी पडन्तु दीठउ.
सीत तणा नीसासा पडिया; राणु रावण फीटउ. २८९
भणइ मन्दोवरिः-"सुणि हो स्वामी! भेद विभीषण दीधु.
सप्त ताड श्रीरामि वींध्या, वालि सरीसु बींधु. २९०

सरजणहार सरीसूं मांडइ? मूरख! गरव न कीजइ.
पाय लागी श्रीराम मनावु, जं मागइ तं दीजइ. २९१
सायर मांहि सङ्कासर हणिउ मधुमहण; तूं जाणइ.
पृथवी दाढाग्रह जिणि कीधी, तेह सरीसूं तूं ताणइ!' २९२
कुम्भकर्ण भड सरिखा पाडया; जमहर चालइ वाली.
भणइ मन्दोवरि, 'सुणि हो स्वामी! बहिन तेडावु काली.' २९३
अक्षर नइ अहिनाण आपियांः--'मानसरोवरि जाज्यो.
रामचन्द्र जु लङ्कां आव्या, बहिन अग्रेतर कहिज्यो.' २९४
मानसरोवरि पङ्खी पुहतुः 'वाराही! अवधारु.
राणु रावण लङ्कां रूंधिउ. तिहां लगइ पाउधारु.' २९५
शक्ति सवे मिली पङ्खी पूछिउ, 'वात कहु तुम्हि साची.'
'राणु रावग रूंधिउ दीठउ; कागल जोज्यो वांची.' २९६
कागल वांची नइ घण रोइ, हाथ घसइ, दिइ ताली:
'कुम्भकर्ण सरिखा भड पाडिया, वानरि लङ्का बाली!' २९७
'कुण राम लक्ष्मण? कुण हनमन्त? कुण विभीषण आज?
ते सघलानइ दूरि भमाडूं, बान्धव थापूं राज.' २९८
कोपि चडी तिहां काली बोलइ विस्तनी झालइ जाली.
'माहरी भूंइ कवणि आवेसी' केणइ लङ्का बाली?' २९९
सकति सवे जु लङ्का पुहुती; झूझ करइ झूझाली.
राणु रावण पाइ लागु. 'भलइ पधार्या, काली!' ३००

पहिराणि चरणु, ऊढाणि फाली; शक्ति सवे सिणगारी.
हार दोर नइ खलकइ चूडी; नलवटि पीयलि सारी. ३०१
झालि झूमइ, झलकइ नेउरी, कांचुयङ्ग उरि सोहइ;
रूप धरी नइ शक्ति पधार्यी. रण मांहि लक्ष्मण मोहइ. ३०२
बाण कटाक्ष नेत्र जिम भाथा; कुसुम मुगट सिरि धरिया.
'मामु मिरीयाचि नइ खरदूखर तई आगइ संहरिया !' ३०३
'दशरथ राजा केरु नन्दन, अह्म अजोध्या गाम.
पाछु पाय न परठूं, काली ! अह्म बान्धव श्रीराम.' ३०४
देखी तेज वीर डोलइ जिम विपनी लहेरइ धारिढ.
भणइ कालिका, 'भाज्यो मांटी; इन्द्रजयत तई मारिउ.' ३०५
लखमण तिहां शक्तिइ भेदिउ धरणी ढलिउ वीर.
ततखिण तिहा श्रीराम आविया; नयणि वहइ छइ नीर. ३०६

दुहा.

'राघव ! रोअन्ता नहीं.' 'सुणु विभीषण ! वात.
साचु नेह ते हूं कहूं जे उर फाटूं तात.' ३०७
'कायर थ्या नवि छूटीजइ,' हनमन्त कहि श्रीरामः
'ऊखध पूछु गारुडी जे त्रिभुवन मांहि ठाम.' ३०८
विभीषणइ हरि वीनव्या, 'मूली छइ अति दूरि.
रयणी मांहि पुहुचीइ ? मरइ ऊगमतइ सूरि.' ३०९
पवनपुत्र पूछइ घणूं, 'मूली कहु अह्म नाम.'
'शल्यविशल्या ऊखधी; द्रोणगिरि ते ठाम.' ३१०

'कहु अहिनाण तु ऊलखूं. वृक्ष घणां तिहां होइ.'
'.जेहनइ थडि दीवा बलइ, ते तूं जई नइ लेइ.' ३११
चमकिउ वानर तिहां गयु, पीलु दीठउ सूर;
जाणिउं 'मूलि लेयतां धासइ अम्ह असुर.' ३१२
तव गिरि द्रोण ऊपाडिउ. राजा बोलइ द्रोण.
'कुण कारणि अम्ह करि धर्यो ? नाम तुह्मारुं कुण ?' ३१३
'रामचन्द्र हूं ऊलगू. पवन अह्मारु तात.
मूली लेवा मोकलिउ. रहइ, म पूछिसि वात. ३१४
ठामि ठामि झगडा कर्या. किहीं न लागी वार.
मूली लेई आविआ; हरख्या राम अपार. ३१५
लक्ष्मण जु बइठु थयु; ऊखध आपिउं सार.
कर जोडी कर्मण कवइ, पृथवी हुउ जयकार. ३१६

पवाडु.

राणि पडिउ तिहां लक्ष्मण ऊठिउ; हरख्यूं मेन बहूत.
अङ्गद नइ सुग्रीव हरखिया; हरख्या जांबुवन्त; ३१७
नल नील बिन्हि बान्धव हरख्या; हरख्या छइ श्रीराम;
लङ्कापति विभीषण हरख्यु; हनमन्त कीधुं काम ! ३१८
भणइ विभीषण, 'पुहरा कीजइ. आवी राति अन्धारी.
चिहू पासि तिहा चूकी मेहलु, रहिज्यो खड्ग ऊभारी.' ३१९
च्यारि पुहर तिहां फेरा फरता रावणना जण आव्या.
रामचन्द्र नइ लक्ष्मण बान्धव बिन्हि हरी चलाव्या. ३२०

पुहर माछलइ हनमन्त ऊठिउ; जाणिउं, 'राम जगावूं.
सेन लेई नइ पोलिइ चालूं, रावणु राणि तेडावूं.' ३२१
करइ साद नइ को नवि ऊठइ. जाणिउं, 'ए विपरीत!
दाणव सरिसूं वयर न लागूं ते सिउं मांडी प्रीत. ३२२
भोलपणइ आगइ भोलवीया, कूड विभीषण कीधूं.
रामचन्द्र नइ लक्ष्मण हरिया, वयरी पूरु दीधु!' ३२३
भणइ विभीषण, 'कोप म करिस्यु हनमन्त! जोउ तपासी.
एहवां काम करइ सेन्यासी, ते पण जाइ नासी. ३२४
च्यारि महामन्त्री बइसारु. को आवन्तु दीठउ?'
भणइ हनमन्त. 'रयणी मांहि कवणु, विभीषण, पइठउ.' ३२५
कही वात तव श्रवणे सांभली: भेद सवे मइ लाधा.
जलवम्रानु राजा भणीइ, तेणइ बान्धव बांधा. ३२६
वेगि करी नइ वीर चलावु; परलङ्का तुझ जाज्यो;
शाक्ति तणु प्रासाद गोदरइ, तिहां जई नइ रहिज्यो.' ३२७
तिहां थिका वीर उतपतिया. आगलि घोर अन्धारूं.
'आगइ ईणइ राम भोलव्या; जई विभीषण मारूं.' ३२८
रोसि चड्यु आवन्तु दीठउ; जाणिउं, करिसइ घात;
अंगद नइ सुग्रीव मोकलिया. पूछइ प्रसंसी वात. ३२९
'आगइ तुझे मारग भूला. हवइ म करिसिउ भोलूं.
त्रिकूट कोट मेहलेवि जिमणु आगइ छइ अमूआलूं.' ३३०

तिहां थिकु वीर उतपतिउ परलङ्का जई पुहुतु.
मालीनइ घरि फूल मागियां. वात सांभली कहितु. ३३१
'ऐरावण तिहां भोग अणावी पुरुष हणइ बि मुहुटा.'
माली साथि वीर सांचरिउ; देउल मांहि जई खूटा. ३३२
दैत्यइ आवी देवी पूजी नइ आराधन कीधूं.
रामचन्द्र नइ लक्ष्मण दीठा. ततखिण आयुध लीधूं. ३३३
दिउ कमाड बिहू करि साही, बाधु वीर हनमाइ.
देउल सरिसा दैत्य चांपिया. उपरि ईंडी जाइ. ३३४
हालकलोल हूउ जलबम्बा; दाणव सवि संघारिया.
रामचन्द्र नइ लक्ष्मण आण्या. जाण्या सूर ऊगारिया. ३३५
जलबम्बानइ जीपी आविउ हनमन्त; वार न लागी.
कर जोडी कर्दण वींनवइ, हवि विमासण मागी. ३३६
पांच दिवस तिहां बेठा अूझा राणा रावण सत्य.
सात दिवस तिहां शक्ति जालव्या साहमा मुहि हनमन्त ३३७
ऊभु रही नइ नयन निहालइ शंकर दिशि, समझावइ.
'राणा रावण! तुझ हरि रूठा. हनमन्त लङ्का लावइ.' ३३८
'राम सरीसी हूं नवि झूझूं' भणइ वारही, 'न इस्यूं.
एकु बोल मानइ बान्धव! अह्मे रूडूं कहूं तुह सरिस्यूं. ३३९
तुझ ऊभां अनेकि ऊलगइ. वली जाणूं कुण चाला?
सुर तेत्रीस हु चाली आव्या. शंकर कीधा पाला.' ३४०

'एहवा बोल म बोलु बिहिनी ! प्राण तुह्मारूं जाणिउं'
कोप करी नइ रावण ऊठिउ; अग्निबाण तिहां ताणिउं. ३४१
छत्रीस इ आयुध ऊलाली - सनाह लेई सांचरिउ.
ततखिण त्रिकूट कोट छाहिउ, जई नइ पोलि ठरिउ. ३४२
मूकइ घाउ अनइ वण मारइ, मुहवडि कोइ न मांडइ.
हनमन्त वीर चाली नइ आव्या. 'रावण पोलि न छांडइ.' ३४३
मेघबाण तिहां मेहलइ लक्ष्मण. अग्निबाण उल्हाणूं.
नागपास तिहां गरवि छूटूं. गरुड भडि तां आहाणूं. ३४४
ऊगिउ सूर; थयूं अजूआलूं; सवे तपइ जिम नीर.
छप्पन कोडि रणि वाजित्र वाजइ; हाकइ हनमन्त वीर. ३४५
कोप करी नइ रावण बोलइ, ' आज विभीषण ! मारूं.
सेन थिका किम जासिउ 'अलगा वीर ! भजइ तुझ वारु.' ३४६
सभां जई नइ पाछु वलतु तिहां विभीषण दीठउ;
शीघ्रूं आयुध नइ उलाली; ततखिण रावण ऊठउ. ३४७
रामचन्द्र वाचा इम दीधी; बोलबन्ध किम जाइ !
ऊली छठि किम थाइ सातमि ! लक्ष्मण आडु थाइ. ३४८
अग्नि-सरिखूं आयुध दीठूं; जाणिउं, वीज अचूकइ.
दाणव दुष्ट रहिउ सर तोली; लक्ष्मण ठाउ न चूकइ. ३४९
मूकी सांगि अनइ सर फूटी. राम पुहुता तीर.
मूळी छेई सुषेण आविया. ऊठिउ लक्ष्मण वीर. ३५०

जय जय शब्द हूइ; इम बोलइ, साचूं जुउ संसारि:
पुण्य पापनु एह आंतरु, रावणनइ दलि हारि ! ३९१
सहसविद्या तिहां रावण साधइ, मांडइ वली य उपाइ.
मेघनाद लङ्केसर बोलइ पूजिउं तीणइ ठाइ. ३९२
दीठु धूम नइ रथ निकलिउ. वीर विभीषण पूछइ;
'वेगि करी नइ जाग विणासु. वात सांभलु पच्छइ ३९३
मेघनाद तिहां मख मण्डावइ; कर्म . साधना करिसइ.
रथि बइसी नइ आयुध लेसिइ. कुण तिहां उगरिसइ ? ३९४
बोडमुहा तिहा दैत्य साचरिसइ, त्रिणि भुवन ते जीपइ.
लोहडइ आगिइ जलि नइ पाणीइ ते पणि किम्हइ न छीपइ.' ३९५
इस्या वचन श्रीरामिं सांभल्या; नल नील बोलाव्या.
समरथ सेवक बेहू पायक रामवचनि तिहा आव्या. ३९६
'आगइ तुझे मारगभूला ना. कवण बिरद तुझ दीजइ ?
मेघनादनी विद्या वारु. एह काज तुह्मि सीझइ.' ३९७
आप्यूं बीडूं नइ साचरिया; वाडी माहि पाउ धार्या;
. पूरी कुण्ड नइ दैत्य विडार्या; जाग करन्ता वार्या; ३९८
काम करी नइ पाछा आव्या. मान दीधूं नल नील.
'थोडूं उदक भलूं गंगानूं, सायर किस्यूं सलील ?' ३९९
अंगद नइ सुग्रीव तेडीइ. 'एक काम तुझ अछइ.
एहवा भड तुझ कटकि केतला ?' रामचंद्र इम पूछइ. ३६०

'छप्पन कोडि कुल सरिखा, स्वामी! बीजा पार न जाणूं.
जांबवन्त जोधु बोलावु. ते हूं किश्या वखाणूं?' ३६१
ठाठउ सेन अनइ आणन्या; हाथि वचन हरि आपइ,
'ते को भट कटकि नवि देखूं जे दाणव ऊथापइ.' ३६२
नामइ सीस अनइ कर जोडी वीर, हनमन्त पूछइ,
'हेलामात्र हणूं ए रावण? कर अह्मारा वांछइ.' ३६३
पूरी वाण नइ पाउधारिया; रावण राणि बोलावइ.
दश मस्तक नइ वीस भुजादण्ड माया मीडी आवइ. ३६४
पूरिऊं धनुष; 'हूंतु जो मांडी. वनि वरांमइ आविउ,
मूनइ मढि थयु सन्यासी, सीत हरी कां ल्याविउ? ३६५
रिखिवेटु नइ ब्राह्मण भणीइ. ब्रह्मकुलि अवतारि
नारि पिआरी आणी! दशशिर, वेगि करि हथियार.' ३६६
रामचन्द्र नइ रावण झूझइ. जोइ स्वर्ग पायाल.
मृत्युलोकि सहू आविऊं चाली. बिहु दलि मिलिया ताल. ३६७
मूकइ घाउ, अनइ शिर छेदइ, शतखण्ड करइ शरीर.
नारि मन्दोवरि ऊभी देखट; नयणे वहि छइ नीर. ३६८
शंकरनु वर, नइ सपराणु. त्रूटइ, चूंटीइ सीस.
बे भुजाइ तिहां रावव झूझइ, रावणनइ कर वीस. ३६९
दोइ खट तिहां दिहाडा कीधा दशशिर स्यू संग्राम;
आठ दिवस जण च्यारि जालवइ; दश दिहाडा राम. ३७०

रोसि चड्या तिहां रावण झूझइ. अङ्गि न लागइ घाउ.
विभीषण तिहां तेडी पूछिउ; 'न पडइ रावण राउ !' ३७१
'बि कर जोडी देव! वीनवूं. प्रीति करी तूं पालं.
स्वर्गि जई नइ शंकर पूजिउ; आदि वात सम्भालूं. ३७२
करि पूजन; नवि जोइ साहमूं जाणी ऊलगहीणु.
नव इ मस्तक मेहल्या कापी तन्तीणइ रसि लीणु. ३७३
बांधी हाथ नइ नस वजावी ! महादेव तिहां तूठा.
'चौद चूकडी राज भोगवु ! नहीं मरु विणखूटा. ३७४
दस इ रुद्र देव धारिजो, बीजा मनि म लेस्यु.'
'मानवलोकि जे छइ मानवी ते मुझ वर म देस्यु.' ३७५
बोल बोलता पडिउ वरासु; अब ऊगिउं! स्यूं करिसइ ?
"एक रुद्र तिहां धुरि वीसारिउ मानवरूपि ह हणिसइ.' ३७६
तिहां भेद मर्म सवि लाधा; कोपि बाणि तिहां कापिउ;
दश इ मस्तक नाख्या छेदी; पाटि विभीषण थापिउ. ३७७
रावण राणु धरणी ढलिउ; पृथ्वी हाहाकार !
साठि सहस तिहां जमहरि चालइ, नेउरगुं अमकार. ३७८
बलइ चूडिया दाझइ मेडी रावणना भण्डार.
अगर कपूर पटूला बलइ, ते नवि लब्भइ पार. ३७९
नारि पिआरी आणी, दश शिर मूठा सवि अजाण.
रामचन्द्रि रणि जीत्यु रावण, प्रतक्ष एह प्रमाण. ३८०

सीता आणी नइ स्यूं साधिउं? लङ्का नयर विणास्यूं;
त्रिकूट कोट तिहां वानरि भेल्यु; त्रिहु भुवनि श्यूं हांसं! ३८१
राणि पडिउ हुतु ते स्यूं पचारी भणइ मन्दोवरि राणी.
'कूड करन्तां तहीइ वारिउ, जहीइ सीता आणी!' ३८२
अङ्गद नइ सुग्रीव - तेडीइ; - 'स्वामी! सीत अणावु.
लक्ष्मण नइ - सीखामण देई वेगि रथ जूतावु.' ३८३
सीत मणी सहू इ सामहिउं. लक्ष्मण लागु पाइ.
'हवइ दूख म धरिस्यु माता! जीतिउ तुम्ह पसाइ.' ३८४
करइ प्रणाम नइ करसंपुट. 'वेगि जानकी! उठु.'
दीइ आसीम्र अनइ 'आरामर! आज मलइ तूं दीठुं. ३८५
राम सरीमी हूं नवि बोलूं. ए रुदाडि मइ मांटी.
अलीक वचन मइ तुम्न बोल्यां लक्ष्मण! मही तु छांडी. ३८६
आपण कहिना पार न लागुं. कैता दूख सम्मारूं?'
'गई तिथि नवि जांवइ ब्राह्मण; एह बोल वीसारु. ३८७
हूउं ग्रहण नइ सूर उग्रहिउ. हर्ष हिया मांहि आणु.
एवडां दूख सहियां जे दाणव ते किहां रावण राणु? ३८८
पीतांवर पहिरु तुम्हे सीता! आभरण अङ्गि धारु.
रामचन्द्रि इम आयस दीधु. एणी परि पाउधारु.' ३८९
च्यारि महा घर चलणे लागा, लेई जानकी वलिया.
कर जोडी नइ कर्मण वीनवइ राम सीतनइ मिलिया. ३९०

दीठउं रूप अनइ मनि रोसि राम तणूं चित्त चालिउं.
देवी भणइ, 'अम्हे दिव्य करूं; आज सहू को मिलिउं.' ३९१

मनसि वचसि काये जागरे स्वप्नमार्गे
मम यदि पतिभावो राघवादन्यपुंसि ।
तदिह हि दह देहं मामकं पावकेमं
सुकृतविकृतभाजां त्वं हि साक्षी जनानाम् ॥

सीतया दुरपवादभीतया पावके स्वतनुराहुतीकृता ।
पावकोऽपि जलतां जगाम यत्तत्र शीलमहिमा विजृम्भते ॥

वह्निस्तस्य जलायते जलनिधिः कुल्यायते तत्क्षणा–
न्मेरुः स्वल्पशिलायते मृगपतिः सिंहः कुरङ्गायते ।
व्यालो माल्यगणायते विषधरः पीयूषवर्षायते
यस्याङ्गेऽखिललोकवल्लभतमं शीलं समुन्मीलति ॥

मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः
केचित् प्रचण्डमृगराजवधेऽपि दक्षाः ।
किन्तु ब्रवीमि बलिनः पुरतः प्रसह्य
कन्दर्पदर्पदलने विकला मनुष्याः ॥

पवाडु.

सीताइ सूरज रति लायुः अग्निकुण्ड मण्डावइ.
सुर तेत्रीसइ जु पेखन्ता गङ्ग तणूं जल आवइ. ३९२
सीधी सीता; नइ दिइ ताली आणन्दिउ सवि सेन.
'राजा दशरथनी कुलवन्ती ! हवइ म करिस्यू कहेण. ३९३

सत्य तुह्मारइ सायर बांधिउ; रावणु हणु अणखूटइ.
जन्म कोडि जे पातिग कीधां, नामि तुह्मारइ छूटइ.' ३९४
'हूं चूकं तु सायर चूकइ; सूरज कालु थाइ;
कामधेनु जु ४९९

चुप्पई.

हरिख्या छइ तिहां बावन वीर; हरिख्यु वरुण भरन्तु नीर; ४११
हरिख्यु सूरज रस रांधतु; हरिख्यु पवन इ घर बाहारतु;
हरिखी चामुण्ड छण्डी काम, 'स्वामी भलइ पधार्या राम !' ४१२
हरिख्यु गणपति पोलिउ हतु; हरिख्यु अग्नि वस्त्र धोअतु;
कहितु बोल नवि लहूं पार, हरखनन्दन निरख्यु संसार. ४१३
भगत वीनवइ जोडी हाथ, 'त्रिणि भुवनजु तूं हि जुग नाथ.'
बल्यु विभीषग; दीधूं मान; सविकहि आप्यां फोफल पान. ४१४
'तारा रुक्माङ्गद हरिश्चन्द्र, पुहिराजा नइ थापिउ इन्द्र.'
आगइ ए ऊधरिया देव', भणइ विभीषण, 'करिस्यूं सेव. ४१५
कृत्य ताहरां कहूं केतलां? आकासि तारा जेतलां.
घडणहार तूं; भञ्जणहार; तुह्म गुण तणु नवि लाभइ पार. ४१६
जगत तणु तूं जि प्रतिपाल.'' लङ्काइ मेहलिउ रखवाल.
ततखिण हूइ सीखामण वीर; सेन पहूतां सायरतीर. ४१७
भणइ विभीषण, 'दीधूं राज; स्वामी! हवइ विहण्डु पाज.'
भगतवचन मन मांहि रची मेहल्यूं धनुप फेरवी चिचि. ४१८

रामेश्वरना त्रिणि प्रासाद, शङ्ख भेर वाजइ नितु नाद.
आवी इन्द्र नचावइ पात्र. गणगन्धर्व करइ तिहां जात्र. ४१९

हरि तणी तिहां पूजा करइ; रामनाम वदनि उच्चरइ.
थानक तीर्थ थापिऊं राम; कोडि तेत्रीस इ करइ प्रणाम. ४२०

नर नारी प्रणाम जि करइ, पुनरपि भवि नवि अवतरइ.
सेतबन्ध रामेश्वर नाम; मागइ हनमन्त उत्तम ठाम. ४२१

'तिहां रही नइ ऊलग करूं, नाम तुह्मारूं मन मांहि धरूं.'
'बोलावि नइ वलिजो वीर!' सैन ऊतारुं पेलइ तीर. ४२२

मोकलावि वानर, वन जाइ; छप्पन कोडि भड लागा पाइ.
वानर रींछ वनि जु गया; वीर हनमन्त ऊभा रह्या. ४२३

राम भणइ, 'तूं मोटु भींछ, ततखिण मिलिया वानर रींछ.
समुद्र ऊलङ्घी ग्या पेलाडि, नहीं पुरुष तूं केहनइ पाडि? ४२४

समुद्र तणूं तइं बांधिऊं नीर; तइं ऊठाड्या लक्ष्मण वीर;
जइ अलवम्या कीधूं काम, मागि न एक अनुप इनाम.' ४२५

भणइ हनमन्त. 'तूठा राम, पूर्ण पुरुषोत्तम दि अह्म नाम.'
दीधूं नाम; चडिउ अहंकार, 'एक पुरुष छइ वनह मझारि. ४२६

ते पूछी नइं आवु तुह्मे, कंइ इनाम तु देस्यूं अह्मे.'
वेगि करी हनमन्त गयु, कर जोडी नइ ऊभु रह्यु ४२७

'वयण तुह्मारां मानइ राम; पूर्ण पुरुषोत्तम दिइ छइ नाम.'
जाणन्तां वरासिउ एव ते कारणि मोकलिउ देव. ४२८

'एक काम अम्हारइ अछइ, ते करिस्यु तु कहिस्यूं पछइ.
कानि अम्हारइ कुण्डल हतूं. ते लावइ तु कहिस्यूं छतु. ४२९
जहींइ अति घण वूठा मेह, कादव मांहि खूतूं तेह.'
जई पराक्रम हनमन्त करइ, ते तु कुण्डल नवि नीसरइ. ४३०
देव भणइ,'का लगी वार!' हनमन्त कहि,'लाभवा करूं अपार.
ए तु काइ न आवइ एव, जउ मेलइ सवि दाणव देव. ४३१
सिला लाधी मइं पर्वत तणी; कारणि वात अछइ ए घणी.
द्रोणगिरि मइ कीधु कन्धि, कुण्डल तुम्हनूं नावइ बन्धि.' ४३२
'रे वानर! नवि जाणइ भेद. एणइ वाल्या चार इ वेद.
दधि मथिउ नइ पग्णी नारि तेहइ दइत्य हण्या अपारि. ४३३
मही दाढाग्रइं जेणइ धरी, हिरण विदारिउ नहरि करी.
वामन रूपि आव्या थई. त्रिहु कमि तिहा पृथ्वी लही. ४३४
पगि पगि तिहा चल्या वीम, तिहा मनि हरि ऊपनी रीस.
एक लाख धरामण्डलि रड्या; एक लाख वन मांहि पड्या. ४३५
फरसराम ब्रह्म—अवतार, तपने ग्या छाडी संसार.
जमदग्नि जे कहींइ तात, तेहनी खडगि पहुती घात. ४३६
कोपि चडी फरसी करि धरी सहम भुज तिहा लीधा हरी.
रावण जङ्ग माड्इ संसारि, ते कारणि लीधु अवतार. ४३७
आदि वात न जाणइ भेद. एणइ ऊधर्या च्यार इ वेद.
एक बोल ता आणइ सुणिउ, वालि सरिखु जहींइ हणिउ. ४३८

रे वानर ! जई पाइ लागि; मूढा ! नाम अनेरूं मागि.'
वानर आविउ झांखु थयु, 'स्वामी ! वनि वरांसइ गयु. ४३९
पूर्ण पुरुषोत्तम तुह्मनूं नाम'. आवी हनमन्त करइ प्रणाम.
तेणइ वयणइ तूठा राम; अतलीबल तिहां दीधूं नाम. ४४०
रथि सांचर्यु लक्ष्मण वीर. 'तिहां रहिजो जिहां निर्मल नीर.'
अङ्गद आविउ आगलि थई; तारा वात जणावी जई. ४४१
रामचन्द्रनइ भोजन घरूं रुद्र हुइउ आगलि करु.
विजानगरि सुग्रीवह पास, 'जाणेजो बीजु कैलास.' ४४२
अङ्गद अनइमूंदी दिइ, 'राज भोगवु इहा रही.
तारा ! कोप म करिस्यु; सती पंच सरीखी तूं छइ छती'. ४४३
तिहां थिका सांचरिआ राम अञ्जनगिरि हनमन्तह ठाम.
जई अञ्जनी करिउ जुहार मुख्य कुटुम्बह तेणी वार ४४४
चिहु वटन्तर कहु जूजुउ. पयपान्हइ परवत वेधिउ;
हूआं भोजन नइ पारणां; दीइ आसीस अनइ भामणां. ४४५
पभणइ आञ्जनी, 'लागु पाय. स्वामी ! सुणु अजोध्याराय !
मन मनोरथ पूरु आस, जिहांतिहां तुम्ह जमलु वास.' ४४६
रामचन्द्र तिहां बोलइ हसी, 'एह वात विमासण किसी ?
छन्नू कोडि अछइ जे गाम, पाद्रि पाद्रि तुह्मारूं नाम.' ४४७
संतोखी नइ वीर राखिया, चन्द्र सूर कीधा साखिया.
राय राणा चालइ तेणी वार; सविकि आपइ तुरी तोखार. ४४८

वाल्या दोसी विवहारिया; वाल्या हाटमण्डा वाणिया;
वाल्या कणगार विणजू लोक, लहिणूं देवूं आपइ रोक. ४४
वाल्या नल नील बलवन्त; वाल्या रा मोटा गुणवन्त.
कर्मण भणइ, कथा छइ घणी. वाल्या रथ अजोध्या भणी. ४९
राम भणइ. 'विभीषण सुणु. आलय अह्म अजोध्या तणूं.
वेगि करीं पुहचाडु गामि'; एहवूं वचन कहिउं रामि. ४९१
भगत भणी हरि लागु पाय. 'स्वामी! सुणु अजोध्याराय!
एक रतन अछइ भण्डारि; एहवूं अवर नहीं संसारि. ४९२
कमलपान तणइ आकारि तेहनी बुद्धि; न लाभइ पार.'
विद्याधर मोकलिया देव; लेई विमान पुहता खेवि. ४९३
ते जोवा जण मिलिउं बहु; सेन सहित तिहां बइठउं सहू.
ते चाल्यां नइ चित्रकोटि गयु; दिन बि च्यारि जई नइ रहु. ४९४
गुरु भणइ 'अह्म सिरिया काज, अटसठि तीरथ अह्म घरि आज.
करूं वीनति बि कर जोडी, करियां कर्म ज छूटइ कोडि. ४९५
गुण बोल्ता न लाभइ पार. मुक्ति तणु मिलिउ दातार.'
लक्ष्मण सरिसूं मन्त्र ज करइ, 'घणइ दिवसि माया ऊतरइ. ४९६
हनमन्त! आवु अजोध्या जई; एक पुहर तिहां जोमो रही.
भरत तणु जोजो मुखराग. तु रहिजो, जु देखु लाग.' ४९७
करी वेगि नइ हनमन्त गयु; अजोध्या पोलइ ऊभु रहु.
वानर वदनि जपइ श्रीराम. जोवा मिलिउं सारूं गाम. ४९८

एक धाया आगलि दडवडी, वाजइ ढोल अनइ तडतडी.
एक धाया भरथेश्वर भणी, 'स्वामी! मागूं वद्धामणी. ४५९
साविज एक अछइ महासार. तेहना रूप न लाभइ पार.'
भरथेश्वर हरिख्यु तेणी वार. चारण भाट करइ जयकार. ४६०
दीठु वानर हइडइ हरख; 'ए तां कोइ अपूरव पुरुख.'
स्नेह धरी नइ सांइ दिऊं. राम तणु वृत्तान्त जि कह्यु. ४६१
राजसभा ते बिहू जण गया, शिर नामी नइ ऊभा रह्या.
राय राणा सीमाडा बहु, जुहार करवा आविऊं सहू. ४६२
मन्दिर मालियां मोटी मण्ड; भरथ पूछवा जमला खण्ड.
'राम तणू रखवालू करूं, राति दिवस हरि हइडइ धरूं. ४६३
पहवी ऊलग सारूं वीर! आयुध, बाणही तरकस, तीर.'
कौशल्यानइ मन्दिरि गया, शिर नामी नइ ऊभा रह्या. ४६४
'आयउ कूंअर' बोलइ हसी; माय भणइ, 'विमासण किसी?
लिउ न कचोली कुकुम तणी. आव्या राम अजोध्याधणी.' ४६५
कनककापडां आपइ बहु. रानदुआरि मिलिया सहू.
वद्धामणी सवि चालिउ, लेउ. करइ सनाइ बन्धव बेउ. ४६६
तलिया तोरण बन्धइ बारि; नगर तणी तेडावइ नारि;
धवल मंगल मनहर व्यापार, कामिनी करइ सवि सिणगार. ४६७
ब्राह्मण वेद भणइ तिहां च्यारि; बन्दिजन करइ जयजयकार;
पंच शब्द वाजइ निर्घोस; नगर तणा मिलिया सवि लोक- ४६८

भरथेसर साहमा चालिया; शत्रुघन तिहां बोलिया.
महा मनोरथ मनचा फल्या; रामचन्द्र नइ लक्ष्मण मिल्या, ४६९
मिलिउ विभीषण लङ्काधणी, भरथ करइ परसंसा घणी;
मिलिया अङ्गद जम्बूवन्त, नल नील मिलिया बलवन्त. ४७०
भरथेश्वर नइ मिलइ सुग्रीव, जल मांहि जिम जलना जीव.
सती जानकी करिउ जुहार; आणन्द्या बान्धव मेणी वार. ४७१
सविकहि बोल न लाभूं पार. सेन सहित मिलिउ परिवार.
ऊतारि ऊतारि सहू अन्नपान जण आप्यूं बहु. ४७२
वरण अढार इ आव्यूं गाम; रामचन्द्र नइ करिउ प्रणाम.
पूछइ राम धरी मनि भाव. 'स्वामी! सुणु भरथनी राव. ४७३
महाजन सहूको आव्यूं चडी; मागी अकेकी कोकडी'
दूहवणकर विरासिउ बन्ध; कर अढारनु ऊड्यु खन्ध. ४७४
सनमान्या ते मन्दिरि गया. देव शाप ते आगा रह्या.
पहिलूं कइगइ मिलिया राम. भरथ भणइ 'म लेस्यूं नाम. ४७५
कूडा साचा बोल ज कह्या, तु तुझनइ देसूटु दिया.
एह मातकूखइ का वस्या?' रामचन्द्र नइ लक्ष्मण हस्या. ४७६
विहिइ अक्षर लिख्या निलाडि, नहीं भरथ! ए कहिनि पाटि?
कइगइ! काइ म करिस्यु रीस; पाय लागी मागूं आसीस.' ४७७
जई कौशल्या लागा पाइ; 'पुण्य तुह्मारइ आन्या माइ!
मूली लान्यु साहस धीर, तु राणि ऊठिउ लक्ष्मण वीर.' ४७८

सासू वहु मिलियां बिहु जणां; पडह देउल दि वद्धामणां.
सुमित्रा बोलावइ वहू सगां-सणीजां मिलियां सहू. ४७९
क्रोधमुखी तिहां कइगइ मिली; कूड विमासइ मन मांहि वली.
रूअडुं विरूउं छि संसारि; कइगइ वागुलिनइ अवतारि । ४८०
सहिस अठयासी मिलिया रिखि; विप्र वेदिया आव्या लखि;
गुरू मिल्या, मनि पुहती आस, एतलइ आव्या नारद व्यास. ४८१
तेडया जोसी; मांडी खडी; 'एक पुहर बि उपरि घडी.'
रघुवंसी राउ बीजु चन्द्र ! तेतलइ तिहां पधार्या इन्द्र. ४८२
पञ्च शब्द वाजइ नीसाण. रथ रहावी आव्यु भाण.
अक्षत कुङ्कुम मेहल्यु थाट; तिलक वधारिउं; बइठा पाट. ४८३
कौशल्यानइ मन्दिरि बारि च्यारि मिली वधावइ नारि.
ब्राह्मण वेद भणइ तिहां च्यारि; संतोख्यु सघलु संसार. ४८४
रामचन्द्रनइ हूउं राज, कर्मण भणइ सियो हिव काज.
लक्ष्मण जई नइ वीनवइ राम, 'स्वामी! जेणि कीधा काम, ४८५
भाइ आपणी आव्या जेह का तुह्मि नवि तेडाव्या तेह ?
'लक्ष्मण ! वात ए कारण अछइ. तूं पूछिसि, तु कहिस्यूं पछइ. ४८६
आपण बन्धव बिहु जण रङ्ग. एणि सहोदर कीधा भङ्ग.
वानां मइ विमास्यां घणा. दूख धरेसि बिहु बन्धव तणां. ४८७
तेह कारणि मइ राख्या वीर; जाणूं नयणइ भरेसि नीर.'
लखमणइ नवि जाण्या भेद; 'स्वामी! साचूं एह ज वेद.' ४८८

विभीषण तव वीनती करइ. ' नामि तुम्हारइ सहू इ तरइ.
दिन दिन दिउ तुं अधिकू मान. स्वामी ! जोउ निहाली सानि. ४८९
अमृतआहारि न ध्रापइ कोइ; स्वामी ! आप संभारी जोइ.
अन्ननइ दिवस हूआ घण बहु; पाछूं सेन चलावु सहू. ' ४९०
पञ्च पीताम्बर आपइ राम; सुभट भलानूं पूछइ नाम.
संतोखी सांचरिया वीर; ' तुह्ले तु हूआ साहस धीर. ' ४९१
सीता जानकी दिइ आसीस, ' सहू इ जीवु कोडि वरीस !'
वाल्मीक जेणइ बांध्या ग्रन्थ, ते ऋषीश्वर छइ समरथ्य; ४९२
ज्ञानइ जेणइ लाधा भेद, मुखि अवतारिया च्यारि वेद.
ए रामायण आगइ होइ; भेद विचार न जाणइ कोइ. ४९३
अज्ञविणामण जे मानवी, रामकथा किम जाणइ कवी !
लम्बोदर सरसति आधारि कूडा साचा कह्या विचार. ४९४

दूहा.

जा भू मेरु महीधरु, जां सायर नइ सूर,
ता ए रामायण सुणि, ते घरि नव निधि पूर. ४९५

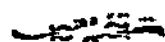
इति श्री रामायण समाप्तम् ।



संवत् १६०५ वर्षे कार्त्तिक वदि ५ दिने वे. ब्रह्मालिखितम् ।



उपाहरण.



कडवूं १.

गणपति गुणानिधि वीनवूं. सरसति करउ पसाय.
नारायणसुत गायस्यूं अनिरुद्ध उपानु विवाह.
एकमना जे गायइ, सांभलइ जे रास,
तृतीय ज्वर पीडइ नहीं, पामइ पूर्ण विलास.
श्रीगुरुचरणइ परणमुं, कविजन मागूं मान.
जो गातां पद वीसरइ, तो म देस्यु अपमान.
श्रोणितपुर पाटण भलूं, राय बाणासुर नाम.
सांभलतां दुष्कृत हरइ हरिहरनु संग्राम.
त्रि सइ वीसइ पद भलां, राग बत्रीसइ वाणि.
अमरावतीइ ऊपनु ग्रन्थ रत्ननी खाणि.
संवत पनर अडताल वरस, मास दामोदर सार,
भणइ जनार्दन कार्तिगी एकादशी गुरुवार.

कडवूं २.

वैरोचन सुत जाणु रे बलिसुत बाणु रे.
कारण हूंतु तेह तप करइ रे.
श्री गंगानइ तीरि रे आसन वाल्यू धीरि रे.
शरीरिइ धुमरपान असुर करइ रे.

समीगण साधइ रे, चुरासी बांधइ रे,
रूंधइ, दस द्वार आकरखी रे.
अयुत संवत्सर, आराधु उमयावर,
सुरेश्वर मन्दिर निज आकम्पिया रे.
विविध परिइं ता वपु दमइ. अवर कोइ नावि गमइ,
रमइ शङ्कर. मनि ते. साधइ रे.
जनार्दन भणइ मिं जाण्यूं रे, दैत्य तप्यु सपराणु रे
आण्यु रे शंभु कैलासथी रे.

कडवूं ३.

श्रीरुद्रि आवी जोइउ रे, तो ध्यानरूप ते दीठू.
श्वासोश्वास निमेष न हुइ, आसन वाली नइ बिठु.
योगीनी परिइं करी समाधि असुर महा तप साधइं.
तेणि तपि सुर डोलण लागइ; जाण्यूं अमरपुरि बाधइ.
महादेवि मानि विमासिउ रे, एहानि हवां किम कीजइ?
पारवतीनि पूछवा लागा, जे मागि ते दीजइ?
हरख धरी नइ स्वामी संभार्यां उमया उच्चरइ वाणी.
भस्माङ्गदइ घणूं व्यगोया, तुइ वर आप्यु जाणी.
रावणनइ आगइ वर आप्यु, तेणइ सुर संताप्या.
स्वामी अनेरानि शू संभारू? अनेकानि वर आप्या.
वली वली विष्णु अवतार धरी नइ, असुरनइ ऊथापि.
श्रीरङ्गनइ काइ सन्तापु, दयाभवन, वर आपी?

पारवतीना वचन सुणीनइ परब्रह्म परि परि विचारइ,
भणइ जनार्दन, जर्म निवारइ, भव दुस्तरथी तारइ.

कडवूं ४.

साभलु देव्या ए हिमाचलनी धियाए, एहनइ पुत्र मणी परठीउ ए.
आव्या आर्तिहर नारि स्यूं देउ वर बच्छ बाण असुर नइ ए.
वच्छ! वर मागु ए, ध्यानथी जागु ए. भाजी भावठी पेला भव तणी ए.
स्वामी! द्यु सहस्र भुज ए, प्राणि सहस्र गज ए, न कोइ मुझ पराभवइ ए.
अविचल पद आपूं ए, एहनइ थापु ए श्रोणितपुरनु राजउ रे.
भणइ जनार्दन ए, आव्या आनन्द मनि ए.करइ तिलक रानि सुन्दरी ए.

कडवूं ५.

बलवन्त बाण वधाविउ ए कौभन्ड प्रधान ते आविउ ए.
विविध भण्डार भला भर्या ए, तेडी नइ रायनी दृष्टि कर्या ए.
हस्ती हय, हेपारव करइ ए. मनोहर नारि राउजी वरइ ए.
सदा तेनी आण भूतलि फिरइ ए. इस्यूं राज बाणासुर करइ ए.
जनार्दन भणइ, तपि पामिउ ए तेणि अहंकार काइ मनि जामिउ रे.

कडवूं ६

बाणासुर कैलासि संचरु परणमिअ ए, स्वामी य ए,
दायक पदतणउ ए.
सेवक संग्राम मागइ बल भर्यु ए, किम कर्यु ए
स्वामी! म्‍च बल तोलीइ ए.

कर कोड करइ बल बूझवा ए, झूझवा ए
वाणी वली वली बोलइ ए.

बलतां शंकर बोलिया. कृष्ण रूपि ए तले भूपि ए
नारि कारणि झूझस्यूं ए.

वचन सुणी राय हरखिआ ए, भुज नरखिआ ए,
आनंद स्यूं घरि आविउ ए.

रा सह सुंदरी आवइ. भणइ जनार्दन, घोली रसयन
करइ केसर छांटणां ए.

कडवूं ७

निज गुरु मागइ ववामणी ए, रा घरि बेटी पाउ–धारि.
रूपि ते त्रिभुवनमोहनी ए, लक्षण नइ गुण सार.
नहीं रम्भा, नहीं उरवमी ए, मेनका नहीं एह समान.
द्विजवरनइ राय रीझिउ ए, बूझिउ वचन प्रमाण.
रा कहइ. कन्यादान देसुं ए, लेशुं जग फल कोडि.
देव गन्धर्व नइ नाग मांही ए जोय्यूं एहनी जोडि.
आकाश शब्द इम उच्चरइ ए, इच्छावर वरसि कुमारि.
जनार्दन भणइ, प्राणि कांइ तुहइ ए, हुइ ति न टलइ संसारि.

कडवूं ८

बोलइ बाण सूत्रधार तेडीइ; मेडीइ मंदिरि मणि जडु ए.
नीपाउ धवलहर मालियां. जालियां रचु रतनमइ ए.

चित्रलेखा उपानी सहीयर कीधी. दीधी सीखामण राखवा ए.
सबल सनाइ ए कुंअरिनी राखजो, दाखजो राति निति नवी ए.
योध जालमधर करइ रखवाली, निहाळी बाली अहरनिसि ए.
बाणासुरनी कन्या हुइ, जुइ तु जमलि वर को नहीं ए.
आलोचइ सहीस्यूं मिली, वली वली, भणइ जनार्दन एकली ए.

कडवूं ९

सखी ! सीखामण आपु, अम्ह वर जोए बापु.
करइ रे काम संतापु, शूं कीजइ जेणि न लागइ पाप ?
उषा तूं उमया पूजि. तूं इम कांइ अमूझी ?
मन शूं जोइ समूझी. वर वान्छइ तो बाइ ! गुरि पूजि.
तातनइ समीपि जई, उपाइ वात कही.
कोड कैलास जई उमया पूजवा मूझनइ.
वाणि बेटी बांहि साही उच्छङ्गी बिसारी वाही.
मारी गिहिलडी बाइ ! श्रीरुद्रआवासि ना जवाई.
चित्रलेखा सोहन्ती कैलास पहुती.
उमया उषा पूछन्ती, उषा वर वान्छन्ती.
सुतनी तनया जाणी, ईश्वर ऊचर्या वाणी,
अनार्दन भणइ, ताणे भर्तार आपिसि आणी.

कडवुं १०

आदि उपाए आलोचिउं, साहेलडी रे, गवरीवर ! करि सार, साहेलडी रे.
भव भवानी रीझव्यां, साहेलडी रे, वर आपु संसारि, साहेलडी रे.
प्रीति पार्वतीइ पूछिउं, साहेलडी रे, हुइ वरजोगी, कुमारि ? साहेलडी रे.
हेठूं जोई उषा लाजियां, साहेलडी रे, न करि वचन उच्चार, साहेलडी रे.
भाति भवानीइं भाखियुं, साहेलडी रे, दाखियूं छडडि मासि, साहेलडी रे.
स्वप्नातरमा वर वरीशि, साहेलडी रे, आवाशी ताहरि अवासि, साहेलडी रे.
वैशाख मासि ऊजु वालिउं. साहेलडी रे, मालिइ मासिम रात, साहेलडी रे,
द्वादशीइ रङ्गि रमीसइ, साहेलडी रे, तूं भरथारनइ साथि, स हेल्डी रे.
मनह मनोरथ पूरिआं, साहेलडी रे, गौरीइ दीजली वाणि, साहेलडी रे.
जनार्दन भणि, उषा वालिआं. साहेलडी रे, पालिआं वचन प्रमाण, साहेलडी रे

कडवुं ११

चित्रलेखा भारती आरती उपासइ, वाज्ज्डइ, भुवन वन नन्दनि ए.
ततक्षण तूठा सारदा स्वामिनी, कामिनीनइ वरदान दीइ ए.
ब्रह्मतनया दक्षतनयानी वाणी जाणी नइ मंदिरि आवियां ए.
सहिअर साहीं भुज करि आवइ, पहोता वरदान ते अवधना ए.
क्षणु एक खेचरी गति जोइउं, मोहिउं, चित्रशाळा सज करी ए.
माझम रात्रि इकन्त संगाति सुपननि पिरि कन्त रमी गयु ए.
उषाइ ऊठ्यूं मन तेहनूं, भणइ जनार्दन जीवन जाणइ ए.

कडवुं १२

उषा माझम रयणी जागी रे, अङ्ग अनङ्गज्वाला लागी रे.
मुहनइ कलङ्क लागूं रे, कन्याव्रत माहारूं भागुं रे.
सयर भणि, सुणु बाइ रे, कन्याव्रत केमइ नहीं जाइ रे.
उषा कहइ, मुझ ते वरु रे; अवर पुरुष पिता गुरु रे.
वर वरस्युं ए जोखि रे. नहि तु प्राण तजु तन सोखि रे.
उषा! प्रतिज्ञा नवि लीजइ रे, सहीयरनूं ते वार्यु कीजइ रे.
सहीयर कहे मन माणु रे. ए वर घरथी नथी जाण्यु रे.
सुहणइ ते लाख बन्धाइ रे, ते विहाणइ मिथ्या थाइ रे.
जनार्दन भणइ उषा भोली रे, तुहनि रक्षा करइ हिंगोली रे.
तो मनि नवि आणे ताप रे. उमा शङ्कर शिर मायबाप रे.

कडवुं १३

उच्चरइ सदरी रे, तूं काय मरइ रे, मन दृढ करी रहि उषा रे.
हूं तुज वरनइ रे, बाही ग्रही नइ रे क्षण एकमा जई लावूं रे.
एणी बोलीइ रे, चित्रशालिइ रे स्वर्ग पाताल तिहां लिख्यां रे.
जई जुइ रे, वणूं रुइ रे; न देखे ते नेह पराणिउ रे.
तिहां सकल रे, यादवकुल रे अनि अनिरुद्ध कूंअर लिख्या रे.
नीर लुहइ रे, मन मोहइ रे, अनिरुद्ध देखी लाजइ रे.
चित्त भावइ रे, एह तूं लावइ रे, उषा सहीयरनइ बोलइ रे.
माहरु ए वर रे, सुण सहीअर रे, मन एणि हरी लीधऊं रे.

चाइ, जाइ रे, न रहेवाइ रे. उपाय जुगति कांइ करु रे.
जनार्दन चिर जीवु रे यादवकुल दिवु रे, चित्रलेखा भणइ मि वर दिवु रे.

कडवूं १४

चित्रलेखा चपल गति जोती वेगइ वनिता द्वारिका पुहुती,
मोहती बे यादव जुगतिइ रे.
चक्र नईतलि वारइ रे, अणमीछचानइ मारिइ रे,
ऊतारइ असुरना नाद रे.
चित्रलेखा तिहां मनि विमासइ, नारदवचनि मन्त्र उपासइ,
पइसइ नयरी मांहि रे.
अनिरुद्ध सुपन लाधूं, रयणी रंग रमइ स्यूं अमृतवयणी,
नयणि हरण हरावइ रे.
काम कूंअर पूढ्या आवासि, ग्रही सेज उतपती आकाशि,
नासी श्रोणितपुर परवरी रे.
अग्यार सहस्र योजन क्षिण आवी, उपानइ मंदिरि अनिरुद्ध लावी,
भावि सहीयरनइ कहइ रे.
विविध शिणगार करु, रे कुंआरी. ऊठी उपा शोक निवारी,
नारी नर जोउ रे नयणइ रे.
उपातणइ मनि आनन्द सीधु. भणइ जनार्दन, अमीरस पीधु,
वर दीधु शिवाशंकरिइ रे.

कडवूं १५

जाग्यु कूंअर तहीं निमेखइ, जादव केरी जुगत न देखइ,
पेखइ पुर असुर तणु ए

पूछी तेणि एणि परि वाली, पद्मिनी नारीनइ निहाली,
वाली मन अति द्रढ करी ए.
कवण नयर एह पुहवीइ अनि कुंवरी कुण ए छइ कवण तणी,
कारणि कवण हूं आणिउ रे ?
बलि राजा तणा कुलनी कन्या बाणासुरनी ए छइ धन्या,
तनया वरिवा तुह्मि आणिया रे.
लाजइ यादवकुल, कामनि! कूंअरी ए छइ असुरनी.
परणी नइ किहां हूं रहूं रे ?
चित्रलेहा कहइ वाणी, नर ए नवि कांइ जाणि,
सानि परणि न कूंअरी अनोपमी ए ?
भणइ जुगतिइ भेव जनार्द्दन, एहनइ उमथा हूइ परसन,
अनुदिन ध्यान न चूकती ए.

कडवूं १६

देव नइ दानव वैरी तूं जाणि; प्राणि प्रीति न पामीइ.
न परणूं रे असुरकुंआरी.
पूछि नि तारा पितानी पिरि, घरि पालु रे शंबर तणइ,
कांइ न परणे रे असुरकुंआरी ?
इम लाजि रे यादवसाथ. हाथि धरम न लोपीइ.
न परणूं रे असुरकुंआरी.
नारायण नरकासुर मारी नारी वर्या सवि सामटी ए,
कांइ न परणे रे असुरकुंआरी ?

कूड करीनइ हूं आणिउ घरि, पिरि नुहि प्राक्रम तणी ए.
न परणूं रे असुरकुंआरी.
रुक्मिणी परणीया, पूछी रे पिरि, हरि हेला मांहि हरीगया ए.
कांइ न परणे रे असुरकुंआरी !
प्रीति कीजइ कोडि. ना काम आम सु कोइ न आदरइ रे.
न परणूं रे असुरकुआरी
आगि तारा तातना तात जाति जांबुवती वर्या ए.
कांइ न परणे रे असुरकुंआरी !
चडवडी चडी का आवि, रे दासि! जासि हूं पाछु द्वारिका ए.
न परणूं रे असुरकुंआरी.
भणइ जनार्दन, म करु वाद, यादव पुत्र प्राक्रम घणूं ए.
न परणे रे असुरकुंआरी.

कडवूं १७

वनिता वचन सुणी आकुली व्याकुली अंग दलाय;
मल्या मन मेलज्यो ए.
उषा ललीलली पाय लागइ, मागइ वर लीलविलास,
मल्या मन मेलज्यो ए.
सहीनइ वारि कुमारडी. सारडी नाह ! करु रे !
मल्या मन मेलज्यो ए.
आगइ उमयाइ परठिउ सोरठिउ कृष्णकुमार.
मल्या मन मेलज्यो ए.

अनिरुद्ध सइ अंगीकर्युं वर वर्युं कृष्णकुमार.
मल्या मन मेळज्यो ए.
कुमारि मल्या मन साधियां, तिहां बांधियां कङ्कण हाथि.
मल्या मन मेळज्यो ए.
जनार्दन भणइ भलु मोलवी चालविउ चतुर नारि.
मल्या मन मेळज्यो ए.

कडवूं १८.

अनिरुद्ध उपाइ वरिउ; गांधर्व विवाह ता करिउ;
हाथि हाथ मेलाइ. अंतरिक्ष तुंबर गाइ.
लाडली लोचन चलावइ, दृष्टि पाछी न वालइ,
वर मुरकळडइ मुख जोअइ. तेहनइं रूपि त्रिभुवन मोहइ.
मनस्यूं चिहु मङ्गल वरत्यां. वरकन्या क्रीडा करतां.
जोध जालिम घर जोइ, कुंवरीनूं रूप तां नुहि.
रक्षपालइ रानइ सीस नाम्यां. कुंअरी किहि पिरि वर पाम्या?
पुरुष पइखीइडऊं नवि चडतूं. बाणनूं मार्यूं ते पडतूं.
अपराधी अमि, स्वामी! न जाणीइ, केही परि वर पामी?
जनार्दन भणइ, जे गासि, सुख संतति घणी थासि.

कडवूं १९

तिहां बोलइ बाणासुर उरि कोपि चड्यु ए.
कुण छइ रे कुबुद्धिउ कूड! मूढ मरासि दृष्टि पड्यु ए.
राइ मोकलिया मोटा जोध. रोध करइ तु बाधजु ए;

प्राण करइ तो बाण संधाण निशि सांधनु ए.
धसमासिया मोटा योध, रोष करइ धूंधळ पडी ए.
अनिरुद्ध एह स्यूं लि बाप, हाथप्रहारि पायक पाडि ए.
बूंबडी उपरि बूंब, सूब पटइ कोलाहाले ए.
मारइ एकलमल्ल वीर तीर वेगी वळी वळी ए.
आविउ असुरनु राउ. घाउ भोगलनइ भल भाडि ए,
वदइ चतुर नर शूर, उर प्रहारि पायक पडि ए.
मल्लविद्यानि प्रकारि हारि नहि को रण चडयु ए,
आखडिउ बाणासुर राउ. पाउ भडनु लडयडु ए.
राउ मेहेलिउ नागास्त्र बाण; प्राणि बाधु बांहडि ए.
खड्ग मूकि जेणी वारि, पुकारि परधान पाय पडी ए.
जनार्दन भणइ कौमण्ड पण्डि उपाइ कहाविउ ए,
राखेनो रे रूडी पिरि घरि — भूप" आविउ ए.

कडवूं २०

कौभण्ड कहइः—नवि मारीइ. सारी इ वात हूं जाणूं.
कुण छि रि! (पूछइ पिरि धणी.)कुणि तूं मन्दिर आणु?
इसि समय उषा आवियां, भावियां अनिरुद्ध जोडि.
कहु नइ, एहनइ कुण मरणासि? लागसि राउनइ खोडि.
प्रधाननइ सूंपी संचरिया, पुहता पोतानइ आवासि.
राजरीति रूडीइ राखेज्यो; नहितरि नासी जासि.
समरी महामाया अनिरुद्धइ. बन्धन छोडावु, काली!

नागपास अति दोहला. एहथी कुण छोडाविं तूं टाली ?
आव्या मुनि नारदजी, तेणि अनिरुद्ध स्यूं वात कीधी.
क्षणु एक क्षमा करी रहेजो, इसी शिखामण दीधी.
ऋषीश्वर कहइ, सुणि, कुंअर ! श्रीवरनइ तेडी लावूं.
सुर दल नइ असुरदल जोडवी जुद्धइ तुज मेहेलावूं.
चित्त मांहि सिद्ध चिंतवी चुहु घडीइ द्वारिका आव्या.
रुक्मणीमन्दिरि जई रह्या, अनिरुद्धनी शुद्धि लाव्या.
अद्धर वीर ऊठाव्यु जुगति कुणइ ? कांइ नवि सीधुं.
भणइ जनार्दन, नारायणनइ नारदि जई जाण कीधुं.

कडवुं २१

नारायणि नारद पूछिया, कहु किसी हुइ वात ?
कुण कुबुद्धि हरी गयु ? कुणइ कीधी उपघात ?
कुंअर काराग्रहि बांधिउ. तुम्हि जई छोडावु, वैकुंठनाथ !
असुर तणइ घरि बेटडी, ते क्षण न मेहेलइ हाथ.
पूरव वात विशेष कहीः तिहां ग्रह्यु एकलडु बाल.
उषामन्दिरथु आणियु. कोप्यु बाणासुर काल.
रुक्मणी आंखि आंसू भरइ, करइ कृष्णनि राव.
दया, दामोदर, किहां गई ? रहु एकलु बाल; छोडावि.
कामिनी वचनि करुणा करी पूरिउ शङ्खनु नाद;
अनङ्ग अक्रूर उद्धव तेडाव्या; सेन पडाव्या साद-
गज रथ तुरङ्ग सेन संघाति, जातां जुग वही जाइ.

नारद भणइ, गरुडि चडी नइ पुहचउ क्षण इक माहिं.
पनर लाख योध गरुडि चढाव्या. गडगडिया दिगन्त.
वैश्वानरि तिहा युद्ध करियूं. शमाव्यु स्वाहाकन्य.
चक्र चालवी चतुर्भुज चाल्या. धूज्या शेषना सँव.
गरुड तणीइ ता पाख वागि, छूटा कुअरना बन्ध.
श्रोणितनगरि नारायण आव्या, बोलाव्या बहु जन.
तेणइ बाणनि जाण कर्यूं. इम कहि भ्रवाडी जनार्दन.

कडवुं २२

पहु ता रे पुरुषोत्तम वाडीइ ऊतरिआ,
टरिया रे यादव योध तरुवरि तरवरिआ.
परधाननी पिरि रे हरिइ उद्धव चलाव्या.
आव्या रे असुर सभा माहा बाणासुर बोलाव्या.
आपइ रे उषा अनिरुद्ध हरिनइ मनावी.
मारसिइ रे, मूरख, तुहनइ कुबुद्धि का आवी ?
बोल्यु रे दैत्यनु रा, ए मरुआइ म्हारु जाण्यु.
मरसिइ रे आलि, कालि कादचु अहिं आण्यु.
उद्धव ऊचरइ रे, अन्ध ! आखि का फूटी ?
चक्रप्राहारि रे ताहारी बाहडिजासिव टूटी.
कोप्यु रे दाणव दैत्यनइ बोलावइ.
चउद कोडि रे योध युद्ध करेवा आवइ.

उद्धव बोलइ रे, असुर! धर्म कशु नवि जाणु.
आमि विटिइ रे आव्या. तमो दूषण कां आणु?
किहां केसरी रे किहां कुरङ्ग? तमे युद्ध छांडु.
भणइ जनार्दन रे, सूर, हरि स्यूं रण नवि मांडु.

फडवूं २३

उद्धव वलिया उतावला रे. बाउला यादव योधि
वाडी वन उखेलियां रे, ेलियां करी विरोध.
झालर भेरी वाजियां रे; गाजियां गहिरां नीसाण;
दृष्ट चडचां दल दडवडचां रे. कायर पडइ पराण.
माणइ वलिया चलावीया रे; आवीया सुभट संग्रामि.
चौद कोडि राणि पाडीया रे अनङ्गि एकि ठामि.
पोलिआ पाडि बूंबडी रे, चडवडी चढाउ वाहार.
प्रथम पला ते पाडिया रे यादवि विसमि प्राहारि.
कौमण्ड प्रधान नीधीआ रे, बांधी आले मुज हाथि.
त्रीस कोडि मोटी मूछना रे चडशि ताहारि साथि.
स्वामिवचनइ सांचर्या रे करी प्रधान विचार.
सुर असुर बिहु दल मलां रे म्यलां ते रण मुझारि.
योधइ योध भला भडि रे, पडि न पाछा पाय.
आयुधि वटका अङ्गना रे करता यादव घाइ.
कौमण्ड राणि रोह्यु रे, मोह्यु देखी मुरारि.
भीती आणी पाछु वल्यु रे, पुहुतु नयर मुझारि.

अनिरुद्ध एणइ राखिउ, दाखिउ पहिलु उपगार;
जनार्दन भणइ, जातु मूक्यु रे. यादव करि जयकार.

कडवूं २४

कीभण्ड भागु जाण्युं, आणु रोष अपार.
भलभला सुभट चलाव्या बाणासुरि तेणी वारि.
समरतां शंभु आवीया, लावीया स्कन्द कुमार.
भूताउलिनु पार न जाणूं; रह्या करइ फेतकार.
सांगि लई शंकरसुत चडिया, भडिया अनङ्ग साथि.
एक एकनइ रही पचारइ, मारइ मल्ल स्या हाथ.
अन्तरिक्ष नारद ऋषि आवइ, 'भला, भला, भड!' भाखइ.
जेह जोधनइ नमता देखइ, तेहनइ बोलावी राखइ.
हरिहरना कीकलडां भडियां, खडहडिया तिहां सांगि.
अमर अन्नोअन्नि इम उच्चरइ, के केहे सि भागि ?
अग्निबाण अनङ्गि पूरी चूरी षणमुख सांगी.
भङ्ग पड्यु; भूताउल नाठूं; आवइ नाहि को आगि.
अग्निशर कार्त्तिकेयइ टाल्या, वाल्या योध पिरि करी.
भणइ जनार्दन, कृष्णकुमार मारइ संग्राम परहरि.

कडवूं २५

त्रिपुरारिइ ताव चलाविया. आविया अठोत्तर सय व्याधि.
यादव योधनइ जई चड्या. ट्टवड्या, नहि कि साध्य.
टाढ चढि नि उटांटियु, वेलाज्वर ते थाइ.
एकांतर ज्वर नि त्रिहु, चोथिउ ज्वर जणाइ.

सेना आकुली व्याकुली; नहि कोनइ शुद्धि.
योध रण मांहि वलवलि, विष्णु विचारि बुद्धि.
वज्रइ ज्वर मारिया, ऊतारिया, करइ पोकार.
मार तां राखु, माहवजी ! नहि आवूं बीजी वारि.
त्रिकमइ त्रिहु भागि विहसियु, मेयु हीउ नाम.
उपाहरण जे सांभलइ, तिहां म करस्यु विश्राम.
ज्वरनी जाति नासती; दहोदिस व्याधिनां रूप.
पूंठि न जोइ, पन्यि पुलइ जाणी मारासि भूप.
सार सत्तायत शिव तणु, भागु पाछु पुलाय.
पूंठि प्रद्युमन पीडता दहु दिशि नाठा जाय.
इस्यूं चरित्र जे जाणासि, माणसि निर्मल गात्र.
जनार्दन भणइ, सुणइ मानवी, दुख नावइ अणुमात्र.

कडवुं २६

बाणासुर बलि बोलतु भवि घोलतु रोसि अपार.
भाजी भरुआड भूकउ करूं. फेडूं एहनु ठार.
टाटर टोप शिरइ धरी, ढाली हाथइ लेस्य.
अङ्ग रङ्गाउली जीवरखी, करी शर धनुष ग्रहेस्य.
ढोल ददामा गडगड्यां, पड्या नफेरीना नाद.
गज गूडिया, हय पाखरिया; सुभट राणि करि साद.
असुरनइ आंगणि दल मिल्यां, भिड्या असुर सुर गात्रि.
बाणि सहस्र बाणां पूरियां, चूरियां कृष्णइ तिणमात्र.

बाणासुरनी बाहडी, पडी य चक्रनइ धाइ.
रापि रापि वे बाहडीं, पाय लागी असुरनी माय.
इसि समइ शिव आविया करता शूलि संग्राम.
सारङ्ग श्रीरङ्गइ धर्यू, खलमलि खिति ए ठामि.
वृषभ गरुड बि झूझिया, धूर्जिया त्रिभुवन एव.
जोवा जक्ष किन्नर वल्या, मल्या त्रेत्रीस इ कोटि देव.
एहवि विधाता आविया, बोलाविया हरि हर बेउ.
मेली मिलावी कुटुम्बं कर्या. जनार्दन भणइ, हुउ स्नेह.

कडवु २७

मल्हाइ वदता वारीया हर गोपाल रे.
ऊतारीया टोपसनाह. ,,
बन्ने एक जि जाणिया, ,,
आणिया हरख अथाह. ,,
बाणासुर तिहा आवियु, ,,
भावियु नरपतिराय. ,,
मया करु अम, माधवा ! ,,
पीडि शमावि, शंकर राय ! ,,
महाकाल महेसि थापियु, ,,
आपियु अवन्ती वास. ,,
जनार्दन भणइ, तारियु ,,
टालियु भवनउ त्रास. ,,

कडवूं २८

यादव राय थया रलीयात, श्रोणितपुर मांहि आविया ए.
वधावइ मोतीइ मुरारि, नारि असुरनी उच्छव करइ ए.
आविया उषा अनि अनिरुद्ध, लीघ हरिनइ सांइडां ए.
हइडां हसियां तेणइ वारि, मारसुत इम ऊचरि ए.
जीवाडु, जि यादवराय, घाय प्रहारि जे जोध पडचा ए.
घडा उषाना उपरोधि योघ श्रीरङ्गि ऊठाडिया ए.
उमया उच्चरइ, कोमण्ड। मण्डप मङ्गल चूरि रचु ए.
पचु चरु माहि कंसार; मारकूंअर उषा परणइ ए.
जनार्दन भणइ, ए भेद, वेद पुराणि वखाणइ ए.

कडवूं २९

उच्छव असुर माडइ कोडि, फेरइ छइ कङ्कोतरी कोडि,
आवइ छइ साजननी जोडि, राइ सैंघन्धी तेडाविया ए.
नाना चित्रशालीं लखाय, चटकइ ऊलेच रचाय,
तोरण नीलेरां बन्धाय वरजी तुरङ्ग पलाणिया ए.
आव्या ए मण्डपनि द्वारि, ढालइ छइ चम्मर च्यारि,
पूंखइ असुरनी नारि, वारि करवइ नामिया ए.
करोव्या मधुपर्कनूं पान, जोसी उचरइ पलमान,
समय: वर्तइ, सावधान। घटी लग्ननी साचवइ ए.
वरतियों तिहा मङ्गल च्यारि, आपइ राजा दान अपार,
करइ विप्र वेद उचार, अनिरुद्ध परणी ऊठिया ए.

पहिरइ पिहिरामणी सार, आप इ गज रथ तुरि भण्डार,
संतोष्या श्रीपति मुरारि, सार करी उपा तणी ऐ.
साजइ कुङ्कुम केसर घन; छाजइ साजन जादव जन;
भणइ त्रवाडी जनार्दन, नर नारी मन भाविया ए.

कडवूं ३०

यादव जुगति चलाविया, संतोपिया सजन साथ.
उपा चाल्यां सासरइ दादा देइ आसीस.
पनुती चाली सासरइ सजन देइ आसीस.
दासदिकोलां आपियां. तारे किशां जोईइ आभरण!
माताकृपाइ सर्व छइ, पितानीइ पूरी मारी आश.
साहिअर बोलावी निसरी जनार्दन भणइ एव.

कडवूं ३८

उपा रे चालणहार, सार करइ सहियर तहिं ए.
किम मलसू रे फिरि! दूरि सासरूं सहियर तणूं ए.
तुम आगलि करतां गुझ, बूझती सवि तुहनइ कह्यां ए.
तुम्ह मेहलां सज्जन समोह, मोहि पडी महिला घणूं ए.
कर जोडी कौमण्ड कहइ, जोईइ ते स्यु अम्ह कहनि ए.
तिहारि नयणे नीर भराइ, थाइ ते अति आकलु ए.
सहू मिली लागइ पाय, माय मां ऊनारजु ए.
संभारजु द्वारिका माहिं, राइ बाणासुर तारजु ए.
मेहालियां तिहां श्रोणितपुर, दूर वर बहु बोलावियां ए.

कडवूं ३२

पञ्च शब्द मृदङ्ग वाजइ पुरि, श्रीरङ्ग आव्या उपा अनिरुद्ध स्यूं.
मंगल दीप दिइ घरि घरि, श्रीरङ्ग आव्या अनिरुद्ध स्यूं
रुकमणी अति रलियात थाय, श्रीरङ्ग आव्या उपा अनिरुद्ध स्यूं.
सोल सहस्र मनि हरख न माय, श्रीरङ्ग आव्या उपा अनिरुद्ध स्यूं.
खडायत विप्र निम्बासुत बोलि, श्रीरङ्ग आव्या उपा अनिरुद्ध स्यूं
नहि को पराक्रमी कृष्ण तोलि, श्रीरङ्ग आव्या उपा अनिरुद्ध स्यूं
फल गोचर लक्ष्मीनु वास, श्रीरङ्ग आव्या उपा अनिरुद्ध स्यूं
जनार्दन भणइ, स्वामी पुरइ आस, श्रीरङ्ग आव्या उपा अनिरुद्ध स्यूं



प्रबोधचिन्तामणि.

दूहा.

पहिलऊं परमेसरु नमी अविकल अविचल चित्ति
समरिसुं समरसि झलिती हंसासणी सरसत्ति.
मानस सरि जां निर्मलइ करइ कुतूहल हंस,
तां सरसति रङ्गइ रमइ जोगी जाणइ अंस. ३
सेवीता अठ रस विरस इक्काइक्कइ जोइ.
नवमउ जिम जिम सेवीइ, तिम तिम मीठउ होइ.
नवमा रस! अमरिस म धरि, आठि आणिउ छेहि.
गुरुया! तूं गुणि अग्गलउ, मुहवाडि मण्डिउ तेहि.
जे घटसुद्धि अ जाणता करइ कथा कल्लोल,
पद्दतूं घर ते परहरी गिरिसिरि मण्डइ टोल. ५

वस्तु

नाण निरुपम नाण निरुपम जगह उवयारु.
घटु भितरि निर्मलु जासु, रोग सवि नाणइ नासइ.
नर रक्खसि वेगलि. सयल सिद्धि निवसन्ती पासइ.
पुण्य पाप बि भय टलइ. दीसइ मुक्ख दुयारु.
सावधान तां सांभलउ हरखइ अंस विचारु. ६

चउपई

तेजवन्त तिहु भुवन मझारि परम हंस नरवर अवधारि.
बुद्धिमहोदधि, बहु बलवन्त, अकल, अभेउ, अनादि अनन्त,
बाधिउ नहि सु त्रिभुवनि माइ, नान्हड कुन्थुशरीरि समाइ.
दीपति दिणयर कोडिहि सिसिउ, जिहा जोऊ तिहां देवऊ तिसिउ.
एक भणइ एह जि अरिहन्त, एह जि हरि, हर, अलखु अनन्तु.
जिणिजिणि जागिउ तिणि तिम कहिउ, मनइन्द्रियवलि ते नवि ग्रहिउ.
काठि जलणु जिम, धरणीहि नेहु, कुसुमिहि परिमलु, गोरसि नेहु,
निर्लिप्ति तेऊ जिम, तारकि नीरि, तिम ते निवसइ नगरशरीरि.
राणी तासु चतुर चेतना. केता गुण बोलऊ तेह तणा ?
राउ राणी वि मननइ मेलि फिरि फिरि करइ कुतूहल केलि.

नवजुव्वण, नवरङ्गी नारि, सामलडी, सहजइं सविकारि,
माया रमणी रमन्ती रली अन दिवसि नरवरनइ मिली.
नरपति निरखइ तेहनूं रूप. नयणबाणि तिणि वींधउ भूप.
तं जाणी राणी वीनवइ. ' स्वामी ! उघट काइ पाउ ठवइ ?
रूयडी रमणी गयगामिणी देखी भुल्लउ, तिहुयणधणी !
अमृतकुण्डि किम विष ऊछलइ ? समुद्र थकी न खेह नीकलइ.
सरवर माहि न दव परजलइ धरणिमाहि शेष न सलसलइ.
रवि किम वरिसइ घोर अन्धार ? झरइ सुधाकर किम अङ्गार ?

जइ तूं चूकिसि देव ! विचार, लोक तणी कुण करीसि सार ?
नारि भर्या छइ सघला देस. चञ्चल चमकइ सवे सुवेस.
ठामि ठामि जइ मांडीसि प्रेम, जातइ दिवसि न देखउं खेम.
आभ छांह, भीति जाजरी, वेटी धन, भोजन बाजरी,
ठार नेह, असतीनु नेह, दैव देखाडइ छहिलउ छेह.
जे जे आगइ एहनइ मिल्या, राय, रङ्क जिम ते सवि रुल्या. १८
म करि अनागी स्त्री वीसासु. स्त्री कहीइं दोरी विण पासु.
जे खीलामण तिणइ कही, भरिया घडा उपरि ते वही.
राखीतइ राहडि ए रीति रहिय सुरमणी रांनइ चिति.
ए वडु दाबु सकी नवि सही चेतन किहिंइ लुकी नइ रही. २०

सउकि तणउ जइ दह्यु संतापु, तउ माया मांडिउ बहु व्यापु.
जिम जिम राजा माया कलिउ, तिम तिम तिहुयणधणी अप टलिउ.
तउ तिणि माडी वसिवा मही कायानगरी नवबारही.
जे हूंतउ जगपति निर्दोष, तिणि तेतइं मानिउ संतोषु.
ज्ञानकला तिणि तिम ऊलवी, नगरूं न सकइं जिम जाणवी.
मन रहिं दीधइ तउ व्यापार; आपण ग्रन्थ ऊतारिउ भार. २३

मन महितउ मइलउ छइ मूलि. राजकाज तिणि कीधां धूलि.
मुहि मीठउ नइ विणठउ चित्ति, माया सिउं नितु मांडइ प्रीति.
वानरडउ नइ वींछीइ खाधु, दाहमरिउ दोवानलि दाधु,
चडिउ सीचाणउ चरडह हाथि; जूटउ मिलिउ जूआरी साथि, २५

वैसानर नइ वाविकरालु, विषतरु सींचिउ विसहरलालि,
मुहतउ मानिउ राणीइ चलइ, वणऊं घणेरऊं तउ झलफलइ. २३
मुहतइ माया केरइ साति ऋलवन्ति बांधी पापह पासि;
राउ फेडी कीधउ रेवणी; आपणपइं थिउ राजह धणी.
आपणि दीइ, ऊद्दालइ बहु; इच्छां बांघइ, छोडइ सहू;
जं जं भावइ तं तं करइ. राउ सुपेट पराभवि मरइ.

मननइ राणी एक प्रवृत्ति; बीजीं बहुगुण नारि निवृत्ति. १
प्रवृत्ति जणिउ मोह सुत एक, निवृत्ति तणइ पुत्र विवेक. 2
प्रवृत्ति स्वभावि ऊआंछली राजकाजि हींडइ आकुली.
प्रिय सिऊं प्रीति तिणि निर्वही. सरिसइ सरिसऊं राचइ मही. 3
तिणि वाहिउ मन त्रिभुवनि भमइ; क्षणउ समाधिइं नवि वीसमइं.
जीव विणासइ, भासइ आल; परवनवनिता लागउ दाल.
देखी वसि आविउ ए कन्तु प्रवृत्ति भणइ जोई ए[illegible]न्त.
"निवृत्ति अछइ तुम्हारइ नारि, धुर लगि ते अम्ह मारगहारि.
सुत विवेक जे अछइ तेहनइ, किरि जाणु ते पाणि मोहनइ.
रातिदिवस ए मनि अन्दोह, किम ऊउरीसि भागडउ मोह ? 3
सऊकि आगि भडकइ प्रज्वलइ; विणसइ वंस, न धूंउ नीकलइ.
आगि ऊल्हाअइ एकइ वारि, सउकि संतापइ सातइ वारि.
तं निमुणी मनि कीधउ कोप. निवृत्ति छाडिया हुउ निरोप.
रानउ कुणिहिं न भाजइ रेस. मानिउइ बिइ लीधु विदेस.

मज प्रवृत्ति माया त्रिहु जोड रा वाघी सवि पूरइ कोड.
सीख संभारी चेतना तणी रुलिउ राउ रोइ इम भणी.५

वस्तु.

सुणि नि राणी ! सुणि नि राणी ! हियइ वालम्भि !
नउं तिहुयणसामिणि सोमवयणि गुणरयणी लद्धिय ५
बहुबुद्धि हितनिलउ, दुइ दैवि पुण दूरी-किद्धिय.
ऊणउं अधिकउं सहू खमी करि अम्ह भणी पसाउ.
गुणि संपूरण गोरडी देवी ! हिव देवाउ.

पद.

सांभलि चेतना ! अम्हि थया छउं निराधार,
मन माया बिइ दूहविया. ध्रुव०
रीती कहन्तां लाजीइ. करि करि कांइ अम्ह सार.
दीरघ रोस न बज्झइ. तू सहजइ सुविचार. सांभलि० ४
राणिम त्रिहु भुवनह तणी दीठी निय नयणेहि.
हिव हूं काम करावित तूं विण जण जण गेहि. सांभलि०
कोइ, कन्हइ देखउं नहीं जेह संभालउं गूझ.
अणबोलिउं सकउं रही. कहूं तु हसइ अबूझ. सांभलि०
दोहिली देवी जीवनी विअ करु पाहर धाइ
तू किम उवेखी रही मइ पखडइ अगाधि ? सांभलि०
तइ लाधूं ए मिम मइ हूंनि छांडणहारि.
इमइं एक विणासडइ किम प्रिय छांडइ, नारि ?. सांभलि० ४

पेट भरइ परिहासडइ परम हंस भूपाल.
मानिनि ! मूकी रूसणउं करि करि कांइ संभाल. सांमलि०
चेतन पभणइ. 'तुम्ह मिली माया. मइ स्यूं राज ?'
जिम सहावइ तिम सहउ मन मुहतानउं राज.' सामलि० ४

चउप्पई.

निर्वृति हुई, जउ गई निवृत्ति, मन रहिं निचरइ कहइ प्रवृत्ति,
'दिवरावीइ बेटानइ राज. फलउ मनोरथ महारउ आजु.'

जाति.

वाजियडा गुहिर नीमाण, मोह कुमर हूउ रानिउ.
वयरीरा भसकइ माण, आण फिरी जगि मोहिनी.

चउप्पई.

माडी मोहि अविद्या नामि नगरी नगुरा, हियडा ठामि.
अविद्या नगरी. गढ अज्ञान, तृष्णा खाई; मोटू मान,
कदाचार कोसीसा ऊलि. च्यारि इ दुर्गति वहितो पोलि.
विषयव्याप वारु आराम. मन्दिर अशुभा मन परिणाम, ५०
कामासन जे कह्या पुराण, चउरासी चहुटा ते जाणि.
भूरि भवन्तर सेरी हुइ. कूडबुद्धि ते घरि घरि कूइ.
ममता पाद्र तणी रखवालि. कुमत सरोवर; मिथ्या पालि.
निर्विचार निवसइ तिहा लोक. थोडइ उच्छव, थोडइ शोक.
तेणि नगरइ इकि धाइ धसइं, इकि ता रेहड रेहड हसइं;

इकि गाइ, इकि वाइं तूर; इकि आफलइं रणङ्गागि सूर;
इकि नाचइ; इकि झूमइ माल, घात करइं इकि ठोकी गाल.
इकि करइं कलकल जूबटइ; इकि न्वार्वर घालइं चहुअटइ.
इकि नेसालि पढावइं छात्र; एकाकार करइं इकि जात्र.
ईणी परि लोक तणइ मुहवाइ तिणि पुरि किमइ न नीगमण थाइ.
राज करइ तिहां मोह नरिन्द मनकुल केरउ पूनिमचन्द.
मोहनइ रागी दुर्मति नामि, बेटउ बलवंत जेठउ काम.
राग द्वेष त्रि बेटा लहुआ. निद्रा अधृति मारि ए धूभा.
मिथ्यादर्शन मुहुनउ जाणि, आटइ कर्म ते रातेराण.
क्रोध मान दम्भि सिउं लोभ चिहु महाभर दीरघसोभ.
मोह राय अंछि रागि अभङ्ग. सात व्यसन ति सात इ अङ्ग.
निर्गुणसंगति तेहनी सभा. दुरित सिंहासणि दीपइ प्रभा.
वाळमित्र वाल्हउ चार्वाक, रातिदिवस जेहनउ घरि थाकु.
छत्र धरइ अमरिखु चउसाल, करइ अरति रति चामरढाळ.
दल्वइ आलसु रूडइं काजि. छद्म पुरोहित सरलइ राजि.
करइ तलारउं संभर प्रमाद. सेल्लहत्थ मद, मोटउ नाद.
फिरइ टाचेरी परपरिवाद. हास शोक माल, निउ वाद.
पाखण्डी पोलिइ पडिहारु. कुकवि सवे कीधा सूआर.
सकल परिग्रह ति भण्डारु. कलिकन्दल कलिपउ कोटारु.
असत्यवचन पणहारी तेह. अभिनिवेस थइया इतरे ह.
वीरकौरि मोह चंडिउ तिम प्राणि, जलनिधि जिम जेठइ ऊधाणि.

मोहराय रागेम सामली हुइ सु निवृत्ति ऊनावली.
जिहां गोठ तिहां राति न रहइ. विणु विसामा वाटइ वहइ.

सरस्वतीधउल.

विप्रपुरी ऊरी गई ए देखइ कीजता जाग.
'बलवन्त बडुइ बापडा ए बुरकइ नींधला छाग.
बुरकइ नींधला छाग. लाग न इहा अम्हारउ.
मोह तणी धूय मारि इहा तेह पगपइसारउ.
ऊनावली वली ते चाली भमती देसि विदेसि
रहण रेसि जोयइ जोगेसरि दिन नवनवइ निवेस.
'न्हाइ के जालि मोगालि ए भखइ कन्द नइ मूल,
त्रोडिय तरुना पानडा ए पुडि करि प्रोइय सूल.
पुडि करि प्रोइय सूल. अजि अ न बुझइ भवर्मा ग.
जीव अमीव न ऊलखि. इम्या अछइ अति वांधा.
इहा न देखउं रहण सरीखउं.' तउ चाली अति खीण.
फिरउ फिरन्तीइ प्रवचननगरी गुरुई पामी तिणि.
पुर दीठू रलियामणू ए. वन पुण आत्माराम.
कुमरु भणइ.'क्षण वीसमउ ए शमदम तरु अभिराम.'
शमदम तरु अभिराम, बिहु बइठा तस छाया.
विमलबोध कुलपति देखी वन्दइ जई पाया.
निवृत्ति भणइ करजोडी 'महरिखि निरतउ ज्ञानि निहालि.
ए बेटउ ह साथि विलसन्तु देखीस केतइ कालि?'

आंतासहं मिणि ओरदइ ऊलटइ टहकइ दीप
ते मइ तिमिरइ मेल्हीइ, दीप तणी कुण कीप!'
मारी प्रति बोल्लइ कुमर आणन्दिहिं आलुद्ध.
'अमी न मीठउं, तउ वयण, कुण सकर, कुण दुद्ध!
वस्तु.
माइ गुरुई, माइ गुरुई, माइ नमणिअ.
मा तीरथ मूलगूं. माइ देवि अरिहन्तइ मनिअ.
मा न घटइ दूहवी, स्मृति पुराण आगमि जे वण्णिअ.
मा रति प्राण दिई नि पुंण इक्केक्कइ उपगारि
माकह उसड्ढल हुई कोइ न सकि संसारि.'
चउपई.
धन धन कुमर विवेक वखाणि, माइ चउथी जेणि प्रमाणि.
चालिउ मल्लपु वीर विवेकु अरिउच्छेदण, छावउ छेकु.
आवइ नर नारीनी कोडि, सरपति सेवइ सवि कर जोडी,
जोगी जंपइ निरन्तर नाम, तिणि ते रा रहिं किद्ध प्रणाम.
सदाचार सहिनि सुविच.र जाण राय जव दिट्ठ कुमार,
गुरुउ जाण। किद्ध पसाउ; सविहउ गण सिरि दिद्धउ ठाउ.
भणइ सहू तां त्रिभुवनस्वामी. 'मइ ए परखिउ प्रथम प्रणामि.
विण उपरार न एहनइ काम. इणि वाधीसि अम्हारउं राज.'
पामिइ परमेसरह पसाइ मानिउ सविहु सुर सुरराइ.
मानिउ लोकइ लीलविलास तिणि नगरइ माडिउं थिर वास.
अवसरु जाणी रा वीनवइ. 'तइं तां जीता वयरी सवइ.

एक अनी लुझ चिन्तइ द्रोह अविद्यानगर राउत मोह.
बेटे, तरु जिम, ते विस्तरिउ. हय गज साहणि पुण परिवरिउ.
रणि सूरउ, पूरउ भण्डारि, समरथपणइ दमइ नर नारि.
तपसी सवि बीहइ तसु नामि. भुजबलि भागा ऋड संग्रामि.
इहां इन्द्रादिक तुम्ह ओलगइ; परइ गया पुण तेह पय लगइ.
तिहां तुम्हारी आण न फिरइ. विरूऊ करतउ कोइ न डरइ.
ब्राह्मण मागस करइ विकर्म; पशु मारइ, पोकारइ धर्म.
रांवे, जे वडु नायक, आथमइ, घरि घरि सहू इ जासक जिमइ.
एकि भणइ रे मारउ, हरउ, परभवनउ भउ मनि कांइ धरउ ?
मूकां तृणां चरइ, वन वास; न वरइ कहिनउ किसिउ विणासु;
ते मृग उपरि आयुध वहइं, 'अम्ह रहिं सरजिउ ए' इम कहइ.
स्त्री लगइ वाधइ संसार. स्त्रीदानि किम सुकृत अपार ?
मधु अपवित्र, नहीं ए भ्रन्ति, तिणि पामी पञ्चामृत पन्ति !
न्हातां अणगालि नीर नकाणि. नाग नमइ नइ मारइ प्राणि.
जीवयोनि दवि सघली मरइ; दव दीजइ तिहां पुण्य ह वरइ !
एह पराभव भागा भणी मइं तूं कीधउ आपण धणी.'
'तासु राम गाढऊं गहगहिऊं,' शुभध्यान नरि आर्षी कहिऊं.

'जगपति भणइ. 'वीर ! सुणि वात. अम्ह रहिं मोह नथी अज्ञात.
आगइ मूकिउ ए निर्दली; खूंटी द्रो जिम, वाधिउ वली.
भात रामनइ पेलइ पारि मुक्तिदुर्ग छइ लोक मझारि.
जग सघलऊं तसु कारणि ग्रहइ मारग ज्ञानी विण कुण कहइ ?

कुलपति कुमरु आलोकिउ ए आपणि घरी उच्छङ्गि.
लखिं लक्खण ऊलरुया ए. ऊलट माइ न अङ्गि.
'ऊलट माइ न आङ्गि. हरखि महरिखि इम बोलइ.
' उदयवन्तु ए कुमरु. अवरु नरु एह न तोलइ.
जइ पुण एकीसि तउ वीसासइ वचन अम्हारउं मानि.
मनह मेल पासइ नं कहीयइ, तं सहू रहीयइ रानि.

चउप्पई

माहरइ सुमनि नामि छइ कुमरी, ते नमीयइ नरि किंनरि अमरि.
ते जइ परिणइ वीर विवेकु, पूछ तणउ तउ आपीमूं छेरु.
शशी विण पूनिम लीजइ वाही, पूनिम विण शशी खण्डउ थाइ.
सुकुल पुरुष, सुकुलीणी नारि, बिहु जोडी थोडी संसारि.'
.निवृत्ति भणइ.'तुम्हि बोलिउं किसिउ'प्रिय ऊलथ वेदइ उपदिसिउ.
वेवर माहि ए घृत ढलिऊ. थाहर जोता सगपग निञ्जिऊं.
वेवाहिणी वेवाही रङ्ग!' परणिउ कुमर सु. कीधउ जङ्ग.
निवृत्ति भणइ.'हिव महरिखि! भाखि, पसरइ जमाइ जिम सइ साखि.'
कुलपति बोलइ. 'म धरि संदेह, विरूआ सविहउ आविउ छेह.
इणि नगरि छइ अरिहन्तु राय, वयरी सिरि दिइ डावउ पाय.
चउसठि इन्द्र करइ तसु सेव; कोडिसहू पय प्रणमइ देव.
मुक्ति भुक्तिनउ ते दातार. भुजबल तासु न लाभइ पार.
मणिमय त्रिगडइ तेहनउ वास. त्रिगि छत्र सिरि धरियाँ तास.

यां वाजइ नीसाण. धन अ-लम्ब पुण गयणप्रमाण.
रु महीयलि झलहलइ. इति तणूं तिणि नाम मिटलइ.
थाइ अवोमुख सवइ, कनककमलि ते पगलां ठवइ.
पीयां जाणी हरइ. जई विवेक तस पग अणसरइ.
ा तूठइ एह सरीसि कीज; रिपु भांजी भोगवीसि राज.'

पतिबोल इ हियडइ धरी निवृति (वहूनि लेई संचरी.
ती प्रवचनपुरी मझारि; जई रही सद्गुरु आधारि.
णि बोलाविउ ताम कुमार. 'हिव तु तुसनइ आविउ भार.
इ दिखाडिउ आपण छेह. जे छांडइ तेह सिऊ स्यु नेह?

दुहा.

राउ निरंजण इणि नयरि, ते तऊं थिरु अ.ाहि.
मोह महाभड भंजिवा अवरु न जोईसि साहि.
भेट घाट जोईइ नहीं; जोईइ अविहड भाउ.
एह राउ वसि आणिवा बीजउ नत्थि उपाउ.
रायह अवसरि वीनवे मोह तणी सवि वत्त,
जिम आपण पग-काढिआं, जिम तिणि राणिम पत्त.
एकमना ए ओलगी खोल्हवि मानउ दाह.
नहितरि तऊं बेटा तणउ अम्ह रहिं केहउ लाहु?
जिणि तरुडालइ वीसमिउ गरडस गरुड समोडि,
चिडी चिडा ते चूंथाइ ए हरिवाहन खोडि,

आवासहं जिणि ओरडइं, झलकइ लहकइ दीप
ते मइं तिमिरइ मेल्हीइ, दीप तणी कुण कीप?'
माडी प्रति बोलइ कुमर आणन्दिहिं आलुद्ध.
'अमी न मीठऊं तउ वयणं, कुण सक्कर, कुण दुद्ध?

वस्तु.

माइ गुरुई, माइ गुरुई, माइ नमणिअ.
मा तीरथ मूलगूं, माइ देवि अरिहन्तइ मन्निअ.
मा न घटइ दूहवी, स्मृति पुराण आगमि जे वण्णिअ.
मा राहि प्राण दिई नि पुण इक्किकइ उपगारि
माकह ऊसङ्कल हुई कोइ न सकि संसारि.'

चउपई.

धन धन कुमर विवेक वखाणि, माइ चउावी जेणि प्रमाणि.
चालिउ मलपतु वीर विवेकु अरिउच्छेदण, छावउ छेकु.
आवइ नर नारीनी कोडि, सुरपति सेवइ सवि कर जोडी,
जोगी जपइ निरन्तर नाम, तिणि ते रा रहिं किद्ध प्रणाम.
सदाचार सहिनि सुविचार जाण राय जव दिट्ठ कुमार,
गुरउ जाणी किद्ध पसाउ; सविहउ गण सिरि दिद्धउ ठाउ.
भणइ सहू ता त्रिभुवनस्वामी. 'मइ ए परखिउ प्रथम प्रणामि,
विण उपकार न एहनइ काम. इणि वाधीसि अम्हारउं राज.'

पामिइ परमेसरह पसाइ मानिउ सविहु सुर सुरराइ.
मानिउ लोक्इ लीलविलास तिणि नगरइ मांडिउ थिर वास.
अवसरु जाणी रा वीनवइ. 'तइं तां जीता वयरी सवइ.

एक अनी तुझ चिन्तइ द्रोह अ.विद्यानगर राउत मोह.
बेटे, तरु जिम, ते विस्तरिट. हय गज साहणि पुण परिवरिउ.
रणि सूरउ, पूरउ भण्डारि, समरथपणइ दमइ नर नारि.
तपसी सवि बीहइ तसु नामि. भुजबलि भागा भड संग्रामि.
इहां इन्द्रादिक तुम्ह ओलगइ; परइ गया पुण तेह पय लगइ.
तिहां तुम्हारी आण न फिरइ. विरूऊ करतउ कोइ न डरइ.
बाह्य मागस वरइ विकर्म; पशु मारइ, पोकारइ धर्म.
रवि, जे बहु नायक, आथमइ,घरि घरि सहू इ नासक निमइ.
एकि भणइ रे मारउ, हरउ, परभवनउ भउ मनि कांइ भरउ ?
मूकां तृणां चरइ;वन वास; न वरइ कहिनउ किसिउ विणासु;
ते मृग उपरि आयुध वहइं,'अम्ह रहिं सरजिउ ए' इम कहइ.
स्त्री लगइ बाधइ संसार. स्त्रीदानि किम सुकृत अपार ?
मधु अपवित्र, नहीं ए भ्रन्ति, तिणि पामी पञ्चामृत पन्ति !
न्हातां अणगालि नीर नकाणि. नाग नमइ नइ मारइ प्राणि.
जीवयोनि दवि सघली मरइ; दव दीजइ तिहां पुण्य ह वरइ !
एह पराभव भागा भणी मइ तूं कीधउ आपण घणी.'
'तासु रान गाढऊं गहगहिऊं,' शुभध्यान चरि आवी कहिऊं.

जगपति भणइ.'वीर ! सुणि वात. अम्ह रहिं मोह नथी अज्ञात.
आगइ मूकिउ ए निर्दली; खूंटी द्रो जिम, बाधिउ वली.
मात रानइ वेलइ पारि मुक्तिदुर्ग छइ लोक मझारि.
जग सघलऊं तसु कारणि ग्रहइ मारग ज्ञानी विण कुण कहइ ?

समकित संवर तेहनउ भाग वेउ लहइ, जेह मनि वइराग.
मोह थिकु बीहइ सुद्धइ भावि, ते तूं तेणइ दुर्गि वसावि.
वाटरखोपइ तू तेह साथि सखेम तुं बयुरी हाथि.
तिणइ दुर्गि जे वसीसि लोक, तेह न भूख भीडि भय शोक.'

स्वामी वचन विवेक सु करइ. मुक्तिपन्थ भवियण अणसरइ.
वीरचरिइ तसु तूठउ राउ सइ हथि दीधउ गरयु पसाउ.
उत्तमजनमझ दोसि मूकियउ, पुण्यरङ्ग पाटणि पू. कियउ.

बोली.

ति वार पूठि मोकलाविउ स्वामी.
स्वामी तणउ आयस पामी
चालिउ विवेक राउ.
विश्व विस्तारिउ भडवाउ.
तत्त्वचिन्तन महहस्ती हूउ आसाणि.
निवृत्ति प्रकृति बिहु चाल्या जूजूइ सुखासणि.
पियणइ पियाणइ वाजइ परिवार.
जे जे काइ प्रार्थइ तेह रहइं ते वस्तुनू दान अनिवार.
तत्त्वकथा नम्बक ग्रहग्रहइ.
ध्यानध्वज अलम्ब लहलहइ.
साधु तणा हइया गहगहइ.
दुष्ट दोषी तणउ दाटण.
पामिउ पुण्यरङ्ग पाटण.

चउप्पई

तिणि पुरि-राउ विवेक पइठऊं, हर्षित वदनि महामनि दिठउ.
हिव विवेकनी वर्ती आण. लाइया पाखण्डीना प्राण.
तिणि बोलाविउ ज्ञान नखार. 'रामि अम्हारइ तूं वतूं सारि.
अणजाण्या मन देसि प्रवेश, एतु पाले सिद्धादेश.'
ते पभणइ 'हूं करूं प्रचण्डी; त्रिणि वारि पुर खेडीसूं हिण्डी.
जे पइसीसि पुरइ पाखण्डी, ते हऊं दण्डीसूं मोटइ दण्डि.'
तव जोयइ निज रानह छन्द. अविद्यानगरि मोह नरिन्द.
'कुण साहसी,कवण अम्ह दीन! कवण महाबल, कुण बलहीन!
कुण उच्छृङ्खल, कवण उदास! कवणह मनि अम्हनु वीसास!'
जोतां भाउ विवेकु सांभरिउ बोलइ भीनरि दुःखइ भरिउ.
'मूरख राउ अम्हारउ बापु. तिणइ बांडउ कीधउ सापु.
जं मूकिउ जीवतउ विवेकु; मुख भरि दोहिलूं एह जि एकु.
बालपणा लगि मझनइ तेह ऊंदिर साप सरीखउ नेह.
ते आगलि हूं हूंतउ तिसिउ, केसरी आगलि जम्बूक जिसिउ.
तेह गृध्र निश्चइ, हूं मसउ सामइ; लोक हसइ तउ हसउ.
मानव मानऊं ते दादसी, जे जीवइ वइरी वीससी.
चावी चूरी म्हेलिऊं कण्ठि विम जीरविऊं सघरि श्रीकण्ठि;
नितु नितु वहइ सुधाकर सोइ. वयरीनउ भय एवडु होइ.

दूहा.

वहुरउ, वयरी, वल्लहउ, हियइ खटक्कइ तिण्णि.
वीसारतां न वीसरइ वसतां ऊवासि रात्रि.

जे एकू वयरी करी नर निश्चिन्त सूवन्त,
ते सूता तरुसिहीरे जिम घर पडिया जागन्त.
के किहाइ साधु छइ, जेहमनि हुऊ उच्छिठ ?
ते तेहरहिं हासि खिडिया अम्ह मनि घणऊं पयठ्ठ. ८
किहाइ कुणिहिं परि अछइ ते कुण जाणइ भेउ ?
किं मण्डाणऊं किं रलिउं, जाणीसू चर पेखेउ.

चउप्पई.

तेउ चर तिणि पाठव्या अनेकि वसुह माहि वाहिवा विवेक.
दम्भ कदागम अनि पाखण्ड नामइ भूतलि भमइ अखण्ड.
जण जण पूछइ ते बहुबुद्धि. कुणिहिं न कही विवेकह सुद्धि.
पुण्यरङ्ग पाटणि ते गया. ज्ञान तलारइ सवि निग्रह्या.
नीठ ते नासी पाछा वल्या. मोह राय रहिं आवी मिल्या.
राउ भणइ 'रहु रे अणमरूया मइ मुखजाया तम्हि ऊन्रूया.
अम्हि अम्हारइ जे ओलगइ, अम्ह परसूत्र अछइ जे लगइ,
जेहनइ अम्ह मोटउ ऊदम्भ, कहउ मु, काइन दीसइ दम्भ ?'
चर बोल्लइ. 'स्वामी ! सुणि वात. दम्भ अम्हारु ट्ठलिउ संवातं,
जिम भावइ तिम राउलि कानि ते पइसीसि विवेकह रानि.'
तं सुणी राउ जम्पइ प्रेमि. 'दम्भ ! वलेने वहिलउ खेमि,
तइ ता साहस खेडिऊ अछइ, भाग्य भडइ अम्हारऊ पछइ.'
वाट जोअन्ता दम्भ पहुत्त रायसभा अविकत्तु अवधूत
नमता पूठि फेरिउ हाथ. सकल सुद्धि पूछइ नरनाथ.

वस्तु.

दम्म पभणइ, दम्म पभणइ. 'निसुणि नरनाह!
आदेसइ ताहरइ अम्हि देसि नवनवइ भम्मडिय
पुच्छन्ता जाणि जगु वयरवित्त. इम सवणइ निवाडिय.
"वीयरायपय सेवतां सरिउं विवेकह काज.
पुण्यरङ्ग पाटणि जई पालइ पूरउं राज."
तिणइ पाटणि तिणइ पाटणि फिरिय अम्हि पत्त.
माहि पइसी नवि सक्या अम्हि तइ दिट्ठ विदेसिय.
तउ संचाती सवि वेगु करिअ तुम्ह भणी अ पेसिय.
ज्ञान तलारह रोहि मई लद्ध न मांहि प्रवेस.
तउ मइ तत्क्षणि आदरिउ तेह सरीखउ वेस.

दूहा.

किद्धइ वेसन्तरि फिरी निरखिउ नयर असेसु.
चारु: अधिपति तउ तिहां कुणिहि न किसिउ कलेस.
वसइं जे :तिहां छेहिला, तेह इ लीलविलास.
इहां जे कीजइ मूलगा, ते तेहना परदास.
ग्राहक सरिसउं वुहरतां तिणि पुरि लाभ असङ्ख.
आपिइ उडद बाकुलइ लभइ कञ्चण लक्ख.
दउदइ विमणइ वुहरना इहा वुहरां उच्छाहु.
हाथ हलावइ जे किसिउ, तिहां अणन्तउ लाहु.
पेट जि वछी पोमिया, ते इहां सम्हा थोइ;

विकरइ जे आवी मिल्या ते तिहां भाण्ड सुहार.
चाचरि चुहटइ चउवटइ इहा केलि दीसइ नितु;
विणि वर सारा कन्टलइ तिहा कोइ न करइ चत्त.

वासिहिं बहुलं बुरुट नवहं; तिहा वासह संखेव.
लीला पुण लोकह तणी तिहा अपूरव देव.

चउप्पई.

तिहा जल रसवइ सविहु वालि बम्भ सरोवरि नवरर पालि.
संयमवन अति खलियामणू पाद्दर देव ति जयणा भणू.
सुकृत महागढ. पोलि च्यारि, दान, सील, तप, भाव विचार.
विरति खाइ, नावइ कोडि. सदाचरण कोसीसा कोडि.
मन परिणाम शुभा आवास साहु वसइ तिहा लीलविलास.
श्रुतरस कूवडी घरि घरि बारि. सद्गुरुवाणी पाणीहारी.
आमण चउरासी चुहटा. सुगुण कयाणा पुण सामटा.
संघ समवाय महाजन जोडि. समता सेरी, काइ नवि खोडि.
तिहा . अमारि हुइ उद्घोषणा, साहमीवच्छलनइ नूंत्रणां.
कल्हट करइ जिणालइ संघ; भास रास–लकुटा रसरङ्ग.
गुहिरइ सरि गुरु करइ वखाण. आगम वाचइ साहु सुजाण.
चोयण पडिचोयण नवि टलइ. इणी परि ते पुर नितु कलकलइ.

दूहड.

नयर निहाली नवी परि रायसभा संपत्त.
दिट्ठउ राउ विवेकु मइं परिवारइ संजुत्त.

चउप्पई.

राणी सुमति; खरउ अनुराग. जेठउ बेटउ तसु वयरागु.
संवर समरस लहुय कुमार. बालमित्रु पुण वस्तुविचार.
मैत्री, करुणा, मुदित, उपेख, बेटी बहु अ रूपनी रेख.
मुहता मुहवाडि सम्यकितु लेखि. पुरुषकार तां दलवइ देखि.
उपशम, विनय सरल, संतोष, चिहु महाधर; सधर प्रबोध.
बार भेद, प्रतिमा बारही. रसकेलिवावि सरसती रही.
प्रायश्चित पुण पाणी हरइ. शुभध्यान चरु छानउ फिरइ.
ज्ञान तलार, न आनइ रेसु. छत्र धरइ सिरि गुरुउवदेसु.
सिद्धि बुद्धि बि चामरहारी. सील सेलहथ सभा मझारि.
सामरकु तसु सारथि सार. कर्म विवर नामइ पडिहार.
आगम अर्थबहुल भण्डारु. क्रियाकलाप सकल कोठार.
साति तत्त्वि सप्ताङ्ग जमीस. दण्डायुध गुरुगुण छत्रीस.
सुपुरुष संगति परिषद ठाउ. सत्य सिंहासनि बइसइ राउ.
नाचइ पात्र ते भावन्न बार, अविकतना गुण गाइ उदार.
छ इ दर्शन तसु सेवइ द्वार. तेहनी होफ न लाभइ पार.
मन्न जोतां तिहां बोलिउ राइ. " मुहता ! एम्ह आजी मगि राइ
माहरउ भाइ मोह सावकउ. धर्म न मानइ ते श्रावकउ.
एह राज एवडा अनीक, कुणिहिं सहीइ न तेहनी हीक.
मुहता ! चिन्तवि किसिउ उपाय. किम जीपीमि मोहउ राय ?"

मुहतइ तेडिउ गुरु जोइसी. वात कही तिणि जोई इसी.
"अम्ह मति मूकउ हियडइ भरी. तम्हि जाणउ ता प्रवचनपुरी.
राम करइ छइ रा अरिहन्त. सदुपदेश तेहनउ सामन्त.
श्रद्धा नामइ तासु घरणी; दीपइ देह सुगुण आभरणि.
तिणि जाई छइ जे दीकरी, नामु जेह पुण संयमसिरी,
ते जइ रा परणइ वाल्हइ वयरीवंस तां कीला दहइ.
ते परिणीनऊं ए अहिनाण, धुर लगि आसासि वयरीप्राण."
इम बोली गुरु जोइसी गयु राइ मुहनइ बोलाविउ.
"हउं किम परणउं संयमसिरी? इक छइ आगइ अन्तेउरी.
निद्रा न सूइ, न भूखइ जिमइ; काळि भागउ नरनाहरि भमइ.
जेणइ नारी दुइ परिग्रही, दुइ भव विणठा तेहना सही.
त्रि कीजइ जइ किमइ कलत्र, मनसा होइ सही विचित्र.
इक आधी इक पाछी करइ, तिणि पापइ नर गूडा मरइ.
इक घरणी ता घरनी मेढि; बीजी हुइ तउ वावइ वेढि.
घरनी कलि कुण आगलि कहइ? चोर माई जिम, छानउ रुअइ.
एकइ संध्या ऊगिउ सूर, बीजीइ मिलिउ रलिउ भूर.
एकइ बीजइ शशी ऊगिउ, बीजी बीजइ ते खय गिउ.

दुहा.

घरटीपुड जिम त्रि घरणी, कणह सरीखउ कन्तु.
---उ आख किम ऊगरउ? मरडी आणइ अन्त."

तं निसुणी बोलइ सुमति. " पियुडा ! म करि संताप.
भेदीगारी हउं नहीं. विमलबोध मुह बाप.
स्त्री सवि सरखी म लेखवे. एकि अछइ गुणवन्ती.
एकि अकुलीणी दिठ मइं जीह न दीजइ पन्ति,
घरि तेडिइ प्रिय प्राहुणइ करइ जि मुह मसीवन्न,
वइवल जिम ते परिहरी घरणी सेवे रन्न.
करड जूट जे बालवी मारिराह निज कन्तु,
तींवी आर ते नारि गणि; जे नर वइलु भमन्तु.
वड लहुडा संतापइ भियनउं पामी मान,
रविकरि ताती धूलिनउं ते दीजइ उपमान.
नर नर मिउं बहु बोल्हणी, घरि नारि गोठि भमन्त,
सहिया मिमि बाहरि वसइ, ते सुसील किम हुन्त ?
इच्छा हींडइ आपणी नरकामिणी जे नारि,
नरयकूपि ते निवडती रहीसि कुण आधारि ?
पुरुष पर्णी इ परणतइ स्त्री नवि करवी भेटि.
घर जाणी बहु वल्लहउ कुलस्त्री पूरइ केडि.

चउपई.

एक कहीसू पुण साची वात. तारे मनि मानउ ते घात.
परणी विण जे बीजउ व्याप, ते दक्षण कर लोप्या पाप.
आवीसि जे तव परणी नवी, सहू कहीसि हूं ते वीनवी.
कलह न मांडीसू धारु रीति. ते मझ होसि सहोदर प्रीति. ''

" सउकि स्वभावइ हुइ ऊदम्प. सउकि किहिं नवि दीसइ सम्प. सउकि इसी जइ मम्म मारही," राउ भणइ, "हिव जीतिउं सही. मुहता! विष्ट शुभाध्यवसाय वेगि न्हयावि भणी जिनराय. ते मम्म छइ घण दीहतु टाल, तेणि हुसि ए वेवीमाल." मुहतइ विष्ट वलाव्या जाम. हूं धायउ-तम्ह करिवा जाण. दम्म भणइ, 'म रहीसि वीससी. मोह! दशा तुह दीसइ किसी.

दुहा.

'आपणपइ सायर हुई लोक तम्हारउं लेउ
सुखनी वातइ लोभवी मुक्ति वसावइ तेउ.
नरक तुम्हारां वर नयर होसइं उद्वस हेव.
तिरियागति वणी ऊचली. जं सकि, तं करि देव!'
तउ रोपइ राजा भणइ करतउ विसरि विलाप,
'उपेखी वयरी अरे कवण मण्डिउ व्याप?'
मूंछइ वलु वली मयण. देखी बाप चलन्त,
जेठउ बेटउ जोडी कर तव बोलइ बलवन्त.
'मइं जीवन्तइ बेटडइ न धरसि अणरइ, बाप!
होजइ सुखिउ. सीलवीसूं वयरीतरणी विलाप.
नान्हउ ए किम झूझीसि, ए मनि माणीसि भ्रान्ति.
नान्हइ सिंह किसोरडइ मयगल घड भज्जन्त.
जे हूं समरङ्गणि भिडीसु, ते सहू तुज्झ पहाड.

पत्रणह चल विण घूलि किम नहयालि मण्डइ ठांउ !
कवण विवेक सु वप्पडउ ? कवण सु पट्टण दुग्ग !
मई उट्ठन्तइ समरि मइ मुरवइ मिल्हइ मग्ग.'

पद्धडी.

बेटानइ बोलइ तेउ कन्न रा मणइ 'वच्छ ! तउ धन्न धन्न !
तई टलीसइ गोरा मनह दाहु. तइ होइ अम्हारऊं कुल सनाह.
ऊगम लगि आकृति तुह अपार. तइ योगि मिलिउ रज्जभार.
तिम चाले जिम सिहुसन्ति मित्त, न हसन्ति वयुद्द मांहि जिम अमित.
पुण लेजे वेलाबल पियाणि. तिणि चास्या आगी नावि हाणि.'

इम कहता पुहतउ रितु वसन्त, तव उट्ठिउ मनमथ धसमसन्त.
मइ हत्थि वधावइ जेण णीसेस. आसीस दिन्ति बहिं नर असेस.
पापश्रुत करव करइ भट्ट, 'तूं वरीजे जगसिरि, अरियट्ट!'
मय अट्ठ गुडिय गयवर सरङ्ग पञ्चवरिय पञ्च इन्द्रिय तुरङ्ग.
कुविकल्प महारथ वेगि चङ्ग. ता सात व्यसन पायक्क अभङ्ग.
विकथा पयाण भेरी अनिन्द. दल मिलिय दिट्ठ जव नरवरिन्द,
नव भणइ. 'वीरा निश्चिंऊं विचारि, इणि कटकवन्धि तुह नात्थि हारि.
पुण तोइ वहिलउ तूं म होसि. भइ भग्गा टीसइ दैवदोसि.
तूं पहिलउ फिरजे सयल देसि. जइ अनइ ननोई मन गणेसि.
मन मेहले जे निरसन्ति रङ्कि. इणी परि तू साधे भुवन तिण्णि.'
राआइसु राउत लेट तेउ रोमञ्चिउ चालिउ मकरकेउ.
विषयश्रुत आसन तणउ हत्थी. उन्माद मित्त मूकइ न हत्थ.

मिल्हिय सर भल्ल य भिन्दिमाल तीणि करयालि किद्धी कुसुममाल.
परिहरिय पुरुष तिणि विकट वीर संग्रही नारि कोमलशरीर.
तीह केसपास सिरि सिरक्कठामि पट्टउली पहिरइ कवच कामि.
चक्रायुध कङ्कण चालवन्ती. असि छुरु जिम वीडऊं करि धरन्ती.
पङ्कडी भमहि सींगिणी भली य. संकट कडक्ख बाणावली य.
नर हावभाव हथिआर किद्ध. नेउर मिसि टोडर पाय बद्ध.
ते शक्तिरूप भड सिऊं भडन्ती, अनुआरी अमरह सिऊं अडन्ती.
नागह कुलि नागिणी करइ हत्थ. व्यन्तर विरुग व्यन्तरीसत्थ.
नारीरासि नर पामन्ति दुकूल; वड्डी परि वेढिय रहइ रुकूल.
रणतूरसादि जेह सवणसुकूल, आगमइ अङ्कि जे दलइ लक्ख,
जे सीस पुरन्दरि नवि नमाइ, ते रुलइ रङ्क जिम रमणीपाइ.

वस्तु.

मयणि इण परि मयणि इण परि नारि आधारि
झगडन्तइ तिहुयणि अन्न दिवसि पुर एकऊ पामिउ
ते पूछइ ओलगु, 'एउ कवण पुर ! कुण ए सामिउ !
ते जम्पइ, 'सम्भलि कुमर ! ए ब्रह्मानउ ठाम.
ब्रह्मलोक जगि जाणीइ एह वदीतऊं नाम.
इत्थ निवसइ इत्थ निवसइ देव किरतार.
हंसासण, चउमुह, च्यारि भणन्तउ वेद न भज्जइ
सरसत्ती बेटी. जम्म विष्णुनाभिहिं भणिज्जइ

विप्र लोक विलसइ इहा, वर्त्तु जेह जसह्ल.
एह नगर लेवा तणी कुमर ! म करीजे अह्ल.'

पद्धडी.

रदि चडिउ भणइ तउ मयण राइ.'ए नर नवि, जीपिउ जे न जाइ.'
संद्धोइय विहणह नारि लक्ख वरसन्ती बाण तिक्खा कडक्ख.
सावित्री अह्नोअङ्गि लग्ग तिणि डोकर केरउ प्राण भग्ग.
बोलन्त अ बम्भण बल अपारि, बम्भणी ते बद्धा विण विचार.
तउ चह्लिउ मनमथ भ्रम भमन्तु जमुनातडि पेखइ कोइ रमन्तु.
'कहु, कवण एह ! मोट्टउ मरट्ट.' इम पूछइ. नाणी भणइ भट्ट.
'वैकुण्ठपुरी अति अछइ सारी, तेहनउ ए नायक देउ मुरारि.
ए कहीइ चतुर्दश भुवन स्वामी. दानवकुल कम्पइ एह नामि.
ए पुढइ क्षीर समुद्र नीरि कुण्डलित शेष कोमल शरीरि.
चालवइ चक्र सारङ्गपाणि. गडमुडइ गदाधर भुजह प्राणि.
ए हिवडा छइ कृष्णावतारि. केसी नइ कालिउ एह वारि.
मन आवीसि ए सिऊं घडी अ घाइ.ए आगलि जीपी कोइ न जाइ.'

दुहा.

तिणि वयणइ ता रदि चडिउ मयण भणइ विकराल.
'तुझ उपरि हो महुमहण ! आ उब्भिउ करवाल.'
सोल सहस्र साहस्र करी गोपी गोलिगहिल्ल.
पीताम्बर पक्कलि' फिरी छोहइ छलण छइल्ल.

फाग २. पद.

-थिरु थिरु हो विनहि सामला ! अम्ह सरिस म बोलीसि आमला.
तम्हि अचउउ छयिहिं आगला, पुण वीरनरिंग्रह वेगला.
अम्हि रूठी अति विकराल, पुण तूठी छऊ सुकुमाल.
तूं काली नागगहार गोरी सिऊ म वहीसि खार.
आवइ आवइ हो माधवा ! दीठउ. किम जाइसि जादवा ! ध्रुव०
अम्हि पूंवडि गोठ गोयालिगी कलुकाद तगी परजालणी.
अम्हि भेदउं भड जिम चालणी.व रूं वीर कर्म ऊजालणी. अम्हि रूठी०
तुम उपरि वनिता आ पडी. ए जाणे वाहर आपडी.
बाणावलि म वहीसि बापडी. तूं जिणता एक जि-थापडी. अम्हि रूठी०
तूं काचउ, अम्हि पुण आकुडी. तूं भोलउ, अम्हि पुण वाकुडी.
तूं आविउ मूटि अम्हारडी. तू मूकि उमाडी ताहरडी. अम्हि रूठी०'

दुहा.

गोपीनइ वञ्चिउ वयणि बलवन्यत्र थिउ मौन.
चक्र चाप मूकी मिलिउ राउत रणरसि लीण.
वारु बाइ वामली गोविन्द गोरी संङ्गि.
गाइ गुयाली गूजरी गरुआ गिरिवर शृङ्गि.
जिम जिम जमुनातडि मिलइ गोपालिणी गमारि,
तिम तिम नाचइ नवी अ पिरि निसि निर्मली मुरारि.
कमल हंस नइ कुसुमनी तियमानि जाणी आलि
जमुनानल डोही गयउ वृन्दावनि वनमाली.

चउप्पई.

इण परि हरखिउ प्रकटिअ प्राण कुमर राइ, तव दिद्ध पियाण.
आगलि पेखी पर्वत एक भट्ट पासि तउ पूछइ छेकु.
भट्ट भणइ. 'ए गिरि कैलास स्वामी शंकर तणउ निवास.
एहनउ कोइ न जाणइ मूल. धनुष धरइ, करि करइ त्रिशूल.
एह आभरणि भुयङ्गम बहु, जेहनी फूंकइ फाटइ सहू.
वसइ महा विसु एहनइ गलइ, जेहनइ गन्धइ जग परजलइ.
एहनइ त्रीजूं नेत्र निलाडि, जेहनउ अगि जगत ऊजाडि.
एहनइ मस्तकि गङ्गा वहइ, जेहनूं पूर न साहिउं रहइ.
एहनइ भरडानउ परिवार, अरि देखी ऊडाडइ छार.
मदनदहन छइ एहरी ख्याति. इणि गिरि वसि म एक इ राति.'
तउ कोपानलि चडिउ कुमार गिरि वींटी दिइ मेल्ही हूकार.
' मदनदहन तउ बिहइ भगावि; मइं आवन्तइ साम्हउ नावि !'
हर हाकी ऊगाडिउ प्राणि. सड सड मूडइ विसमय बाण.
वाजइ वाणि घणउं धूंधूलिउ शंकर साम्हउ आवी मिलिउ.
कुमर भणइ- 'तउ मेल्हउं, माल, नारी तणु जइ परिग्रह आलि.'
हर बोलइ. ' जूउ अम्ह रिद्धि; पाछइ देज्यो अइसी बुद्धि.
छारुडइ अम्ह ऊगट अङ्कि. जडजूडइ सलवलइ भुयङ्ग.
जरगउ वाहणि. रहण मसाणि. भिक्षा घरि घरि भमत नकाणि.
दिसि पहिराणि. पन्नग शृङ्गार. रुण्डमाल अम्ह हियडइ हार.
हालाहल विसु अम्ह आहारि. केही पूरीसि आलउं नारि;

पद.

पाट, साडी, कापडां नइ नवरङ्ग थाट
ए अम्ह कन्हइ मागीति; मनि एतु ऊचाट.
दीजइ जइ पोतइ हुइ. पोतुं दैवह हाथि.
तउ हियडउं हेठउं करी लागा मरडा साथि. ध्रुव०
कणयह कङ्कण, चूडला, नागोदर, हार,
ए अम्ह कन्हइ मागीसि; लोह लोभ न पार. दीजइ०
सांलि दालि सिउं सालणइ घृत, परवल, गोल,
ए अम्ह कन्हइ मागीसि; नितु खाईसि घोल. दीजइ०
जिण वातइ ऊणी हुइ, तिणि मांडइ राडि.
वरि वाघिणि लागी सही, पुण ए म लगाडि.' दीजइ०

चउप्पई.

मयण भणइ. 'अवरह हसि पीड; ईसर! तुम्ह घरि पुण नवि भीड.
ऊंचूं नीचूं घणूं म जोइ. कान्ह ईस! अन्यथा न होइ.
पारवती छइ अम्ह परिवारि पर्वत बेटी निर्मल नारि.
ते जइ आदरि, तउ तउं जीवि. नहितरि राणि छण्डावीसु रीव.'

तउ तिणि झाली ते करि बालि. दुष्कर बि डीलह संभालि;
बि फेडि इकु कीयउ देह. कन्दल तणु तउ आविउ छेह.
देव तणां सांभली चरित्र गोतम, गर्ग, पराशर, अत्रि,.
भृगु, वसिष्ठ ऋषि, विश्वामित्र करइ अकेकी पासि कलत्र
इम भञ्जी मोटां अहिटाण, तात तणी आरोपी आण,

विषमायुध नालिउ घसमसी पुण्यरङ्ग पाटण उद्दिसी.
पाटणि वाजी वात अनेकि. मित्र विचारह. कहिउं विवेकि.
' हिवटा करीसुं नहि संग्राम. भिडतां जाइ भटनी माम.
पहिलउ जाईसुं प्रवचनपुरी, परणीसुं कन्या मेयगिरी.
तउ वयरी सिउ प्रकटीसुं प्राण; जोसीनउं जे वचन, प्रमाण.
इकि भणीसि ए डाहउ हुयउ; इकि पुण कहीसि नासी गयउ.
लोकबोल गणीइ केतला ! आपणकाजि न भूलइ भला.
काली केसी कंसनउ काल गोकुलि गेलिगहिलु गोपाल
अरिदल देखी पश्चिम गयउ; पाछइ कुणि तेला मउ कहिउ ?
विण अवसर जे माडइ झूझ, राजतलउं ते छोडि अबूझ.
माला पहचा बाउ जे गणइ, धूंबड नाम सहूको भणइ.
अवसरि बोलिउ माणस गमइ, पामइ पुष्टि जु अवसरि जिमइ.
अवसरि वूठउ वाल्हउ मेह. अवसरि आविइ सगइ सिणेह.
सूरउ दीपइ बलइ पतङ्ग. सूरउ पावकि पडइ कुरङ्ग.
सूरउ घनगर्जित साभली मरइ सिंह वली वली ऊउली.
बलाबलइ बइसारीसुं बुद्धि तउ पामीसुं मनवञ्छित सिद्धि. '
इणि अवसरि ते विष्ट पहुत्त. ते वीनवइ. ' स्वामी ! सुणि वत्त.
तुम्ह सकारइ अरिहन्त राउ. तिणइ आ पाठविउ पसाउ.
तक ताकइ आणिउं छइ काज; तुम्हि तिहा पुहता जोईउ आज.'
राउ भणइ. 'सुणि, मित्र विचार ! तइ हिव करवी लोकह सार.
परदल देखी थाजे थोक. अम्ह पूठि लेई आवे लोक.

सीखामण देउ चालिउ राउ. नगरलोकि कीवउ समवाउ.
जई सर्व सिरि करिय जुहार वड माणसि वीनविउ विचार.

वस्तु

'स्वामी ! सम्भलि, स्वामी ! सम्भलि. राउ जु विवेक,
ते चलिउ त्वरितगति कुणइ कज्जि ते कवण लेखइ ?
तुम्हि रहिता न घटउ. राउ रहइ किम ते तुम्ह पाखइ?
जिम जिम सुणीइ अरि तणां ऊलावडां अपार,
तिम तिम थाइ दोहलऊं. हिव अम्ह कुण आधार !'

प्लवङ्गम

ते भणइ 'किसी चिन्ता ? आवउ सवि मिली.'
तउ लेई गयु सो प्रवचननगरी मन रली.
पुण्यरङ्गपुर पासलि अरिदल तरवरिय.
विलगी आलसि जे रहिया, ते तिहां धरिय.

सारसी

ते धरिय जेह तिहां रह्या आलसि तट्टघणापरि घर्बचा.
ते भणइ. 'काहु मंडिप्र कीजइ ? महाघर ते सवि नर्इचा.
फिरि फिरिय फारक फार फुरकइ रेसरेर्टिहि छलिया.
गढ मढ मन्दिर वावि वाडी वेगि फेडिय चलिया.

प्लवङ्गम

राउ जइ डीलि काचउ काची बारही.
ताडई नेडी घरतउ घर किसी बारही.
नाठा दीठा हूंसिं विहिता वारंही.
ए वडि वासि न कोइ जु दिइ बुम्बारही.

सारसी

पगभरि जेउ रहीं, मंडइ तेउ कोइ न दिट्ठउ.
सम्भली अरिदल ऊठ गाठी ए विवेकु सु नट्ठउ.
चांपइ रिउ अरिहन्त पाय जु इसिउ तेउ नीमाणउ।
सी नासतानी केइ कीजइ?' भणइ मनमथ राणउ.

प्लवङ्गम

'प्रवचन पुर जाइवा न तातइ आइसिऊं.
अवर जिणऊं सहू, हिव निज थानकि जाईसिऊं.'
विरुद बुलावंत बहु परि पाछु कुमर वलिउ.
चउपट चालत चोरह चरडह भउ टलिउ.

सारसी

भउ टलिउ चउपट चोर, चरडह. सेन समहरि चल्लइ.
दल अकल दिक्खिय जे अदेखा, तेह तन मन सल्लइ.
आविउ अविद्यानयरि निरुपम. किद्ध उच्छव डम्बरइ.
घरि घरिहिं उब्भिय नयरि गूडी. खेइ ऊडी अम्बरइ.

प्लवङ्गम

मावित्र प्रणमइ. माइ दि हरखी हुलामणां.
'अखइ होईने वीर! करूं तुह लूहणां.'
तात ठविय उच्छङ्गइ पूछइ वत्तडी य.
'किम फिरिउ देसन्तरि? किम तइं जग नडिय?

सारसी

जग नडिय कुण परि?' इणइ अवसरि मित्त बुल्लण लग्गउ.
'तुम्ह कुमर अमरह सरिस समहरि कलह करतु न भग्गउ.
नाठोर नीठुर घसिय घण परि सन्त सवि वसि आणइ.
एह दिक्खी नट्ठु विवेकु तिम जिम नाम कोइ न जाणइ.'

तिणि प्रस्तावि पापश्रुत भट्टि मदन कुमर तणा छन्द बोल्या.

घरणाउलु.
'मोह राय कुलकमल दिणेसर ! ऊगम लगि अदलक अलवेसर !
मुयचालि भेडि भिडन्त न भज्जइ. वीर ! नाम तुह मनमय उज्जइ.
हांदको
जयवन्तउ जिणिया जग सहू चालिउ चउपटमल रिउसाल.
चलनचल चतुर तुरङ्गमि पट्टिउ. करि कड्ढिउ करवाल.

'ओ आवइ, आवइ अरि अप्फालिय. भज्जइ भुजि विकराल.
महीमण्डलि मण्डइ, मयण महाभड, कुण तइ सिउ बुडि ताल'
क्षणि मेरुगी मण्डलि, क्षणि गयणङ्गणि, क्षणि जुज्झइ पायालि.
जे भुजबलि
नवि छुट्टइ अगारि सागरि महागिरि गढि मढि गेहि पइट्ट.
सउ मड मूडन्तह तुह सरधोरणि, धीरउ ! कोइ न दिट्ठ.
जे खग्गि खडखड खिंची न खुट्टइ, जे पट्टइ जुज्झन्ति,
जे सबल वरकइ, चक न चुकइ, धीरठ धनुप धरन्ति,
जे मुग्गरि मारइ, कटइ कटारइ, जे तकइ तरवारि,
कम्मारा जिम ते कम्म करन्ता मइ दिट्ठा तउ बारि.
जे जोगी जडिया तपइ तपोधन बम्भण बहु बलठाम,
सौगत संन्यासी जे मठवासी, तेह तइ भग्गी माम.
जे खितितलि खत्तिय, खर खुरसाणी, सब्बर बब्बर चीण,
जे दानव, नवकुल नाग, पुरन्दर, ते तइ कीधा दीण.
तइ मच्छिणि मेली मुनि अ परासर धूधुतारिउ बम्म.
तइं तेजि तपन्तउ तरणि तलाविउ. सन्दु भणाविउ शंमु.

तई चन्द कलङ्किउ, इन्द अहल्या मेलिअ किउ मज्जार;
तइ वेसामन्दिरि वेस छंडाविउ नन्दिसेण जुज्झार.

छप्पयउ.

नवि दिट्ठउ उद्दन्त, समरि झुंकार करन्तउ,
नवि मण्डन्तउ ठाण, न गुण सींगिणि तक्कन्तउ,
नवि कड्ढन्तउ बाण, न पुण मिल्हन्त प्रमाणिउ;
जरद भेदी जज्जारिउ हृदय भीतरि, तउ जाणिउ.
झुज्झारमल्ल ! झुज्झह तणी परि अपूरव पिक्खी तुय.
न सुभन्ति सुखिहि रिउ तिहु भुयाणि, मयण राउ, सिरिमोहसुय !'

दुहा

'पुत्र पवाडा सम्मली आणन्दिउ नरनाह.
कामिणि करइ ऊआरणां. माडीमनि उच्छाह.
राउ भणइ 'जं जग जिणिय, कुमरि! सुभ-किय वत्त.
जं पुण अरि. थयउ जीवतउ, ते कप्पइ करवत्त.
तिहां विवेक सिऊं परणीसि संयमसिरी कुमारी.
मोरउ वंस निकन्दीसि ओ ओसरइ कुमारि.'

चउप्पई

रायअङ्गणइ कलहट होतइ, मिली लोकि बहु कउतिग जोतइ,
रायसभा पुहुतउ पडिहार. कर जोडी तिणि किद्ध जुहार.
पभणइ. 'देउ ! देउ अवधान एक पुरुष गुण तणउ निधान

पुहतउ अछइ तुम्ह बारणइ, "रा भेटाडउ मइ" इम भणइ.'
राउ भणइ, 'ते वहिलउ आणि.' ते आणिउ नरवर अत्थाणि.
भुइ कम्पावइ मेल्हीं पाय. रातइ नयणि बीहावइ काय.
विकट वदन. कर चरण अघोर. नसाजाल जाणीइ छइ दोर.
तेहनूं रूप काल विकराल. देखी चमकिउ मनि भूपाल.
तिणि नरवर रहिं किद्ध प्रणाम. नृपति भणइ, 'कहि तूं कुणनाम?'
'स्वामीं! हूं कहिउ कलिकाल, कलिप्रिय, सुपुरुप केरउ काल.
जइ राहवि तउं, ताहरि रहेसु, वइरवाद सविहू निरवहेसु.
ताहरइ वयरी जो अरिहन्त, मझ भयि लेसि तेउ दिगन्त.
मुक्ति तणी हउं भांजीसूं वाट, वीर विवेक वनाडीसूं साट.
प्रवचन नगरी धन्धोलेसूं. उपशम संवर उनमूलेसूं.
मरडी मारीसूं मुहतावलउ, ज्ञाननलारह त्रोडीसूं तलउं.'
तिणइ वयणि राजा गहगहिउ; मल राउत भणी ते संगहिउ.
जं बोलिउ कलि, तं साचवइ, मोहसेन सवलउं माचवइ.
प्रवचन नगरी पाडी भेल, वापिया मुनिवर मांहि कुमेल.
अर्थ वहाव्या तेणइ याति, सत्तह टाली दीसइ सती.
गृहीं घणा छण्डाव्या ठाण, विणज मांहि केलवइ विनाण.
चूति न निद्रा निद्र वखाणि. देव अनइ गुरु सरिसी काणि.
न लहइ जीव अजीव विचार, वडइ पर्वि नवि मूकइ खार.
साहमिवच्छल मुखि इम भणइ; सगां भक्तिधामइ अवगणइ.
कीर्ति काजि वेचइ सय सहस, दुःस्थित देखी बोलइ विरस.

महामन्त्रनउ नहि वीसास; क्षुद्र मन्त्र उपरि अभ्यास.
कुलत्री छांडी बाहरि रमइ. आवश्यकनी वात न गमइ.
भाषासमिति सु नाठी दूरि. तप उपशम बि वहिया पूरि.
गमइ शृङ्गार, न गुरुउपदेश. चोअण दीधइ आणइ रेस.
घणा पुरुष इम कलियुगि कल्या. ओी नइ बाल थाड सिउं टल्या.
तिणि जे मुक्तिइ जाता ग्रह्या, ते के मोह कन्हइ जई रह्या.
के आव्या परमेसर कन्हइ, ते जम्पइ कर जोडी बिन्हइ.
'आ अम्ह सामी ! सिउ संताप ? तूं ठाकुर, तूं मा नइ बाप.
साह्यलि पोकारउं तुह बारि. तूं अम्ह भवकन्तार ऊतारि.
तउं नायक मनि कीधउ वहउं. मुक्ति जाइवा कइ न लहउं.'

दुहा.

चिंति चमक्किउ तिणि वयणि जम्पइ जिणवर चन्द.
' जग झगडइ कलियुगह बलि किम रे मोह नरिन्द !
तूं विवेक इम सम्भली पडती पोलिइ बुम्ब
मोह रायदल निद्दलण, कहि, कहि, कांइ विलम्बि ?
तुम्ह संयमसिरि परिणवा मनि छइ मोटी आस.
एह वात जं हूं कहउं, त सुणि, छीलविलास !
सूरह कुलि ते ऊपनी; आपणि सूरी कन्न;
सूरा विण वर नवि वरइ, एह जि तेह पइन्न.

ते देवह तिहु दुल्लही. वारइ वयर विवाद.
अवर किसिउ तेह भउ नहीं, वीहइ इक प्रमाद.
तिणि परणीइ पग मोकला; सुर सेवइ मन सुद्धि;
ज्ञानकला निरती फुरइ; आवइ आठ इ सिद्धि.
एह कन्या कारणि कवण करइ न काय किलेस!
पुण्यहीण पामइ नहीं सालूणडी सुवेस.
तेह अग्गलइ आगउकं प्रकटीसि वीरचरित्र.
तउ कन्या पामीसि सही; बीजी पम्पल वत्त.'

चउप्पई.

कुमर भणइ. 'स्वामी! अवधारि. आरण सभा आणि ते नारि.
नाममन्त्र तुम्ह हियडइ. धरी प्रकटीसु काइ वीरह चरी.
कहि तउ दमऊ वाव विकराल, कहि तउ पीऊं हुताशन जाल.
गिरि ऊपाडऊं विण आधार, कहि तउ चाळऊ करवतधार.
डीलि परदल करऊं निषेध. कहि तउ साधऊं राधावेध.'
तउ राजा आणावि कुमारि, सभा भरी जण जोअणहारि.

जाति.

वाजियडां तूर अनेक. नारि करइ ऊभारणां.
'परिणीसि वीर विवेक', सामग हूआ उतावला.

चउप्पई.

राग द्वेष धडहडता सीह विहु ऊउचा तउ अकल अबीह.
नखर कूदाला जिसिया पाइ. मुंइ कम्पावइ पुच्छनिहाइ.

घूंघट घूगइ केमरवालि. लोक चडया भयि मालि अटालि.
ते विहु इ तेणइ आंगम्या; समता गुणि साही नइ दम्या.
अविरति पीतां सोहिगी, सर्वविरति वाचा दोहिली;
ते तिणि लीधी मुखि आपणइ. 'बाप ! बाप !' जण सहू इ भणइ.
'पाच महाव्रत पांच इ मेरु, एह वातनउ म करीसि फेरु';
भुजबलि तेह ऊपाडिउ भार; तप करवतनी चालिउ धार.
जे संसारनउ अविरुद्दम्भ, एह जि मण्डप, एह जि थम्भ;
जेह शुभाशुभ कर्म, विचारि आठ चक्र ते एह मझारि;
हेठी दृष्टिं जीवनऊ ध्यान; ऊरध मुक्ति तणउ संधान;
तत्त्वकला वींधी मनबागि; इण परि राधावेध बखाणि.
तं देखी ऊमाही बाल. तसु कण्ठइ घल्ली वरमाल.
पीहरि पुहती कन्या चली. वेवाही मति पूगी रुली.

धउल.

पूगी रुली मन थिर हूआ ए. जण दीजइ बीडा भूभुआ ए.
लेइ लगन वधावउ ए विण तेडा सहूइ आविउं ए.
प्रवचन नगरि वधामणा ए. सवि भाजइ जूना रूसणा ए.
चइठी तेवड—तेवडी ए; दिइ पापड सालेवड वडी ए.
गेलिहिं गाइ गोरडी ए; पकवानइ भरइ ओरडी ए.
घरि घरि फूलडइ फिरि ए, वरवयणी अमीरस नितु झरि ए.
कीजइ मण्डप मोकला ए मेल्हीजइ चापू चाकला ए.

गुरवि सजन जिमाडीइ ए पुरि साद अमारिनु पाडीइ ए.
वर शृङ्गारिकु रथि चडि ए. वाजित्रइ अम्बर घडहडि ए
लाडणु जोता जग मिलि ए. सिरि छत्र, चमर पासइ ढलि ए.
संयमसिरि जग दूलही ए प्रिय पेखी गुणनिधि गहगहि ए.
पुहतउ मण्टपि सामरि ए, वर बइठउ प्रवचन माहरि ए.
करमेलावउ बिहु करि ए. गुरु जोसी समउ मु उचरि ए.
पावक प्रतिमा पाखलि ए दिइ बिहु इ प्रदक्षिण मनरुली ए.
लाडण लाडी लहुयडां ए बिइ निरुपम रूपइ रूयडां ए.
दिवन घणा उमाहियां ए अणान्दिहिं विहसिय बिहु हियां ए.
नाविन्नइ उच्छव किय ए जण जोई कउतिग घरि गय ए.
'एह विछोह-म देखीम्यु ए' मनरङ्गि बोलइ सहू इस्यूं ए.

चउपई.

परण्या पूठि प्रकटिउ प्राण. वीर विवेकइ दिद्ध पियाण.
गोर अभिग्रह फारक फिरइ. योगअङ्ग गयवर गुडि घरइ.
सुभा भाव उठइ असवार. रय सहस्र सीलङ्ग अढार.
कोडि न मूकइ मित्र विचार. सुश्रुत भट्ट करइ कयवार.
सइं हथि देवी वधारइ तिलक. वीर सु चल्लिउ लेई कटक.
त्रहत्रहन्ति त्रम्बक अपार. दमदमन्ति दका अनिवार.
ओं ओं वज्जइ मङ्गल सङ्घ. तिगि तिगि काहल करइ असङ्ख.
भिरिरि भिरबइ गहिरी भेरि. चालइ दल सवि पिहुली सेरि.
गाम गाम आवइ भेटणां. मान दान तेह दीजइ घणां.

'पहिरउ लोक सोना नइ चीर. कोइ म डरउ. अम्हारी धीर.
नान्हा लोक न कांइ कहउं. मोह उपरि आ खांडूं वहउं.'
इम बोलतु ते गयु सेत्रुजि. मोहह फुरनी-त्रटी धुजि.
चरमुखि जाणी अरिदलचांप मोह फूकार करइ जिम साप.
चालिउ मोह राउ सामही. हय गय साहण सङ्ख्या नहीं.
दल चालिइ सायर छलछलइ; मेइणि डोलइ; गिरि टलटलइ;
तिण्णि भुयण तसु भयि खलभलइ. राय राण सवि आवी मिलइ.
कटक ति खेहइ झांपइ सुर, क्षणि क्षणि वाधइ जिम नइपूर.
चालइ कटक तलारह कहिउं. दल दक्षिण दिसि आवी रहिउं.

विहु दल दृष्टिमिलावउ हुउ. भड झूझेवा मागइ दूउ.
जिम जिम परदल देखइ फार, तिमतिम अधक करइ झूझार.
कटकह कहइ विवेक सगर्व. ' आ आपणि तां आविउं पर्व.
हिव जीपीसि तुम्हारइ हाथि. अरिभड भेडिउ साही बाथि
"मोह मोडु"मनि माणउ इसिउं.साहसधणी न मिज्झइ किसिउं ?
राखे भग्गउ खग्गप्रहारि. सुखि ऊघडइ न नर्गह बार.
तम्हि जोउ नि प्रसिद्धि प्रमाण, एउ पहाडउ मेरु समान.
वीरक्षेत्र कहीइ सेत्रुज. बिहु भवि भलूं इहांनू झूझ.
परदलि भिडतउ जे भाजीसि तेणइ अरिहंत देउ लाजीसि.
ऋषभदेव दृढ मनि ओलखउ, आपणपा ते पुठी रखउ.
कहु कुणनइ किसिउ परिवार, कुणनइ हाथि किस्यूं हथिआर?'
ते बोलइ ' कांइ नथी मणा, रखा रिखव छइ जइ आपणा.'

धउल.

भणइ कुमार 'तात ! सुणि वात. अम्ह अछि ओलगु अति घणाए.
भरत सगरादि घण अवदात. चक्रधर चाकरी अम्ह करइ ए.
अम्ह करइ केशवबन्धु ते सवि सेव देव सुहाविया.
करकण्डु दोमुह नमि मुनगइ नवल नेहि समागया.
तव भणइ उपशम राउ दमदंतु भद्र विलाईपुत्तउ
अम्ह करइ ओलग कुरग कुरगडु दिढपहार निरुतउ.
विनउ भणइ भड मेहकुमार अम्ह दलि गोयम गुण निलउ ए.
तातवयणि जिणि त्यजु अहंकार, बाहु बाहुबली अगलउ ए.
आद्रम्ति सरलि संतोष वावइ आदि नरवर नन्दणउ.
अइमुत्त रायह पुत्त अम्ह दलि रहिउ राउ उदायणउ.
सभिकन्तु सारङ्गपाणि श्रेणिक राउ संप्रति अक्खइ.
थिर थूलिभद्दु सुजात जम्बू सेलहत्थ सु दिक्खइ.
कल्ण सुन्दरी कहइ कुमारि मोह नइ कलियुगि जे रमइ ए.
वसु दलि पारधि सूना मारि धुर लगि मुह ते नवि गमइ ए.
नवि गमइ ते मन्न. तेणि कारणि रणह रङ्गि जुमल्लइ.
प्रिय सोगि पूर्ग नारि निरखित निवड मोगर मिल्हइ.
अइच्छ देसि अदारि कारिय जीवरक्ख सलक्खणउ,
कलिकालकम्पण कुमर नरवइ वीर गहिर वियक्खणउ.
इम सम्भाली निज परिवार वीर विमम हरि आरुहइ ए.
पइदल दाढ्रीभूलइ असवार पाखरि भूवरी रणमुगइ ए.

रुणझुणइ घूघरी घोर घण परि. घुमघुमन्ति नीसाणया.
झलकन्त सब्बल सेल्ल, पेखिय पडइ कायर प्राणया.
रोमञ्चि राउत जोड जडकइ जरद्दबन्धन तुट्टइ.
हणहणइ हूंफइ हाकि हयवर, पूर जिम पहट्टइ.

दुहा.

तं जाणी जमरूप धरी जम्पइ मोह नरेसु.
भड ! उट्ठउ. तिण परि भिडउ, जिम तुम्ह होइ. न रेसु.
मयण मिलिउ जेसवाहि सिउं गर्दभिल्ल प्रद्योति;
सही सेलग सोदास सिउं दलवइ कीधी पोति.
कुराडि कमाठिहिं कउरविहिं तउ परिवारिउ कोप.
परसुरामि रावणि किउ मान घणउ आरोप.
पीढ महापीढिहिं सबलि महाबल मण्डिउ दम्भ.
नंन्दि सुभूमिहिं कोणियहिं लोभ मु गुरुआरम्भ.

चउप्पई.

तउ बिहु इ दल चालिय चडी. हाकमूकइ दलवइ दडवडी
कंसालां जिम दल आफल्यां. गयवर गयवरि सरिसा मिल्या.
रथि रथु, पायक पायकि जडइ; घोडउ घोडइ सरिसउ भिडइ.
ऊडिउं लोह न पइसइ कोसि. झूझइ राउत पूरइ रोसि.
बांधी बाणि गयाणि ठाउरी, रविकर मूक्या तिणि आवरी.
खांडां झलकइ बीजल निसियां, सुहड तणां मन तेणइ कसियां.

पायक पूढइ सरनी सेन तेह उपरि अपछरनां हेम.
रुधिर पूरि रथ ताण्या जाइ. सिर त्रूटइ, धड धसमस धाइ.
तेजी तुरङ्ग न साह्या रहइ, पर:ल मांहि फूटी वहइ.
बिहु इ कुमर लागउ संग्राम, तां वइरागि जीतिउ काम.
पुरुषकारि संहरिउ प्रमाद. सीलि ऊतारिउ मदनउ नाद.
उपसमि क्रोधह किउ संहार. विनय वीरि वारउ अहंकार.
मराले दुम्म छण्डाविउ क्षोभ. सुखि संतोखइ साधिउ लोभ.
राग द्वेष सामायकि वरिया. कर्म महामद तपि संहरिया.
नास्तिक वारिउ वस्तुविचारि, करुणा पारधि मूना मारि.
क्षणि क्षणि खूटी मोहनी.खेल; सघलइ कटकि पडी तउ भेलि.
दलवइ विणु दल सूनउं हूउं नाठउं जाइ दिसोदिसि जूउं.
तउ आपणपइ ऊठिउ मोह. निणि रणि मांडिउ मइसाडोह.
कुमर सवे निणि दृष्टिइ कस्या जाइ महाधर पाला पल्या.
सेलहत्थ सिरि दिट्ठ प्रहार. समकित स्यूं गिउ दूरि तलार.
ते दृष्टिइ कोइ न सकइ नडी; तेह [illegible]ऊं कोइ न सकइ भिडी.
इम देखी निज दल दन्दोल विवेक राउ तउ करइ कल्लोल.

बोली.

तउ विवेक राजा सामही संग्रामाङ्गणि आविउ.
आवतु जि मोह राजा बोलाविउ.
'अहो विवेक ! नासि,रे नासि.
म रहसि माइ तणइ वीसासि.

रणक्षेत्रि चड्या क्षत्रिय न गणइ बाप नइ भाइ.
एह वातनी प्रसिद्धि. आगइ ऋषभदेवनन्दनि नीपाई
भाइ! आ तऊं तहीइ गाठउ,
जहींइ कुसुमसरभयि जीव लेई नाठउ.
तऊं तउ डीलइ कुंअलउ;
ताहरउ परिवार सीयलउ.
मम्म दिगविजय करन्तां त्रिभुवव फिट्टी थाइ तिणि फाडा.
आपण कहऊं केहउ केतला तुझ आगलि पवाडा?

पद्धडी.

आदीसर पौत्र हूअउ मरीचि, घात्यु सु मइं गञ्जिउ गोत्रि नीचि.
श्रीवीरनु जे कहींइ जमाइ जम्मालि मेलिहउ मइं पजाइ.
मइं पाठवी पाप तणूं अनीक तुह भक्त भांज्यु भड कण्डरीक.
रहिउ सइ सेणिक तउ निरोपि, घात्यु सु मइ तां नरकान्धकूपि.'
बोलइ विवेक 'सुणि मोह भाइ! तइं तां दिखाडी निज पण्डिताइ.
खरूं खवे जेह ते तण प्रमाण. ते आपणूं कांइ करइ वखाण?
मु सीयलानु म करे वीसास; सीली नइ पर्वत हुइ विणास.
वाच्या विहु आपण एक ठामि. एतलऊं बोलीसि कउण कामि?
खट खण्ड भूमण्डल जेणि साधी संपूर्ण लील भरतेसि लींधी,
जे तइं घण बन्धनि बद्ध हूंत, ते मू लगि मुक्तिपुरी पहुत्त.
स ताहरउ भक्त दृढप्रहार, मइं ओलगी गिउ भवपूरपारि.

तउ गमिउ निंदइ निआइपुत्त मइ ऊठवि तेह फिरिऊ चरित.
घारिउ घण नइ रहनेमि आगि, ते गाज जाग्यु मझ पुठि लागि.
केता कहूं पायक तउ प्रसिद्ध ? मइं बूझवी निर्वृतिपन्थि लिद्ध.

चउप्पई.

जलधर वूठइ जलग न दहइ. गरुडराइ गरडस किम रहइ ?
रविउग्गमि अन्धारऊं टलइ. साहपरणी न साझणि छलइ.
केसरिसिहि गइन्द पलाइ, घेर्ट जिम नादइ घगनइ घाइ.
हिम पडनइ किम्मु दाझइ आऊ, मझ आगलि तऊं कवण वराक ?'
इम बोली ऊठ्या ते वीर. हाकइ, ताकइ तोमर तीर,
जडइ भिडइ, भेडवइ अभङ्ग, धाइ, धसइ ते; घूणइ अङ्ग;
वेढिइ तेडइ, ताडइ तेउ; झडपइ, झूझइ, झूझइ बेउ;
हमइ, धमइ; रोमइ किअकिअइ; बोलइ बमइ; बिइ कडकडलइ.
जे हथिआर मोह पाठवइ, राउ विवेक सु सवि जालवइ.
ब्रह्मास्त्रि वलनउ आहणिउ मोह नरिन्द विवेकइ हणिउ.
वाजइ दुन्दुहि गयणि गंभीर, पञ्चवर्ण लहलहकइ चीर;
जय जय नन्दा सुर उच्चरइ, कुसुमवृष्टिमिसि ओलग करइ.
निवृत्ति तणी हिव पूगी रूली तिणि तेडी सवि अवला मिली.
सविहुनइ मनि वाधी आस. रणभूइ माडिउ रङ्ग रास.
इणि अन्तरि सुश्रुत भट्टि राय विवेक तणा छन्द भण्या.

गीति.

अरिहन्तपायभत्तो, मोहं जिणिऊण जयसिरिं पत्तो,
दयवन्त, उदयवन्तो विवेयचन्दो नरिन्द जयवन्तो.

दुमिला.

जयवन्त अणन्तगुणड्ड सुगाडिम गज्जइ गेलिहिं गुहिर सरं;
भुयदण्ड पयाण्डि सुरूड भड मज्जइ चडिय पवाडइ पञ्चसरं.
परि पेक्खिय परदलरुक्खल करकखइ दक्खइ दक्खिण वीररसं.
लिज्जन्त न खुड्डइ पसरी पहट्टइ तिहुयणि वीर विवेकजसं.
जमुनाजलि खिल्लइ तोइ न भिल्हइ रायहंस निय धवलगुणं.
सायरजल कालइ वसइ निरालइ, तोइ न मुत्ताहल मलिणं.
नहमण्डलि नीलीवणि निलुकउ चन्द न चुकइ चुक्खिमयं.
मन मोहइ बिइ परिपाडिय न भग्गी भिलिम तउ आबालवयं.
सेना सिउं नट्ठउ मुहतु रणङ्गणि, मुहवाडि मोडिउं मन्त्रिबलं.
पञ्चिन्दिय तलवर मूल निकन्दिय. त्रिन्दिय छण्डह बाहुबलं.
राणि राग न रोस न रमइ सरङ्गइ, नवि छड्डइ कलिकाल छलं.
सणहणन्त तोमर तड करकम्पिय पेक्खिय हुइ मउ मोहबलं.

हाणि हाणि भणी हक्किय मोह महाभडि,जे पाडिय पाञ्चिन्ति पिडि,
जे कलिमलि खुत्ता विषवि विगुत्ता, जे जिता कम्मट्ठभडि,
हासा मिसि जन्तु नणइ जि हिसइ नरयगमणि एगगमणा,
तउ दंसणि दुक्ख परिक्खयि ते सवि वर हुइ सिरिसिवरमणी तणा.
रमणीरसि विद्धउ विसयालुद्धउ नन्दिसेण तइ उद्धरिउ,
नरनारी निकन्दण ते आरामी तू वालि केवलसिरि वरिउ.
जे कुरुकुलक्खय कारग पण्डव यादव दव जिम मुक्कदया,
तइ वीर विवेक ! एक ओलगिइ सिद्धिपुरी ते मुक्किइ गया.

छप्पयउ.

सूरिरयण तू ध्याइ. मघर तू धर्मधुरन्धर.
तू त्रिभुवन आधार, धीर जिम मेरु महीधर.
सेवइ सवि नर अमर भमर जिम तउ पयपङ्कय.
तुह नामक्खरि जाइ जम्म जर मरण महा भय
तू विण अमार श्री भारतीय तउ पसाय वन्छइ सहू य
करि अम्ह स्वामी ! सेवा सफल,सिरिविवेक ! मनमान्यिसुय !

चउप्पई.

मोह पहूतउ जव परलोकि प्रवृत्ति पडी तउ पूरइ शोकि.
वंम विणास न हियइ ममाइ; मूर्की जिम ऊन्हालइ जाइ.
कुल क्षय देखी घणू वलवलइ, तडफइ मच्छ जिम टलवलइ.
मनु विलवइ मूकी नीसास. 'आज अम्हारी त्रूटी आस.

दुहा.

भोमन कुण रहिं मावीसि? नयणिहिं नींदविछोह.
लहुडउ लीलापति गयउ अम्ह कुलमण्डन मोह.

पद.

मोहा! तूं किहां गयु ए प्रवृत्ति लेई संघाति!
कुणि कारणि अम्हि टालिया ए? ध्रुव०
बाप छतइ बेटउ मरइ, विरुई ए जागी वात.
वडपण तारूं. तूं पलइ हूं किम होईसु तात? मोहा०
ग्यउ केसरी; मृग संचरइ. ग्यउ रवि; तिमिर फुरान्ति.
अरिमड भञ्जण तूं गयउ; परदल हिव पसरान्ति. मोहा०
किहां ते बेटा बेटडी? किहा तुरय? किहां हत्थी?
ए सहू तुझ केटइ गयूं; सहू मिलिउं तुझ सत्थि. मोहा०

दुहा.

नाणी जनकह दोहिलूं किद्धु विवेकि जुहार.
'तात! किस्यूं इन झूरीइ देखी कुलसंहार?
आपणपा पीपल साहिउ. मोह जि मइलउ मूलि.
केतूं कुसल विमासीइ वसतानइ नइ — कूलि?
जे अन्यायि मेलीइ, ते धन सुथिर न होइ.
घोर पाप जिणि वापरइ, तिणि कुलि उदय न जोइ.

मोह तुम्हार इ बेटडउ, तम्हि अम्हि कीया चोर.
छोरु समान न लेखवइ, ते मावित्र कठोर.
जिणि बांधिउ, जिणि रोलविउ, तेह उपरि संतोष;
अम्हि तइं शिक्षु समा गण्या; ए कुण दीजइ दोष !
कुल्दह कलङ्कण, कलहप्रिय बेटउ गयउ म झूरि.
उट्ठि, जलञ्जलि मोह दिइ, कां तऊं पडिउ अघोरि !
निवृत्ति तुम्हारी ए घरणी. ए मू बेटउ जाणि.
ए पोतऊं सवि ताहरऊं. हूई किसी तउ हाणि !'

मोहप्रयोजन मन करी थप्पइ राजि विवेकु.
चिर परिचय लगि सम्भरइ वली वली मोह जि एकु.

वस्तु

पाइ लागिय पाइ लागिय वली सुविवेक
सीखामण दिइ इसी ' तुम्हि तात ! ए किसिऊं मण्डिऊं !
परमेसर अणुसरु. मोह तणउ अन्दोहु छण्डउ.

समता सयली आदरउ. ममता मूकउ दूरि.
च्यारि हणी पांच इ जिणी खेलउ समरसपूरि.'

चउप्पई.

तिणि सीखामणि मन संवरइ मोह वली वली पुण सम्भरइ.
कहइ विवेकह तउ ते वात. ' मोह तणी न सुहाइ वात.

१ मोहध्यान हिव तोइ जि टलइ, जइ वेसानरि तनु परजलइ.
ध्यानानलि तउ खासीऊं काठ. सहचर कर्म अछइ अम्ह आठ.
खाधूं पीधूं, ध्या अम्हि वडा तुम्हे उ होज्यो अम्ह जेवडा.
इनिउ संयोग न मिलीसि वली साथि थई अम्ह पूरउ रुली.'
शुक्ल ध्यान तउ दीपिउ आगि तिणि पइसी मन लागउ मागि.
चेतन राणी अवसर लहइ निबरइ वर रहिं आवी कहइ.
'स्वामी! माया जं चीतानिऊं, तइं तां ढीलि ते अनुभविऊं.
ते जइ कहीइ, तउ छइ घणूं, वीतकनऊ स्यूं सम्भारणूं?
जे तइं माडी कायापुरी, अशुचिइ जम्वालइ छइ भरी.
अहोतर सय चोर विणासि तिगइ न घटइ तुम्हारउ वास.
स्वामी! आपइ आप विमासि. ऊठि, शक्ति आपणी प्रकाशि.
जइ सचेत तऊं होईसि आज, वलि वहिलु लही सि तां राज.
हिव मायानउ लाग जि टलिउ. मन मुहतउ वेसानरि जलिउ.
रणभरि रहिउ मोह सकुटुम्ब. स्वामी! अलहलि म करि विलम्ब.
परमहंस तउ हुउ सचेत. राणीनउ मनि वसिउ संकेत.
परम ज्योति पामिउ प्रकाश छूटा आपणी ता पास.
सतीवचनि वाधिउ सोहलउ. काया मूकी पिउ मोकलउ.
एक विवेक न वीसरि तोइ. मननी संतति भली नवि होइ.
तउ विवेक तिणि कीधउ जूउ; आपणपइं प्रभु त्रिभुवनि हूउ.
निगि फागुणि आंबउ गहगहइ; निगि ग्रीषमि नइ पूरइ वहइ;

बहुलपख पूटइ शशिवृद्धि: अ[ुर] अनन्तर सागर रिद्धि;
दडउ पढी नइ वली ऊपडइ; टामि कपूर कपूर जि घडइ;
मावठि भागी पुण्य पसाइ, पामिउ राज वली तिणि राइ.
परमहंस सहू कोई जपइ. परमहंस दिणयर जिम तपइ.
परमहंस लगि भाजइ भ्रन्ति. परमहंसि तउ लागी खन्ति.
एह जि मङ्गल, उच्छव एउ. एह जि मायबाप, ए देउ.
इणि तीरथि न्हातां हुइ सुद्धि. ए सारस्वत पूरइ बुद्धि.
कल्पद्रुम, कामधेनु सोइ. चिन्तामणि ए, अवर न कोइ.
एह जि सिद्धिपुरीनउ पन्थ. एह जि जीवन. सिवनउ ग्रन्थ.
मूलमन्त्र, मणि ए मनि मानि. तप जपनउ फल एहनइ ध्यानि.
त्रिभुवनदीपक एउ प्रबन्ध पाप तणउ सीसु मुइ न गन्ध.
इणि सवि संपद आवइ पूरि. इम बोलइ जयशेखरसूरि.



परिशिष्ट.

वसन्तविलासमां उतारेला संस्कृत प्राकृत श्लोक.

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या श्वेतपद्मासना
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या शुभ्रवस्त्रावृता ।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा नः पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥१॥

वसन्तविभवेन यथा यथामी प्रौढिं क्रमेण दिवसाः परिदर्शयन्ति ।
त्रपापरिबलेन तथा तथैताः श्यामा नवीनवनिता इव संकुचन्ति ।२।

त्रिम्बोट्ठे बहुलं ण देन्ति मयणं णो गन्धतेल्लाविला
वेणीओ विरअन्ति लेन्ति ण तहा अङ्गम्मि कुप्पासयं ।
जं बाला मुहकुङ्कुमम्मि वि घणे विज्जान्ति ढिल्लायरा
तं मण्णे शिशिरं विणिज्जिअ बला पत्तो वसन्तूसवो ॥३॥

यद्वसन्तऋतुराजविलासभूमिर्भातविंभाति सहकारमहीरुहोऽयम् ।
प्रदायिषु षडङ्घ्रिषु कोकिलोऽयमत्र प्रपञ्चयति कंचन पञ्चमं यत्॥४॥

भिन्दन्तश्चन्दनालीं कमलमुकुलजां धूलिमुद्धूलयन्त-
श्चुम्बन्तश्चूतवीथीं परिमलबहलांश्चम्पकान् कम्पयन्तः ।
आरादारामसीमातटघटितघटीयन्त्रनिर्मुक्तवारां
धारामाराधयन्तः श्रमजलरिपवो वान्त्यमी गन्धवाहाः ॥५॥

---

३ कर्पूर० । १ । १ ।

कावेरीतीरभूमीरुहभुजगवधूभुक्तमुक्तावशिष्टः
कर्णाटीचीनपीनस्तनवसनदशान्दोलनस्पन्दमन्दः ।
लोलल्लाटीललाटालकललितलतालास्यलीलाविलोलः
कष्टं भो दाक्षिणात्यः प्रसरति पवनः पान्थकान्ताकृतान्तः ॥६॥

रक्तोत्पलप्रथितकुञ्चितकुञ्चिकाभैरुल्लफुल्लकिंशुकलताकुसुमैरमीभिः ।
उद्घाट्य किंचिदपि मानमयं कपाटं कामो विवेश हृदि संप्रति दम्पतीनाम्॥

दीर्घा वन्दनमालिका विरचिता दृष्टचैव नेन्दीवरैः
पुष्पाणां प्रकरः स्मितेन रचितो नो कुन्दजात्यादिभिः ।
दत्तः स्वेदमुचा पयोधरभरेणार्घो न कुम्भाम्भसा
स्वैरेवावयवैः प्रियस्य विशतस्तन्व्या कृतं मङ्गलम् ॥८॥

सुदतीजनमज्जनार्पितैर्घुसृणैर्यत्र कषायिताशया ।
न निशाखिलयापि वापिका प्रससाद ग्रहिलेव मानिनी ॥९॥

दोलागतागतविनोदरसेन गीतं प्रापञ्चयन्त सुदृशः श्रितपञ्चमं यत्
तस्य प्रतिध्वनिरिवोपवनाश्रयाणामश्रावि कण्ठकुहरेषु कुहूकरीणाम्॥१०॥

दृष्टः स्मरामि भृशमुत्सुकतागृहीतवासोविपर्ययविलोकनपुस्मितानि ।
व्रीडाविकुञ्चितविलोलविलोचनानि यूना रतान्तललितानि च तानि तानि ॥

उपरिनाभिसरः प्रतिताडिता पटकुटीव मनोभवभूपतेः ।
विजयिनस्त्रिपुरारिजिगीषया तव विराजति कामिनि कञ्चुकी ॥१२॥

---

८ अमरु०।

नर्थं दृष्टिपदं विभूषितवपुः कर्णस्य कण्डूयनं
शानां च मुहुर्मुहुर्विवरणं वार्ता च सख्या सह ।
मेर्दर्शनमुत्पथ च गमनं बालस्य चालिङ्गन
र्वीरन् विवशाः स्त्रियः समदना दृष्ट्वा नरं वाञ्छितम् ॥१३॥

उपरि निपातितानां स्रस्तधम्मिल्लकानां
मुकुलितनयनानां किंचिदुन्मीलितानाम् ।
सुरतसमरखेदक्लान्तकर्णोत्पलाना–
मधरमधु वधूनां पुण्यवन्तः पिबन्ति ॥ १४ ॥

नयते मकरध्वजोऽयमत्रीकृतेन मम कोमलकूजितेन ।
कुसुमास्त्रममुं वदन्ति पुंस्कोकिलोऽरुणितदृष्टिरिति क्रुधेव ॥

अथ सुललितयोषिद्भ्रूलताचारुशृङ्गं
रतिवलयपदाङ्के चापमासज्य कण्ठे ।
सहचरमधुहस्तन्यस्तचूताङ्कुरास्त्रः
शतमखमुपतस्थे प्राञ्जलिः पुष्पधन्वा ॥ १६ ॥

ई मन्दमुपैति दक्षिणवधूताटङ्कतालीदल–
त्स्नासीकरनिर्झरव्यतिकरक्लिन्नो वसन्तानिलः ।
गान्तनितान्ततान्तवनितापीनस्तनप्रोल्लस–
हारलतोपमश्रमपयोबिन्दुस्रजां तस्करः ॥ १७ ॥

उत्तुङ्गपीवरकुचद्वयपीडिताङ्गमालिङ्गितः पुलकितेन भुजेन रत्या ।
श्रीमान् जगन्ति मदयन्नयनाभिरामः कामोऽयमेति मदघूर्णितनेत्रपद्म ॥ १८

तव कुसुमशरत्वं शीतरश्मित्वमिन्दो–
र्द्वयमिदमयथार्थं दृश्यतेऽस्मद्विधेषु ।
विसृजति हिमगर्भैरग्निमिन्दुर्मयूखै–
स्त्वमपि मदन बाणान् वज्रसारान् करोषि ॥ १९ ॥

कुसुमकार्मुककार्मुकसंहितद्रुतशिलीमुखखण्डितविग्रहा ।
मरणमप्यपरा प्रतिपेदिरे किमु मुहुर्मुमुहुर्गतभर्तृका ॥ २० ॥

वसन्ते वासन्तीकुसुमसौरभ्यलहरी–
भ्रमद्भृङ्गेरङ्के रचितमधुरारावमुखरे ।
प्रिया स्मृत्वानाथा हृदयविलसन्मन्मथवशा–
दहा हाहा हाहा हरिहरि मृतः कोऽपि पथिकः ॥ २१ ॥

किंशुका कुसुमिता कलकण्ठकूजितैर्मुखरिता सहकारा ।
नागतः प्रियतम सखि हा मे का गतिर्मधुरुपागत एष ॥२२॥

वसन्तप्रारम्भे चिरविरहखिन्ना सहचरी
यदि प्राणान् मुञ्चेत्तदिह वधभागी भवति कः ।
वयो वा स्नेहो वा विषमविशिखो वेति विमृशन्
तु हीति प्रव्यक्तं पिकनिकरझाकारमशृणोत् ॥ २३ ॥

---

१८ प्र०च० ।१। १९ शाकु० ।३।३। २० शि०व० ।६।१६।
२३ सुभा० । १६८८ ।

भाणं मुञ्चध देह वल्लहजणे दिट्ठिं तरङ्गुत्तरं
तारुण्णं दिअहाइं पञ्च दह वा पीणत्थणत्थम्भणं ।
इत्थं कोइलमञ्जुसिञ्जणमिसा देअस्स पञ्चेसुणो
दिण्णा चित्तमहूसवेण महसा आणव्व सव्वंकसा ॥ २४ ॥

अपूर्वोऽयं धनुर्वेदो मन्मथस्य दुरात्मनः ।
शरीरमक्षयं कृत्वा निहन्त्यन्तर्गतं मनः ॥ २५ ॥

मधुरया मधुबोधितमाधवीमधुसमृद्धिसमेधितमेधया ।
मधुकराङ्गनया मुहुरुन्मदध्वनिभृता निभृताक्षरमुज्जगे ॥ २६ ॥

मुग्धे मानं न ते युक्तं कर्तुं प्राणाधिके प्रिये ।
भद्रे मत्स्यी कियत् कालं जीवितं वारिणा विना ॥ २७ ॥

यान्ती महेभवदनङ्गमहे सहेलं हेरम्बकुम्भमुहृदा स्तनमण्डलेन ।
काचिद्युवानमथ राजपथावतंसमंसस्थले सुभगमानिनमाजघान ॥२८॥

मालतीमुकुले भाति मञ्जु गुञ्जन् मधुव्रतः ।
प्रयाणे पञ्चबाणस्य शङ्खमापूरयन्निव ॥२९॥

रतिपतिप्रहितेव कृतक्रुधः प्रियतमेषु वधूरनुनायिका ।
बकुलपुष्परसासवपेशलध्वनिरगान्निरगान्मधुपावलिः ॥३०॥

विचिन्वतीः पान्थविहङ्गहिंसनैरपुण्यकर्माण्यलिकज्जलच्छलात् ।
व्यलोकयच्चम्पककोरकावलीः स शम्बरारेर्बलिदीपिका इव ॥३१॥

२८ कर्पूर० ।१।६। २६ शि० व० ।६।२०।
३० शिव० ।६।७। ३१ नै० ।१।८६

सुवद्वयीचित्तनिमज्जनोचितप्रसूनशून्येत्तरगर्भगह्वरम् ।
स्मरेषुधीकृत्य धिया भयान्वया स पाटलायाः स्तबकं प्रकम्पितः॥३

रसालसालः समदृश्यतामुना स्फुरद्द्विरेफारवरोपहुंकृतिः ।
समीरलोलैर्मुकुलैर्वियोगिने जनाय दित्सन्निव तर्जनाभियम् ॥ ३

स्मरार्धचन्द्रेषुनिभे कशीयसां स्फुट पलाशेऽस्वजुषां पलाशनात् ।
स वृन्तमालोकत खण्डमन्वित वियोगिहृत्खण्डिनि कालखण्डजम् ॥३

अशोकमर्थान्वितनामताशया गतान् शरण्यं गृहशोचिनोऽध्वगान्
अमन्यतावन्तमिवैष पल्लवैः प्रतीप्तरागमज्वलदस्त्रजालकम् ॥ ३५

त्वदग्रसूच्या सचिवेन कामिनोर्मनोभवः सीव्यति दुर्यशःपटौ ।
स्फुटं स पत्रैः करपत्रमूर्तिभिर्वियोगिहृद्दारुणि दारुणायते ॥ ३६
अङ्गानि निर्दहतु नाम वियोगवह्निः संरक्ष्यतां प्रियतमो हृदयास्थितो ऽ
इत्याशया शशिमुखी गलदश्रुवारां धाराभिरार्द्रमनिशं कुरुते कुचाग्रम्॥

पीयूषं विषवद् बिसं विशिखवत् पङ्केरुहं शङ्कुवद्
वेश्मान्तर्वनवत् सदैव मनुते शृङ्गारमङ्गारवत् ।
किं चान्यत् सुभग त्वदीयविरहे न क्वापि धत्ते धृतिं
पर्यङ्केऽपि न भूतलेऽपि न गृहारामेऽपि न प्रेयसी ॥३८।
रात्रिः कल्पशतायतेऽथ दिवसो मन्वन्तराव्दायते
शीतांशुर्दहनायते मलयजालेपः स्फुलिङ्गायते ।

३२ नै० २।९५। ३३ नै० ।१।८९। ३४ नै० ।२।८४।
३५ नै० ।१।१०१। ३६ नै० । १।८०।

आहारो गरलायते प्रतिपदं कामोऽपि वैरायते
प्रेयस्याः प्रियविप्रयोगसमये किं किं न दुःखायते ॥३९॥

कर्णे यन्न कृतं सखीजनवचो नैवादृता बन्धुवाक्
पादान्ते निपतन्नपि प्रियतमः कर्णोत्पलेनाहतः ।
तेनेन्दुर्दहनायते मलयजालेपः स्फुलिङ्गायते
रात्रिः कल्पशतायते किमपरं हारो भुजङ्गायते ॥४०॥

इन्दुं निन्दति पद्मकन्दलदलीतल्पं न वा मन्यते
कर्पूरं किरति प्रयाति न रतिं प्रालेयधारागृहे ।
किं चान्यत् सुभग त्वदीयविरहे सा दह्यमाना सती
त्वामन्तर्हृदि संस्थितं दवभयान्नेत्राम्बुभिः सिञ्चति ॥४१

उत्पत्तिः पयसां निधेर्वपुरपि ख्यातं सुधामन्दिरं
स्पर्धन्ते बिसबालनालसरला हारावलीमंशवः ।
कान्ता कैरविणी तव प्रियसखः शृङ्गारसारः स्मरो
हंहो चन्द्र किमत्र तापजननं तापाय यन्मे भवान् ॥४२

निपततापि न मन्दरभूभृता किमुदधौ शशलाञ्छन चूर्णितः ।
अपि मुनेर्जठरार्चिषि जीर्णतां बत गतोऽसि न पीतपयोनिधेः ॥ ४३ ॥

---

३९ ઓળિયામાં આને ઠેકાણે નીચેનો શ્લોક છે: आयाता मधुयामिनी पुनरसौ नायात एव प्रियः प्राणा यान्तु यियासवः पुनरहं जन्मान्तरेऽप्यर्थये । व्याधः कोकिलबन्धने हिमकरध्वंसे च राहुर्ग्रहः प्रद्युम्ने हरनेत्र-

दुर्वाराः स्मरमार्गणाः प्रियतमो दूरे मनोऽत्युत्सुकं
गाढं प्रेम नवं वयोऽतिकठिनाः प्राणाः कुलं निर्मलम् ।
स्त्रीत्वं धैर्यविरोधि मन्मथसुहृत् कालः कृतान्तोऽक्षमी
नो सख्यश्चतुराः कथं नु विरहः सोढव्य इत्थं मया ॥४४

दिनो विनोदान्तरितः प्रयाति न त्वां विना याति सुगात्रि रात्रिः ।
वदन्तमन्तर्दयितं सुवाचं चिरं स्मरन्तीव मुहुर्मुमूर्छे ॥४५

किं बाले तव सव्रणोऽयमधरो गात्रं च किं ते श्लथं
रात्रावद्य विचित्रभोगपटुना दष्टा भुजङ्गेन वै ।
यद्येवं सहसा मृतासि न कथं कालेन दष्टा सती
जप्तस्तत्समये ह्यनङ्गरभसाद् हाहेति मन्त्रो मया ॥४६।

प्रेयसः प्रविशतो हृदालयं मङ्गलाय किल काचिदङ्गना ।
तोरणस्त्रजमिवाकरोत् कुचस्तम्भयोरुपरि हारवल्लरीम् ॥४७।

कोटिं जीव पिबामृतं व्रज सखे शाखान्तरं वायस
आयाते दयिते मनोरथशतैर्दास्यामि दध्योदनम् ।
इत्थं जल्पति यावदध्वगवधूस्तावत् पतिः प्राङ्गणे
छिन्नाः कञ्चुकसंधयस्तडतडद् रोमाञ्चविस्फूर्जिताः ॥४८॥

आगच्छन् सूचितो येन येनानीतश्च मे-पतिः ।
प्रथमं सखि कः पूज्यः काकः किं किं क्रमेलकः ॥४९॥

४४ सुभा॰ । ११२६ । मयूरसूनोर्मईरट्टकस्य ।

गाढालिङ्गनवामनीकृतकुचप्रोद्भूतरोमोद्गमा
सान्द्रस्नेहरसातिरेकगलितश्रोणिप्रदेशाम्बरा ।
मा मा मा नट माति माममलमिति क्षामाक्षरोल्लापिनी
सुप्ता किं नु मृता नु किं मनसि मे लीना विलीना नु किम् ॥९०॥

स्विद्यन्मुखं स्वीकृतमन्दहासं चलत्करकुचं व्याकुलकेशपाशम् ।
पुण्यातिरेकात् पुरुषा लभन्ते संभोगमम्भोरुहलोचनानाम् ॥९१॥

संदष्टेऽधरपल्लवे सचकितं हस्ताग्रमाधुन्वती
मा मा मुञ्च शठेति कोपवचनैरानर्तितभ्रूलता ।
सीत्काराञ्चितलोचना सरभसं यैश्चुम्बिता मानिनी
प्राप्तं तैरमृतं श्रमाय मथितो मूढैः सुरैः सागरः ॥९२॥

मालती शिरसि जृम्भणोन्मुखी चन्दनं वपुषि कुङ्कुमाविलम् ।
वक्षसि प्रियतमा मदालसा स्वर्ग एष परिशिष्ट आगतः ॥९३॥

अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितं हसितमन्यनिमित्तकथोदयम् ।
विनयबाधितवृत्तिरतस्तया न विवृतो मदनो न च संवृतः ॥९४॥

चन्द्रचन्दनभवस्तव भाले इन्दुरिन्दुमुखि राजति बाले ।
रागसागरविवर्धनहेतुर्बोधयन् युवमनःकुमुदानि ॥९६॥

सुषमाविषये परीक्षणे निखिलं पद्ममभाजि तन्मुखात् ।
अधुनापि न भङ्गलक्षणं सलिले मज्जनमुज्झति स्फुटम् ॥९७॥

---

९० अमरु० । ९२ अमरु० । ९३ सुभा० २२२८ ।
९४ शाकु० ।२।१२। ९७ नै० । २ । २७ ।

केशाः केकिकलापविभ्रमभृतः कर्णौ चलत्कुण्डलौ
वक्त्रं निर्जितचन्द्रबिम्बमधरो बालप्रवालारुणः ।
चक्षुः पर्वविकासि पङ्कजदलं कुम्भाभिरामौ कुचा–
वस्याः संप्रति वर्तते मृगदृशः किं किं न चेतोहरम् ॥ ९८ ॥

गतिर्वेणी च नागेन रूपमूरू च रम्भया
प्रवालैः पाणिरोष्ठौ च श्यामायाः समतां गतम् ॥ ९९ ॥

अद्यापि तद् विकसिताम्बुजमध्यगौरं गोरोचनातिलकपाण्डुरितैकदेशम् ।
ईषन्मदालसविघूर्णितनेत्रपद्मं कान्तामुखं पथि मया सह गच्छतीव ॥ ६० ॥

श्रोणीबिम्बरथं पयोधरहयं भ्रूकार्मुकं दृक्शरं
पीनोरद्विपमङ्गरागकवचं कम्राधरोष्ठध्वजम् ।
काञ्चीनूपुरशङ्खदुन्दुभिरवं सीत्कारनादाकुलं
कामिन्या नखदन्तशस्त्रमतुलं प्राप्नोतु युद्धं भवान् ॥ ६१ ॥

धनुषी रतिपञ्चबाणयोरुदिते विश्वजयाय तद्भ्रुवौ ।
नलिके नु तदुच्चनासिके त्वयि नालीकविमोक्षकामयोः ॥ ६० ॥

अधरं किल बिम्बनामकं फलमस्मादिति भव्यमन्वयम् ।
लभतेऽधरबिम्बमित्यदः पदमस्या रदनच्छदेव तत् ॥ ६२ ॥

६० नै० ।२।८। अनियामां आने ठेकाणे नीचेनो श्लोक छे:
तालीदलं काचन कर्णमूले विश्रामयन्ती सुतनुः कराभ्याम् ।
रराज कर्णान्तविसर्पिचक्षुः शाणे दधानेव कटाक्षबाणान् ॥
६२ नै. ।२।२४।

तिलकुसुमसमानां बिभ्रती नासिकां च
द्विजसुरगुरुपूजां श्रद्दधाना सदैव ।
कुवलयदलकान्तिः कापि चाम्पेयगौरी
विकचकमलकोशाकारकामातपत्रा ॥६३॥

पञ्चानन परिभवत्युदरेण वेणीदण्डेन कुण्डलिकुलं शशिनं मुखेन ।
या सा जगत्रयजयप्रथिता नताङ्गी बुद्ध्या कया वत बुधैरबला बभाषे॥

कलशे निजहेतुदण्डजः किमु चक्रभ्रमिकारितागुणः ।
स तदुच्चकुचौ भवन् प्रभाभरचक्रभ्रममातनोति यत् ॥६५॥

निगदितुं विधिनापि न शक्यते सुभटता कुचयोः कुटिलभ्रुवः ।
सुरतसंयति यौ प्रियपीडितावपि नतिं न गतौ च्युतकञ्चुकौ ॥६६॥

उत्तुङ्गस्तनपर्वतादवतरद्गङ्गेव मुक्तावली
रोमाली नवनीलिमेन्दुवदने जाता कलिन्दात्मजा ।
पुण्यं क्षेत्रमिदं सुतीर्थममलं मत्वा तयोः संगमे
चन्द्रो मज्जति लाञ्छनापहृतये नूनं नखाङ्कच्छलात् ॥६७॥

---

६५ नै० ।२।३२। ओलियामा आने ठेकाणे नीचेनो श्लोक छे
अपि तद्वपुषि प्रसर्पतोर्गमितं कान्तिजलैरगाधताम । स्मरयौवनयो
खलु द्वयो. प्लवकुम्भौ भवतः कुचावुभौ ॥.

६७ आ श्लोकने ठेकाणे पोथीमा नै०।२।३४। नो नीचेनो श्लोक
आप्यो छेः–उदरं नतमध्यपृष्ठतास्फुरदङ्गुष्ठपदेन मुष्टिना । चतुरङ्गुलमध्य.
निर्गलत्त्रिवलीभाजि कृत दमस्वसुः ॥

.....इद कृतमबले सुरभि मुखं ते मया यदाघ्रातम्
.....कमल.... .... ॥७५॥

शवतीनां सहजा विलासास्त एव मूढस्य हृदि स्फुरन्ति।
ो नलिन्या हि निसर्गसिद्धस्तत्र भ्रमत्येव मुधा षडङ्घ्रिः ॥७६॥

न् वनान्ते नवमञ्जरीषु न षट्पदो गन्धफलीमजिघ्रत्।
किं न रम्या न च किं स रन्ता बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ॥७७॥

चन्द्रे लाञ्छनिता हिमं हिमगिरौ क्षारं जलं सागरे
दष्टाश्चन्दनपादपे विषधराः पद्मेषु कार्कश्यता।
स्त्रीरत्नेषु जरा कुचेषु पतनं विद्वत्सु दारिद्रता
सर्वं रत्नमुपद्रवेन सहितं दुर्वेधसा निर्मितम् ॥७८॥

पत्य चम्पकधिया नवकार्णिकारपुष्पेषु गन्धरहितेष्वपि चञ्चरीकः।
तो मधूनि रसयत्ययमन्यपुष्पसौभाग्यसंभृतनिमाननवासितानि॥७९॥

अव .... हृदये .... कारामुदयति
.... धनुष .... सगुणानवत ॥८०॥

चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः।
करौ व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरं
वयं तत्त्वान्वेषान्मधुकर हतास्त्वं खलु कृती ॥८१॥

---

७५ ઓળિયામાં આ શ્લોકના અક્ષર ઘસાઈ ગયા છે. ७७ મા૦ । ७५५.। ८०—२ આ શ્લોક પોથીમા છે નહિ. ८० ઓળિ-માં આ શ્લોકના અક્ષર ... ८१ ... ०।१।२०।

वृत्तानुपूर्वे च न चातिदीर्घे जङ्घे शुभे सृष्टवतस्तदीये ।
शेषाङ्गनिर्माणविधौ विधातुर्लावण्य उत्पाद्य इवास यत्नः ॥६

गायन्तगोवअवहूपदपेइ्खिदासु दोलासु विब्भमवदीसु णिविट्ठदिट्ठी
ञ्जे जादि खञ्जिदतुरङ्गरहो दिणेसो तेणं ग्गु.होन्ति दिअहा इह दीः

मा पादान्ते विलुठ विरम स्वामिनो हि स्वतन्त्राः
कश्चित् कालः क्वचिदपि गतस्तेन कस्तेऽपराधः ।
आगस्कारिण्यहमिह यतो जीवितं त्वद्वियोगे
भर्ता प्राणाः स्त्रिय इति ततस्त्वं मयैवानुनेयः ॥७

उन्नमय्य सकचग्रहमास्यं चुम्बति प्रियतमे हठवृत्त्या ।
हुं म-मेति वदनान्तरलीनं जल्पितं जयति मानधनायाः ॥७

गुणाः कुर्वन्ति दूतत्वं दूरेऽपि वसतां सताम् ।
केतकीगन्धमाघ्राय स्वयं गच्छन्ति षट्पदाः ॥७

केनैषा भुक्तमुक्ता प्रहसितवदना स्वेदलग्नाङ्गवस्त्रा
प्रत्यूषे याति बाला मृग इव चकिता सर्वतः शङ्कयन्ती ।
केनेदं वक्त्रपद्मं स्फुरदधररसं षट्पदेनेव पीतं
स्वर्गः केनाद्य भुक्तो हरनयनहतो मन्मथः कस्य तुष्टः ॥८

एलावने कुरुबकस्तबके प्रियाले कङ्कोलके मदनके नवमालिकायाम्
पुष्पाणि जिघ्रति मुहुर्मधुपोभुजङ्गः कामेन मुक्त इव बाणपरीक्षणाय ।.

६८ कु० सं०।१।३५। ६९ कर्पूर०।१।१। આ શ્લોક પોથીમ
છે નહિ. ૭१ सुभा०।२७९७। આ શ્લોક પોથીમાં છે નહિ. ७६-७.
આ શ્લોક પોથીમાં છે નહિ.

....इद कृतमबले सुरभि मुखं ते मया यदाघ्रातम्
.....कमल.... .... ॥७५॥

लावतीनां सहजा विलासास्त एव मूढस्य हृदि स्फुरन्ति।
गो नलिन्या हि निसर्गसिद्धस्तत्र भ्रमत्येव मुधा षडङ्घ्रिः ॥७६॥

मन् वनान्ते नवमञ्जरीपु न षट्पदो गन्धफलीमजिघ्रत्।
। किं न रम्या न च किं स रन्ता बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ॥७७॥

चन्द्रे लाञ्छनिता हिमं हिमगिरौ क्षारं जलं सागरे
दृष्टाश्चन्दनपादपे विषधराः पद्मेषु कार्कश्यता।
स्त्रीरत्नेषु जरा कुचेषु पतनं विद्वत्सु दारिद्रता
सर्वं रत्नमुपद्रवेन सहितं दुर्वेधसा निर्मितम् ॥७८॥

।पत्य चम्पकधिया नवकर्णिकारपुष्पेषु गन्धरहितेष्वपि चञ्चरीकः।
तो मधूनि रसयत्ययमन्यपुष्पसौभाग्यसंभृतनिजाननवासितानि॥७९॥

अब .... हृदये .... काशमुद्यति
.... धनुष .... सगुणानवत ॥८०॥

चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः।
करौ व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरं
वयं तत्त्वान्वेषान्मधुकर हतास्त्वं खलु कृती ॥८१॥

---

७५ ओळियामां आ श्लोकना अक्षर घसाई गया छे. ७७ मा० । ७५५.। ८०–२ आ श्लोक पोथीमा छे नहि. ८० ओळि-.मां आ श्लोकना अक्षर घसाई गया छे. ८१ शाकु० ।१।२०।

पावको छप्टवर्णानां (?) शर्वरीकृतबन्धनः ।
मोक्षं न लभते कान्ते कम्पते तेन हेतुना॥८३॥

क प्रस्थितासि करभोरु घने निशीथे प्राणाधिपो वसति यत्र जनः प्रियो मे।
एकाकिनी वद कथं न बिभेषि बाले नन्वस्ति पुङ्खितशरो मदनः सहायः॥

यातु यातु किमनेन तिष्ठता मुञ्च मुञ्च सखि मादरं कुरु ।
केतकीकुसुमसौरभे रतो नान्यतो रतिमुपैति षट्पदः ॥८५॥

जयति मधुसहायः सर्वसंसारवल्ली-
जननजरठकन्दः कोऽपि कन्दर्पदेवः ।
तदनु पुनरपाङ्गोत्सङ्ग संचारितानां
जयति तरुणयोषिल्लोचनानां विलासः ॥८६॥



८२—८३ ઓળિયામાં આ શ્લોકો છે નહિ અને જૂની ગુજરાતીનો પણ છે નહિ. ८४ सुभा० । १३४६ । આ શ્લોક પોથીમાં નહિ. ८५ આ શ્લોક પોથીમાં છે નહિ અને જૂની ગુજરાતીનો પણ છે નહિ. ८६ ઓળિયામાં આને ઠેકાણે નીચેનો શ્લોક છે:

गतिशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन हि मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥